डालटनगंज (मेदिनीनगर), मंगलवार | 05 अगस्त 2025 | वर्ष-31, अंक- 289, पृष्ठ-12 | श्रावण शुक्ल पक्ष 11, संवत 2082 | डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित | रजिस्ट्रेशन नंः आरएनआई. 61316/94 | www.rastriyanaveenmail.com

ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

₹2.00

हर पक्ष की खबर | हर पक्ष पर नजर

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

जन्म- 11 जनवरी 1944

मृत्यु- 04 अगस्त 2025

विनम्र श्रद्धांजलि

दिशोम गुरु शिबू सोरेन

समस्त राज्यवासियों की तरफ से

हूल जोहार

प्रातः 9.00 बजे विधानसभा में राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी जाएगी

अंतिम संस्कार - पैतृक गाँव नेमरा, रामगढ़ में

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

PR No. 358880 (IPRD) 2025-26

एक नजर

समाजसेवी सह पंसस सदस्य को पितृ शोक

नवडीहा। पंचायत के समाजसेवी सह पंचायत समिति सदस्य सुनील कुमार चौहान के पिता समाजसेवी श्री कृष्ण बल्लभ सिंह का निधन रविवार रात्रि 8 बजे हो गया। वे क्षेत्र में अपनी सादगी, सामाजिक सक्रियता और जनसेवा के लिए जाने जाते थे। उनके निधन से क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। सोमवार को उनके आवास पर अंतिम दर्शन हेतु बड़ी संख्या में ग्रामीण, समाजसेवी, जनप्रतिनिधि व परिजन पहुंचे। घर का वातावरण श्रद्धा और शोक से भरा हुआ था। सुबह से ही लोगों का तांता लगा रहा। परिवार की ओर से अश्रुपूरित विदाई दी गई। वे अपने पीछे चार पुत्र सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। परिवार ने नम आंखों और भरे मन से उन्हें अंतिम प्रणाम किया। सोमवार के दोपहर उनका अंतिम संस्कार किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। मौके पर अंचलाधिकारी राजकुंवर सिंह, देवेंद्र सिंह, पूर्व प्रमुख उर्मिला देवी, उप प्रमुख अमित चौहान, मुखिया प्रदुम्न सिंह, मुकेश सिंह, अरविंद सिंह, बसारत हुसैन, यशवंत वर्मा, पंसस श्यामनंदन ओझा सहित कई सामाजिक कार्यकर्ता, व्यवसायी व स्थानीय जनप्रतिनिधि शामिल रहे।

हुसैनाबाद में 10 घंटे बाद मिली बिजली

हुसैनाबाद। रविवार की रात से शहर व ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति 10 घंटे के बाद बहाल की गई। इससे लोगों को राहत मिली हैं। मालूम हो की हुसैनाबाद शहर के दातानगर के समीप 33 हजार केवीए के रेलवे अंडर पास से गुजरी केबूल तार में रविवार की देर रात अचानक टेक्निकल फॉल्ट होने के कारण शहर व ग्रामीण क्षेत्रों में ब्लैक आउट हो गया। इसकी सूचना मिलते ही विभाग के सहायक अभियंता रामप्रसाद महतो ने इस मामले को गम्भीरता पूर्वक लेते दातानगर के पास दूसरे केबल से सोमवार को करीब11 बजे बिजली बहाल की गई। जपला विद्युत विभाग की टीम ने काफी मशक्कत के बाद सोमवार को फॉल्ट को दुरुस्त कर बिजली आपूर्ति बहाल कर दी। बरसात के मौसम में 10 घंटे से बिजली आपूर्ति बाधित रहने के कारण लोगों को काफी परेशानी हुई। बिजली बहाल होने पर लोगों ने राहत की सांस ली। इस मौके पर जपला के सहायक विद्युत अभियंता रामप्रसाद महतो, मानव दिवस कर्मी जितेंद्र ठाकुर, कमलेश, राजा कुमार, संतोष कुमार सिंह, राहुल सिंह आदि शामिल है।

शिबू सोरेन के निधन पर शोक सभा आयोजित

विश्रामपुर। रेहला संत तुलसीदास इंटर कॉलेज के सभागार में झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री सह राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के निधन पर शोकसभा का आयोजन किया गया। सभा में दिशोम गुरु शिबू सोरेन के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किया गया। इसके अलावा दिशोम गुरु के सम्मान में दो मिनट का मौन भी रखा गया। मौके पर प्रभारी प्राचार्य अर्चना कुमारी ने शिबू सोरेन के जीवन पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वर्गीय सोरेन झारखंड में दिशोम गुरु के नाम से जाने जाते थे, सोमवार की सुबह 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक संरक्षक और हमेशा जनजातीय अधिकारों, सामाजिक न्याय वआदिवासी उत्थान के लिये संघर्षरत रहे थे। उनके निधन से न केवल झारखंड बल्कि देशभर में शोक का माहौल व्याप्त है। अपने संबोधन में कहा ईश्वर झारखंड के दिवंगत नेता की आत्मा को शांति दे और उनके परिवार को यह दुःख सहने की शक्ति मिले। उनके आदर्श और उनके द्वारा किए गए संघर्ष सदा हमें प्रेरणा देते रहेंगे। मौके पर राजीव चौबे, इरफान अहमद, रेणु कुमारी, रूपा कुमारी, सुशील यादव, इबरार खलीफा, लक्ष्मीकांत शुक्ला, अमित चौबे, प्रभाकर सिंह, अंजना कुमारी, सुभाष पांडेय, रामा तिवारी सहित कई लोग मौजूद थे।

सावन के अंतिम सोमवारी पर उमड़ी आस्था

हर-हर महादेव के जयकारे से गूंजे शिवालय

नवीन मेल संवाददाता

मोहम्मदगंज। सावन माह की अंतिम सोमवारी को भगवान शिव के अभिषेक को लेकर ऐतिहासिक महत्व के पर्यटक स्थल भीमचूल्हा सहित अन्य सभी मंदिरों में श्रद्धालु नर-नारियों की आस्था उमड़ पड़ी। इस दौरान हर-हर महादेव के जयकारे से शिवालय गूंजायमान होते रहे। ऐतिहासिक भीमचूल्हा सहित सभी मंदिरों में भगवान शिव की आराधना व अभिषेक को लेकर सुबह से दोपहर बाद तक श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा।

जलाभिषेक करते श्रद्धालु।

भीमचूल्हा मंदिर में पूजारी पंडित गंगा तिवारी के मंत्रोच्चारण के साथ भक्तों ने भगवान शिव की स्तुति गान किया। सेवक सत्येंद्र ने श्रद्धालुओं की सुविधा का ध्यान रखा।

भीमचूल्हा के अलावा कादलकुर्मी, सिंचाई कॉलोनी, शिलापर, बिचलाडीह, नहर चौक, देवीधाम, विश्वकर्मा-महादेव, काली मंदिर , करडंडा, गोलापत्थर, भजनियां, पंसा, रानीदेवा सहित अन्य जगह के मंदिरों व चबूतरे पर स्थापित शिवलिंग का जल, दुग्ध, बेलपत्र, भांग, धतुरा, अकवन-कनैल के फुल व अक्षत इत्यादि अर्पित कर भक्तों ने भोलेनाथ का अभिषेक किया। महिलाओं ने उपवास भी रखा। इस दौरान भक्तों ने अलग-अलग मंदिरों में अन्य देवी-देवताओं की भी पूजा-अर्चना की। पूर्व संध्याकाल व सोमवार की सुबह पूजन सामाग्रियों और फलादि की खरीदारी को लेकर बाजार में चहल-पहल दिखा। रिमझिम बारिश से मनभावन प्राकृतिक सौंदर्य के नयनाभिराम दृश्यों के बीच इस वर्ष भगवान शिव की आराधाना और स्तुति ने श्रद्धालुओं को अलग प्रकार की अनुभूति प्रदान की।

बिजली का तार मौत को दे रहा है आमंत्रण, ग्रामीणों में आक्रोश

नवीन मेल संवाददाता

नावाडीह बाजार। पलामू जिले के नौडीहा बाजार प्रखंड के पंचायत खैरादोहर अंतर्गत सिल्दा खुर्द गांव में बरसात के मौसम में शिल्दा खुर्द पूर्वी एक देवी मंडप से लेकर जागेश्वर साव के पाही तक सड़क काफी जर्जर हो गई है। आंगनवाड़ी में बच्चों को पढ़ाई के लिए जाना भी मुश्किल हो गया है। साथ ही सड़क पर बिजली का तार जमीन छू रहा है जो मौत को निमंत्रण दे रहा है। 440 वोल्ट का तार जमीन पर लटका हुआ है किसी भी समय अनहोनी होने की संभावना बना हुआ है। ग्रामीणों का कहना है कि कई बार स्थानीय जनप्रतिनिधि के पास सड़क,नाली बनाने एवं बिजली तार मरमती करने के लिए शियायत के बावजूद भी कोई सुनने को तैयार नहीं है। पंकज राम, मिथलेश यादव, अकलेश पासवान, राकेश यादव, गीता देवी, राजेंद्र बैठा, राजेंद्र राम, महेंद्र राम, लालदेव यादव,चुनाव के समय जनप्रतिनिधि बड़े-बड़े वादे करते हैं लेकिन चुनाव जीत जाने के बाद गांव की समस्या की तरफ कोई ध्यान नहीं देते हैं। ग्रामीण सड़क बनाने की मांग कर रहे हैं।

हुसैनाबाद में सावन की अंतिम सोमवारी पर श्रद्धालुओं ने किया जलाभिषेक, निकला जुलूस

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। सावन की चौथी व अंतिम सोमवारी को हुसैनाबाद के सभी शिव मंदिरों में शिव भक्तों की काफी भीड़ रही। श्रद्धालुओं व शिवभक्तों ने शिवालयों में जाकर भगवान भोलेशंकर का जलाभिषेक व जयकारे के साथ पूजा अर्चना की। शिवालयों में अहले सुबह से ही शिव भक्तों का भीड़ उमड़ पड़ा। वहीं श्रद्धालुओं ने उपवास रखकर भगवान भोले की लिंग पर भांग, धतूरा, बिल्वपत्र अर्पित कर सुख समृद्धि की कामना की। इस पावन अवसर पर शहर के रेलवे स्टेशन परिसर स्थित आशुतोष धाम, महावीर जी मंदिर, सिंचाई कॉलोनी स्थित शिव मंदिर, पुरानी ठाकुरबाड़ी, प्रखंड के उपरिकला पंचायत के उपरिकला स्थित अति प्राचीन शिव मंदिर, लंगरकोट के

मुरली पहाड़ी स्थित महाकालेश्वर धाम व कुम्हार टोली शिव मंदिर, पछियारी जपला शिव मंदिर समेत सभी शिव मंदिरों में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। साथ ही पछियारी जपला से श्रद्धालुओं ने बाजे गाजे के साथ जुलूस निकाला। जो देवरी सोननदी से जलभर कर विभिन्न मंदिरों में जलाभिषेक किया। महावीर मंदिर में श्रद्धालुओं को पूजा के दौरान पुजारी गोपाल पाठक ने बताया कि सावन मास पवित्र माह होता है। आध्यात्मिक मायने में यह पवित्र माह बहुत ही महत्वपूर्ण है। जिसमें भगवान की साधना का विशेष महत्व है। उन्होंने कहा कि इस मानव में भगवान शंकर की पूजा पाठ करना काफी फलदायी होता है। इस मौके पर काफी संख्या में महिला व पुरूष श्रद्धालु मौजूद थे।

आचार्य बालकृष्ण के जन्मदिन पर जड़ी-बुटी दिवस का आयोजन

आयुर्वेद लोगों के जीवन का अहम हिस्सा

नवीन मेल संवाददाता

नीलाम्बर पीताम्बरपुर। प्राकृतिक संपदा को सम्पुष्ट करने एवं पर्यावरण संरक्षण करने के निमित्त भारत स्वाभिमान न्यास समिति एवं पतंजलि योग समिति की प्रखंड नीलांबर पीतांबरपुर इकाई के तत्वावधान में सोमवार को आचार्य बालकृष्ण का जन्म दिन जड़ी-बूटी दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन प्रखंड के गांधी चौक पर किया गया। कार्यक्रम के दौरान लोगों के बीच समिति के लोगों के द्वारा बड़ी संख्या में विभिन्न प्रकार के पौधों का वितरण भी किया गया। कार्यक्रम में शामिल प्रखंड प्रभारी मंदीप श्रीवास्तव ने बताया गया कि आचार्य बालकृष्ण जी आयुर्वेद के महान जानकार हैं। उनका राष्ट्र एवं मानवता की सेवा में बहुत बड़ा योगदान है। पतंजलि रिसर्च केंद्र आयुर्वेद के क्षेत्र में पहला बड़ा अनुसंधान केंद्र बनाया गया है। जहां

पौधा वितरण करते पतंजलि योग समिति के लोग।

आचार्य बालकृष्ण के मार्ग दर्शन में लगभग तीन सौ से अधिक वैज्ञानिक विभिन्न रोगों के निदान के लिए अनुसंधान कर रहे हैं। साथ ही वितरित किए गए पौधों के बारे में उनसे होने वाले लाभ के बारे में भी जानकारी दी। साथ ही कार्यक्रम में शामिल लोगों के द्वारा उपस्थित लोगों के बीच गिलोय, एलोबेरा, पत्थरचट्टा, जामुन, लेमनग्रास, करीपत्ता, अमरूद सहित अन्य पौधों का निशुल्क वितरण किया गया। कार्यक्रम में योग प्रशिक्षक संतोष कश्यप, प्रखंड चेंबर अध्यक्ष छोटेलाल सोनी, वीरेंद्र शुक्ला, मंजीत सोनी, अरविंद डिसिलवा, चंद्रप्रकाश पांडेय, संदीप कुमार सतीश कश्यप, पतंजलि महिला समिति के कंचन श्रीवास्तव,अर्चना देवी, मोनी कश्यप, मालती देवी अंजलि देवी सहित कई लोग शामिल थे।

स्वच्छता दूत जलसहियाओं ने दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

वृक्षों को रक्षा सूत्र बांधती जलसहिया।

पौधरोपण कर बांधे वृक्षों को रक्षा सूत्र

नवीन मेल संवाददाता

हैदरनगर। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के सहयोग से हैदरनगर प्रखंड की सूर्य मंदिर परिसर कुकही में जलसहियाओं ने पर्यावरण संरक्षण को लेकर जन जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर जलसहियाओं ने सड़क किनारे वृक्षों को रक्षा सूत्र में बांधकर उनकी सुरक्षा का संकल्प लिया। साथ ही खाली पड़ी भूमि पर सामूहिक रुप से पौधारोपण भी किया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व जिला समन्वयक धर्मेन्द्र दुबे ने किया। उन्होंने जलसहियाओं के प्रयासों की सराहना करते हुए प्रखंड वॉश समन्वयक हरसू कुमार दयानिधि को निरंतर जनोपयोगी कार्यों में तत्परता और सक्रियता दिखाने को कहा। इस दौरान उन्होंने हैदरनगर के विभिन्न स्थानों पर पहुंचकर अभियान का निरीक्षण भी किया। उन्होंने कहा कि उनकी सक्रिय भागीदारी से ही जलसहियाओं में विशेष उत्साह देखा गया है। प्रखंड बीस सूत्री कार्यक्रम के प्रखंड अध्यक्ष विमलेश सिंह स्वयं पूरे कार्यक्रम में सहभागिता निभाते हुए जलसहियाओं को हरसंभव प्रोत्साहित करने का कार्य किया। प्रखंड वॉश समन्वयक हरसु कुमार दयानिधि ने बताया कि यह पहल स्वच्छता और पोषण के अलावा पर्यावरण संरक्षण को लेकर समाज में नई चेतना का संचार कर रही है। उन्होंने कहा कि जलसहियाओं की सक्रियता से समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत बनी है। उन्होंने इस कार्यक्रम की सफलता पर लोक जन चेतना मंच के संरक्षक एवं अधिवक्ता प्रेमतोष कुमार सिंह 'गुड्डू' के प्रति आभार जताया। जलसहियाओं के सक्रिय भागीदारी और उत्साह पर उन्होंने निर्मला देवी, सीमा विश्वकर्मा, रीता देवी, रेखा देवी, मुन्नी देवी, संजू देवी, मीना देवी, चिंतामणि देवी, संगीता देवी, रीता देवीवसाहित अन्य जलसहियाओं को सम्मानित किया।

जिला पार्षद सहित अन्य ने दिशोम गुरु के निधन पर शोक जताया

नवीन मेल संवाददाता

मोहम्मदगंज। झारखंड के पूर्व मुख्य मंत्री सह झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापकों में एक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन की सूचना मिलते ही प्रखंड क्षेत्र के सामाजिक-राजनीतिक हल्के में शोक की लहर दौड़ गई। जिला परिषद सदस्य अंजू देवी और युवा समाजसेवी अश्विनी कुमार सिंह ने दो मिनट का मौन रख दिशोम गुरु को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक जताया। उन्होंने कहा कि दिशोम गुरु के निधन से राज्य की सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र को अपूरणीय क्षति पहुंची है। जिसकी भरपाई संभव नहीं है। उन्होंने उनकी आत्मा की शांति व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सहित शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

सत्यनारायण भगवान की कथा श्रवण किया

मोहम्मदगंज। श्रावण शुक्ल पक्ष दशमीं को भगवान शिव के अभिषेक के साथ ही भीमचूल्हा मंदिर परिसर में दंपत्ति ने भगवान सत्यनारायण की कथा का श्रवण किया। मंदिर के पुजारी पंडित गंगा तिवारी ने कथा वाचन किया। इससे चहूंओर भक्तिमय माहौल बन गया। पुजारी ने बताया कि भीमचूल्हा मंदिर परिसर पर्यटकीय के साथ ही धार्मिक कार्यक्रम को लेकर भी लोगों की आस्था और विश्वास का केंद्र बन गया है।

कहर | वाहनों की कौन कहे, सड़क पर पैदल चलना भी मुश्किल

कीचड़ से बदहाल हुई नहर किनारे की कच्ची सड़क

नवीन मेल संवाददाता

मोहम्मदगंज। स्टेशन रोड से दायीं मुख्य नहर के किनारे से पदारथडीह होकर काशीस्रोत पुल के नीचे से राजनडीह गांव तक की सड़क का हाल भारी बारिश से बदहाल हो गया है। सड़क में कीचड़ फैल गई है। गड्ढों का भरमार हो गया है। इस सड़क में ही रसोई गैस की दुकान भी है। जहां तक भी पहुंचना आसान नहीं होता है। ऐसे में ग्राहकों को गैस सिलेंडर के उठाव के लिए होने वाली दिक्कत का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। इस सड़क की वर्तमान स्थिति की तस्वीर इसकी बदहाली को बयां कर रही है। जिस पर वाहनों की कौन कहे, पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। ग्रामीणों का कहना है कि बारिश होते

कीचड़ में तबदील सड़क।

ही इस सड़क में स्टेशन रोड से राजनडीह के बीच केवल पदारथडीह गांव को छोड़कर अन्य पूरे भाग पर फिसलन पैदा हो जाता है। जिस पर संभलकर नहीं चला जाए, तो कोई भी चारो खाने चित्त हो सकता है। यही वह मार्ग है, जिससे आसपास के घरों से लेकर राजनडीह-महुडंड मुख्य पथ पर स्थित पठारी गांव तक पीएमजीएसवाई सड़क के माध्यम से आवागमन किया जाता है। बावजूद इसके इसे बेहतर बनाने की दिशा में सकारात्मक परिणाम अबतक सामने नहीं आया है। जिसका उन्हें मलाल है।

बरसात में हो रही दोहरी परेशानी

इस सड़क की बारिश से बदहाल स्थिति में आसपास के रहवासियों को बाहर निकलने के बाद घरों तक पहुंचने में दोहरी परेशानी और जोखिम उठानी पड़ती है। एक तो दायीं मुख्य नहर के किनारे इस सड़क की बदहाल स्थिति, दूजा बैंक और स्कूल के पास जलजमाव, इस प्रकार दोनों ओर से आवागमन करना आसान नहीं होता है। इस साल उन्हें लगातार बारिश से कुछ ज्यादा ही परेशानी और जोखिम उठानी पड़ रही है। इस समस्या से दर्जनाधिक घरों के लोगों के समक्ष विकट स्थिति बन गई है।

न्यूज बॉक्स

आचार्य स्वामी बालकृष्ण के जन्मदिन पर रक्तदान

नीलाम्बर पीताम्बरपुर। पतंजलि योग समिति व भारत स्वाभिमान प्रखंड इकाई नीलाम्बर पीताम्बरपुर के संयुक्त तत्वाधान में रक्तवीरो- मंदीप श्रीवास्तव,संतोष प्रसाद,रामजी प्रसाद, चंद्रप्रकाश पांडेय, रंजीत कुमार सिंह,संदीप मेहता,सतीश कश्यप आदि रक्तवीरो ने रक्तदान किया। वहीं प्रखंड इकाई समिति के अध्यक्ष मंदीप श्रीवास्तव ने बताया कि आधुनिक आयुर्वेद के जनक आचार्य स्वामी बालकृष्ण जी महाराज के जन्मदिन 04 अगस्त के अवसर पर पतंजलि परिवार विगत कई वर्षो से रक्तदान शिविर का आयोजन करता आ रहा है। जबकि संरक्षक वीरेंद्र कुमार ने बताया कि वर्तमान परिवेश में जब लोग अपनों से दुरी बना रहे है उस परिस्थिति में दुसरो के लिए अमूल्य रक्तदान महादान के समान है। वही योगशिक्षक संतोष प्रसाद ने बताया कि जीवन में स्वस्थ शरीर के लिए रक्तदान का अपना महत्व है। मौके पर प्रखंड चैबर अध्यक्ष छोटेलाल सोनी,वीरेंद्र शुक्ला, पतंजलि महिला समिति के कंचन श्रीवास्तव,अर्चना देवी,सुमित कुमार वगैरह उपस्थित थे।

गुरु जी के निधन पर ऊंटारी प्रखंड कार्यालय में शोक सभा

ऊंटारी रोड। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री सह राज्यसभा सांसद और आदिवासी समाज के पुरोधा दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन के निधन से पूरे राज्य में शोक की लहर है। सोमवार को ऊंटारी रोड़ प्रखंड सभागार में प्रखंड कर्मी और अंचल कर्मी समेत अन्य पदाधिकारियों व कर्मचारियों के द्वारा दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। वहीं प्रखंड विकास पदाधिकारी श्रवण कुमार भगत ने बताया कि राज्य सरकार ने उनके सम्मान में 4 अगस्त व 5 अगस्त को सभी सरकारी कार्यालय बंद रखने का आदेश दिया है। इन दो दिनों तक शोक स्वरूप कोई कार्य नहीं होगा।

भारी बारिश से खपरैल मकान क्षतिग्रस्त

मोहम्मदगंज। प्रखंड मुख्यालय स्थित किशुनडीह टोला के दबगर पट्टी में भारी बारिश के दौरान खपरैल मकान के क्षतिग्रस्त हो जाने सात सदस्यीय परिवार अब जोखिम उठाकर उसी के एक कमरे में रहने को विवश हो गया है। भुक्तभोगी प्रमोद दास ने बताया कि इस गांव के प्रायः परिवार को आवास योजना का लाभ मिल गया है। लेकिन उन्हें अभी तक इससे वंचित रहना पड़ा है। अगर उन्हें आवास योजना का लाभ जल्द नहीं मिलता है, तो इस खपरैल मकान में रहते हुए उनके पूरे परिवार को खतरा झेलना पड़ सकता है। बारिश का कहर जारी रहा, तो उन्हें भारी नुकसान पहुंच सकता है। ऐसे में उन्हें बेघर भी होना पड़ सकता है। उन्होंने आवास निर्माण के लिए इस योजना का लाभ दिलाने की जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों से गुहार लगाई है।

झारखंड ने अपना संघर्षशील सपूत को खो दिया : छेदी खान

हुसैनाबाद। झारखंड के जन जन की आवाज जेएमएम के संस्थापक और पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर पूरे राज्य में शोक की लहर है। उनके निधन पर हुसैनाबाद के वरिष्ट जेएमएम नेता एजाज हुसैन उर्फ छेदी खान ने कहा कि शिबू सोरेन की निधन पर भावुक होते हुए कहा कि आज झारखंड ने एक संघर्षशील सपूत और आंदोलनकारी नेता को हमने खो दिया है। वह हमारे बड़े भाई के सामान थे, जो हमें छोड़कर चले गए। उन्होंने 1970 में आदिवासियों के जमीन कब्जे के खिलाफ साहूकारों के खिलाफ आवाज उठाई थी। उनकी यह आवाज पूरे झारखंड में आंदोलन में बदल गयी। शिबू सोरेन ने 1977 में उन्होंने राजनीति में कदम रखा, झारखंड राज्य निर्माण को लेकर जब आंदोलन का बिगुल फूंका तब से हम उनके साथ थे। वे जमीनी नेता थे, उन्होंने जीवन भर आदिवासी समाज के साथ गरीब वंचित समाज के लिए संघर्ष किया। झारखंड आंदोलन की वर्षों की लड़ाई और जनसंकल्प का परिणाम था कि वर्ष 15 नवंबर 2000 में झारखंड राज्य अलग हुआ। शिबू सोरेन का नाम झारखंड के इतिहासों में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा। शोक व्यक्त करने वालों में जेएमएम नेता नेहल असगर, डॉ. एजाज आलम समेत कई लोगों ने शोक व्यक्त किया है।

ओबरा गांव में शिव मंदिर स्थापना कार्यक्रम

ऊंटारी रोड़ । विश्रामपुर विधानसभा के सुदूरवर्ती क्षेत्र पांडु प्रखंड के रतनाग पंचायत अंतर्गत ओबरा गांव में स्वर्गीय पूर्व विधायक विनोद सिंह के पैतृक आवास पर शिव मंदिर की स्थापना पूरे विधि-विधान के साथ की गई। कार्यक्रम में सनातन धर्म के प्रति गहरी आस्था और श्रद्धा का प्रदर्शन हुआ। इस अवसर पर विश्रामपुर विधानसभा के कांग्रेस पार्टी के पूर्व प्रत्याशी एवं जन-जन के नेता सुधीर चंद्रवंशी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व विधायक प्रत्याशी (1989) जितेंद्र सिंह, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष रवि शुक्ला, विवेक शुक्ला, बुलु सिंह, शक्ति सिंह, नीतू सिंह, सतेंद्र सिंह, उपेंद्र नारायण सिंह, प्रहलाद सिंह, कुणाल चौबे, डब्बू चौबे, अरुण मेहता, राजा नागेंद्र दास, स्वर्गीय विनोद सिंह की धर्मपत्नी मालती देवी सहित विमला देवी, उत्तम देवी, दुलारी देवी, गायत्री देवी और सैकड़ों ग्रामीणों एवं हजारों शिवभक्तों ने इस धार्मिक आयोजन में भाग लिया। मंदिर स्थापना के साथ पूरे क्षेत्र में धार्मिक उत्साह और सामाजिक एकता का माहौल देखने को मिला।

विवेकानंद स्कूल में दिशोम गुरु को दी गई श्रद्धांजलि

विश्रामपुर (पलामू) । नावाबाजार प्रखंड क्षेत्र के आरापुर महुगाई गांव स्थित विवेकानंद पब्लिक स्कूल में सोमवार को पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर लोकसभा का आयोजन किया गया। जहां विद्यालय के निर्देशक सहित शिक्षक, छात्र-छात्राएं व अभिभावकों ने 2 मिनट का मौन धारण कर दुख व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित किया। स्कूल के निदेशक ऋतुराज मिश्रा ने कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन का निधन झारखंड सहित पूरे देश के लिए एक अपूर्णीय क्षति है। जिसकी भरपाई नहीं की जा सकती। कहा कि उनका जीवन संघर्षो से भरा पड़ा रहा है। झारखंड राज्य का गठन भी उनके संघर्षों का ही परिणाम है। उनके संघर्ष व त्याग को झारखंड वासी हमेशा याद रखेंगे। शोक सभा में प्राचार्य तृप्ति मिश्रा,उप प्राचार्य शैली कुमारी,शिक्षिका नेहा वर्मा,सीता देवी,पूजा कुमारी,रीता देवी,प्रमोद सिंह,मंजीत दीक्षित सहित सभी शिक्षक, शिक्षिका,छात्र -छात्रा व कई अभिभावक मौजूद थे।

₹2.00

ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

हर पक्ष की खबर | हर पक्ष पर नजर

गुरुजी
2014 लोकसभा चुनाव जीते
2020 से राज्यसभा सांसद थे
झा. मु. मो.

1957 में 13 साल की उम्र में पिता की हत्या के बाद पढ़ाई छोड़ी

1969 पहला विस चुनाव सीपीआई के टिकट पर रामगढ़ से लड़ा, लेकिन हार गए

1970 के दशक में सूदखोरों के खिलाफ आंदोलन शुरू किया

1972 में अलग राज्य की मांग के लिए झारखंड मुक्ति मोर्चा बनाया

1980 में दुमका से लोस चुनाव लड़े, पहली बार सांसद बने

1985 में जामा सीट से विधायक बने और 1989 में दुमका से फिर सांसद बने

2005 मार्च मे पहली बार सीएम बने दस दिन में इस्तीफा दिया

2008 अगस्त को दूसरी बार सीएम बने उपचुनाव हारने पर बाद इस्तीफा दिया

विनम्र श्रद्धांजलि

जन्म : 11 जनवरी 1944
मृत्यु : 04 अगस्त 2025

शिबू सोरेन के निधन पर पलामू सांसद वीडी राम ने व्यक्त की शोक संवेदना

मेदिनीनगर। पलामू सांसद वीडी राम ने झारखंड आंदोलन के महान नेता, झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की। सांसद ने कहा कि शिबू सोरेन का जीवन समाज, आदिवासियों और हाशिए पर खड़े लोगों के अधिकारों के लिए समर्पित था। उनका संघर्षशील व्यक्तित्व और सामाजिक न्याय के प्रति अडिग प्रतिबद्धता सदैव हमें प्रेरित करती रहेगी। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन की राजनीतिक सोच और उनके द्वारा किया गया संघर्ष, विशेष रूप से झारखंड राज्य के निर्माण में, सदैव हमारे दिलों में जीवित रहेगा। उनके निधन से झारखंड ने एक ऐसे नेता को खो दिया है, जिनका काम और विचार हमेशा हमारे मार्गदर्शक बने रहेंगे उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए शिबू सोरेन को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की और कहा, "हम उन्हें नमन करते हैं और उनका योगदान कभी नहीं भुलाया जाएगा।"

हुसैनाबाद के पूर्व मंत्री कमलेश कुमार सिंह ने भी जताया शोक

हुसैनाबाद। झारखंड के पूर्व मंत्री श्री कमलेश कुमार सिंह ने दिशोम गुरु, झारखंड आंदोलन के प्रणेता और आदिवासी समाज की मजबूत आवाज, आदरणीय श्री शिबू सोरेन जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। श्री सिंह ने अपने शोक संदेश में कहा कि दिशोम गुरु का जाना मेरे लिए एक व्यक्तिगत क्षति है। मुझे उनके साथ सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। जब वे मुख्यमंत्री थे, तब उनके नेतृत्व में मुझे जनसेवा का वास्तविक अर्थ समझने और झारखंड की जनता के लिए समर्पित भाव से काम करने की प्रेरणा मिली। उनका जीवन, त्याग और संघर्ष आने वाली पीढ़ियों को सदैव मार्ग दिखाता रहेगा। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वे इस पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और उनके परिजनों, समर्थकों तथा समस्त झारखंडवासियों को यह गहन दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करें।साथ ही भाजपा के युवा नेता श्री सूर्या सोनल सिंह ने भी दिशोम गुरु के निधन पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि आदरणीय शिबू सोरेन जी एक सच्चे नेता थे, जिन्होंने आदिवासी समाज की आवाज को राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाया। उनका जीवन संघर्ष और बलिदान की मिसाल है, जो हमें सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

दिशोम गुरु का जाना झारखंड के लिए गहरा आघात इनकी क्षतिपूर्ति संभव नहीं: मिथिलेश ठाकुर

गढ़वा। दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर राज्य के पूर्व मंत्री और झामुमो के केंद्रीय महासचिव मिथिलेश कुमार ठाकुर ने गहरी संवेदन व्यक्त करते हुए कहा कि दिशोम गुरु का जाना झारखंड के लिए एक बड़ा गहरा आघात है। ठाकुर ने कहा कि दिशोम गुरु ने अलग राज्य झारखंड के लिए जो संघर्ष किया उसका परिणाम भी मिला। झारखंड गुरुजी के इस योगदान को हमेशा याद रखेगा। दिशोम गुरु ने लड़कर झारखंड राज्य लिया, ठाकुर ने कहा कि आज झारखंड को एक बड़े खालीपन का एहसास हो रहा है। उनके निधन से झारखंड को जो क्षति हुई है, उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है। ठाकुर ने कहा कि भगवान अपने श्रीचरणों में उन्हें स्थान दें।

दिशोम गुरु के निधन पर हुसैनाबाद विधायक संजय सिंह ने जताया शोक

हुसैनाबाद। झारखंड आंदोलन के प्रणेता और आदिवासी अस्मिता के प्रतीक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर हुसैनाबाद के विधायक संजय कुमार सिंह यादव ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने इसे झारखंड की राजनीति और सामाजिक चेतना के लिए अपूरणीय क्षति बताया। विधायक संजय सिंह ने अपने शोक संदेश में कहा की दिशोम गुरु शिबू सोरेन न केवल एक राजनेता थे बल्कि वे झारखंड की आत्मा थे। उन्होंने आदिवासियों, किसानों और वंचित तबके की आवाज को जिस तरह संसद से लेकर सड़कों तक पहुंचाया। वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है। उनका जीवन संघर्षों और बलिदानों की मिसाल है। झारखंड राज्य के गठन में उनका योगदान अमिट और ऐतिहासिक है। आज हम सबने एक मार्गदर्शक और जननेता को खो दिया। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दें और शोकाकुल परिजनों को यह दुख: सहने की शक्ति दें। श्री यादव ने क्षेत्र के लोगों से आह्वान किया कि वे दिशोम गुरु के सपनों के झारखंड को साकार करने हेतु एकजुट होकर काम करें।

विचार, चेतना और आंदोलन का नाम था शिबू सोरेन : अरुणा शंकर

मेदिनीनगर: मेदिनीनगर नगर निगम की प्रथम मेयर अरुणा शंकर ने दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की हैं . श्रीमती शंकर ने कहा कि झारखंड के लिए शिबू सोरेन न केवल एक राजनेता थे, बल्कि एक विचार, एक चेतना और एक आंदोलन का नाम थे.उनके निधन से एक युग का अंत हों गया ,उनका जाना न सिर्फ झारखंड बल्कि पूरे देश के लिए क्षति हैं , राजनीतिक जीवन में संघर्ष,जनता के प्रति प्रतिबद्धता और बेहतर झारखंड के निर्माण के लिए गुरुजी ने जो काम किया उससे उनकी पहचान राष्ट्रीय स्तर पर बनी थी ,वह देश के विशिष्ट नेताओं में से एक थे ,गुरु जी झारखंड के राजनीतिक भूगोल के नहीं, सांस्कृतिक नक्शे के निर्माता भी थे।उनका संघर्ष,सादगी आने वाले पीढ़ियों को प्रेरित करेगा उनके स्मृतियों को सादर नमन

शिबू सोरेन का निधन, झारखंड की राजनीति में एक युग का अवसान

अंतिम जोहार गुरुजी

नवीन मेल डेस्क

रांची। झारखंड ही नहीं, राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासियों मूलवासियों की आवाज शांत हो गई। झारखंड की राजनीति में एक युग का अवसान हो गया। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, राज्यसभा सदस्य और झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के संरक्षक शिबू सोरेन का सोमवार को दिल्ली में निधन हो गया। उन्होंने दिल्ली के सर गंगा राम अस्पताल में अंतिम सांस ली। वे 81 साल के थे। वे पिछले कई दिनों से अस्पताल में वेंटिलेटर सपोर्ट पर थे। उनकी तबीयत लंबे समय से खराब चल रही थी और उन्हें किडनी से जुड़ी गंभीर समस्याओं के चलते अस्पताल में भर्ती कराया गया था। शिबू सोरेन के बेटे और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने उनके निधन की पुष्टि की।

कभी सूदखोरों और शोषकों के खिलाफ तीर धनुष लेकर निडरता से आंदोलन चलाने वाले गुरुजी एक विचारधारा के रूप में सर्वव्यापी हैं। उन्होंने तब झारखंड अलग प्रांत की बुलंद आवाज जन-जन तक पहुंचाई, जब झारखंड शब्द से बहुत से लोग परहेज करते थे। वे झारखंड की राजनीति के एक मजबूत स्तंभ थे। उन्होंने झामुमो के बैनर तले आदिवासियों के हक और अधिकार के लिए कड़ा संघर्ष किया। उनके निधन की खबर मिलते ही राज्यभर में शोक की लहर दौड़ गई है। इस बीच, सर गंगा राम अस्पताल की ओर से बताया गया कि शिबू सोरेन को सुबह 8:56 बजे मृत घोषित कर दिया गया। शेष पेज 09 पर

गुरुजी का पार्थिव शरीर रांची पहुंचा, आज नेमरा में अंतिम संस्कार

रांची। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सदस्य दिवंगत शिबू सोरेन का अंतिम संस्कार उनके पैतृक गांव रामगढ़ जिले के नेमरा गांव में मंगलवार को अपराह्न में किया जाएगा। गुरुजी का पार्थिव शरीर सोमवार की शाम को विमान से रांची पहुंचा। इसके बाद मोरहाबादी स्थित आवास पर ले जाया गया। मंगलवार की सुबह झामुमो के पार्टी कार्यालय में अंतिम दर्शन के लिए रखा जाएगा। इसके बाद पार्थिव शरीर को झारखंड विधानसभा ले जाया जाएगा, जहां जनप्रतिनिधि और अधिकारी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। फिर, पार्थिव शरीर को रामगढ़ के नेमरा गांव ले जाया जाएगा, जहां उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

रामगढ़ के नेमरा में हुआ था शिबू सोरेन का जन्म

शिबू सोरेन का जन्म 11 जनवरी 1944 को रामगढ़ के नेमरा गांव में हुआ था। बचपन से ही उन्होंने आदिवासी समुदाय की समस्याओं, शोषण और अन्याय को करीब से देखा। 1960 के दशक में उन्होंने आदिवासी अधिकारों और जल-जंगल-जमीन की रक्षा के लिए संघर्ष शुरू किया। 1970 के दशक में उन्होंने झारखंड मुक्ति मोर्चा की स्थापना की। उनका मुख्य उद्देश्य अलग झारखंड राज्य की मांग को लेकर आंदोलन चलाना था। इस आंदोलन में उन्होंने आदिवासियों के जमीन छीनने, शोषण और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई। वर्ष 1980 में शिबू सोरेन पहली बार लोकसभा सदस्य बने। इसके बाद उन्होंने कई बार संसद में आदिवासी मुद्दों को उठाया और झारखंड राज्य गठन की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाई। उनके प्रयासों और लंबे संघर्ष के परिणामस्वरूप 15 नवंबर 2000 को शेष पेज 09 पर

आज मैं शून्य हो गया : हेमंत सोरेन

शिबू सोरेन के बेटे और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने गुरुजी के निधन पर 'एक्स' पर लिखा, 'आदरणीय दिशोम गुरुजी हम सभी को छोड़कर चले गए हैं। आज मैं शून्य हो गया हूं...।' वहीं, दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन के दुखद समाचार से उनके करोड़ों प्रशंसक भी निस्तेज हो गए।

शिबू सोरेन का निधन सामाजिक न्याय के क्षेत्र में एक बड़ी क्षति : द्रौपदी मुर्मू

एजेंसी। नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू सोमवार को नई दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल पहुंचकर झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के संस्थापक शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने हेमंत सोरेन से मुलाकात कर परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। ज्ञात हो कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन का सोमवार की सुबह लंबी बीमारी के बाद 81 साल की आयु में निधन हो गया। राष्ट्रपति के आधिकारिक 'एक्स' अकाउंट से कुछ तस्वीरें भी शेयर की गईं, जिसमें राष्ट्रपति मुर्मू, शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि देते हुए नजर आ रही हैं। साथ ही, उन्होंने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मुलाकात कर संवेदना भी प्रकट की। राष्ट्रपति के 'एक्स' हैंडल से फोटो शेयर करते हुए लिखा गया, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नई दिल्ली स्थित सर गंगाराम अस्पताल जाकर शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने उनके पुत्र और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की ।राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अपने शोक संदेश में कहा, शिबू सोरेन का निधन सामाजिक न्याय के क्षेत्र में एक बड़ी क्षति है। उन्होंने आदिवासी अस्मिता और झारखंड राज्य के निर्माण के लिए संघर्ष किया। जमीनी स्तर पर काम करने के अलावा, उन्होंने झारखंड के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री और सांसद के रूप में भी योगदान दिया।

● राष्ट्रपति ने सर गंगाराम अस्पताल पहुंचकर दी दिशोम गुरु को श्रद्धांजलि

पीएम मोदी पहुंचे गंगाराम अस्पताल, शिबू सोरेन को दी श्रद्धांजलि, भावुक हुए हेमंत

एजेंसी। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के संस्थापक और पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। पीएम मोदी सोमवार को दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल पहुंचे। इस दौरान उन्होंने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मुलाकात कर अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। प्रधानमंत्री मोदी के सर गंगाराम अस्पताल आने पर झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन भावुक हो गए। पीएम मोदी ने सोमवार को दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल पहुंचकर हेमंत सोरेन और उनके परिवार के सदस्यों से मुलाकात की और शिबू सोरेन के निधन पर दुख जताते हुए संवेदना व्यक्त की। शेष पेज 09 पर

जन चेतना की मशाल बना राष्ट्रीय नवीन मेल दिशोम गुरु की प्रेरणा आज भी जीवित है

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। अक्टूबर 1994 का वह अविस्मरणीय दिन, जब राष्ट्रीय नवीन मेल का प्रकाशन आरंभ हुआ, केवल एक अख़बार की शुरुआत नहीं थी, बल्कि झारखंड की धरती पर जन चेतना की एक सशक्त मशाल जल उठी थी। यह क्षण क्षेत्रीय पत्रकारिता के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ, जिसने सामाजिक बदलाव की दिशा में एक नयी शुरुआत की। इस ऐतिहासिक पहल को सार्थक बनाने के लिए झारखंड आंदोलन के महानायक, जननायक दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने उद्घाटन में सम्मिलित होने की सहमति दी थी। शेष पेज 09 पर

शिबू सोरेन के निधन पर रास में दी गई श्रद्धांजलि

एजेंसी। नई दिल्ली

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन का सोमवार को दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में निधन हो गया। वे राज्यसभा के मौजूदा सदस्य थे। उनके निधन पर राज्यसभा में सभी सांसदों ने शोक जताया और दो मिनट का मौन रखा। इसके बाद सदन की कार्यवाही पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। सोमवार को राज्यसभा की कार्यवाही शुरू होते ही उपसभापति हरिवंश नारायण ने सदन को राज्यसभा के मौजूदा सदस्य की मृत्यु का समाचार दिया। उपसभापति ने कहा कि गहरे दुख के साथ यह सूचित करना है कि मौजूदा राज्यसभा सदस्य शिबू सोरेन का निधन हो गया है। उपसभापति ने कहा, शिबू सोरेन आम लोगों के बीच में गुरुजी के नाम से लोकप्रिय थे। उनका जन्म झारखंड के हजारीबाग जिले के एक गांव में 11 मई 1944 को हुआ था। वह मैट्रिक पास थे और पेशे से एक किसान थे। उन्होंने आदिवासी समुदाय के अधिकारों और उनके उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। झारखंड राज्य के निर्माण के आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने आजीवन वंचितों के अधिकार की लड़ाई लड़ी व उनके लिए सेवा भाव से कार्य किया। वह एक वरिष्ठ और विशिष्ट आदिवासी नेता थे। शेष पेज 09 पर

● राज्यसभा की कार्यवाही पूरे दिन के लिए स्थगित

दिशोम गुरु शिबू सोरेन : पलामू से झारखंड तक संघर्ष की धधकती मशाल

झारखंड की आत्मा आज भी दिशोम गुरु शिबू सोरेन की गूंज से स्पंदित है। वे अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका जीवन संघर्ष, विचार और आंदोलन की वह ज्योति है, जो आने वाली पीढ़ियों को मार्ग दिखाती रहेगी। वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि झारखंडी अस्मिता के प्रतीक थे। जिनके नेतृत्व में एक पूरी कौम ने अपनी पहचान, अधिकार और अस्तित्व की लड़ाई लड़ी और जीती।

● सुरेश बजाज
प्रधान संपादक
राष्ट्रीय नवीन मेल

शिबू सोरेन का संघर्ष झारखंड राज्य के निर्माण से कहीं पहले शुरू हो चुका था। 1970 के दशक में जब उन्होंने पहली बार पलामू की भूमि पर कदम रखा, तब यह क्षेत्र सामाजिक शोषण, भूमि हड़प और महाजनी प्रथा की आग में झुलस रहा था। पलामू की वह पीड़ा, जहां खेत आदिवासियों के थे, पर फसलें जमींदारों की झोली में जाती थीं। शिबू सोरेन ने इस अन्याय को केवल देखा नहीं, बल्कि महसूस किया और इसके खिलाफ बिगुल फूंक दिया।

यहीं से उपजा था वह ऐतिहासिक नारा - 'जमीन हमारी, फसल हमारी, हक भी हमारा होगा।' इस नारे ने आदिवासियों में चेतना की चिंगारी जलाई, जो बाद में धधकती आग बन गई। धानकटनी आंदोलन के रूप में यह विरोध अपने चरम पर पहुंचा। जहां महिलाएं हंसिया लेकर खेतों में उतरीं और पुरुष तीर-कमान से पहरा देने लगे। यह आंदोलन केवल भूमि का नहीं, बल्कि आत्मसम्मान की पुनः प्राप्ति का संग्राम था। शिबू सोरेन ने संघर्ष को केवल क्रांति के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसमें नैतिक अनुशासन और जनसंगठन की शक्ति को जोड़ा। उन्होंने गांव-गांव जाकर चौपालों में जनता को जागरूक किया। महाजनी प्रथा के खिलाफ सामूहिक प्रतिरोध खड़ा किया और इस बात का विशेष ध्यान रखा कि संघर्ष किसी निर्दोष के खिलाफ न हो। उनकी यही नैतिकता उन्हें एक जननेता से बढ़कर दिशोम गुरु बनाती है।

आपातकाल के दौरान जब सरकारें दमनकारी हो उठीं, शिबू सोरेन अज्ञातवास में चले गए। पारसनाथ के जंगलों में उन्होंने शरण ली, लेकिन जैसे ही जनता ने उन्हें पुकारा, उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। यह था उनका लोकतांत्रिक विश्वास कि आंदोलन जनता का होता है, और नेता को जनता के साथ रहना चाहिए, चाहे वह जेल हो या चौपाल।

शिबू सोरेन ने जल्द ही यह महसूस कर लिया था कि लड़ाई केवल महाजनी प्रथा तक सीमित नहीं रह सकती। इसे राजनीतिक मंच पर ले जाना होगा। इसीलिए उन्होंने 1972 में 'झारखंड मुक्ति मोर्चा' की स्थापना की, जिसने झारखंड के आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों और मजदूरों को एक स्वर दिया। 'हम झारखंडी हैं, झारखंड हमारा है' का उद्घोष गांव-गांव गूंजने लगा। यह आंदोलन केवल विरोध नहीं, बल्कि एक सकारात्मक मांग थी। अलग राज्य के निर्माण की।

पलामू, टुंडी, दुमका, गिरिडीह से लेकर चाईबासा तक शिबू सोरेन लगातार गांवों का दौरा करते रहे। संसद में भी उन्होंने झारखंड के भूगोल, संस्कृति, भाषा और अस्मिता को मुखरता से रखा। यह आंदोलन आखिरकार 15 नवंबर 2000 को झारखंड राज्य के निर्माण के साथ सफल हुआ।

यहां यह उल्लेख जरूरी है कि झारखंड की नींव जिन हाथों ने रखी, उनमें पलामू के वे खेतिहर भी शामिल थे, जिन्होंने सबसे पहले धानकटनी आंदोलन में हिस्सा लिया था। यही वह कड़ी है, जो पलामू को झारखंड आंदोलन के केंद्र में ला खड़ा करती है।

शिबू सोरेन तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री बने और केंद्र सरकार में कोयला मंत्री भी रहे। उनके जीवन में आरोप भी आए, लेकिन अंततः न्यायालय से मुक्त होकर वे पुनः जनता के बीच सम्मानित हुए। यह इस बात का प्रमाण है कि सत्य देर से सही, पर विजयी होता है।

4 अगस्त 2025 को उनका निधन केवल एक व्यक्ति का निधन नहीं था, बल्कि एक युग का अवसान था। लेकिन, साथ ही यह वह क्षण भी था, जब झारखंड की मिट्टी में उनके विचारों के बीज और गहरे रोपित हो गए।

आज जब हम दिशोम गुरु को याद करते हैं, तो यह केवल श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि उनके विचारों को आगे ले जाने का संकल्प भी है। संघर्ष यदि न्यायपूर्ण हो, और उसमें लोकहित की भावना हो, तो कोई भी शक्ति उसे दबा नहीं सकती।

आप चले गए दिशोम गुरु, लेकिन आपके विचार, आपकी विरासत और आपका साहस, झारखंड की आत्मा में जीवित है। आने वाली पीढ़ियां इन्हीं विचारों की छांव में नई दिशाएं पाएंगी।

प्रेम संबंध से नाराज परिजनों ने की प्रेमी युगल की निर्मम हत्या

● शव कुएं में फेंका, पांच आरोपी गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

नीलाम्बर पीताम्बरपुर। पलामू जिले के तरहसी थाना क्षेत्र के पूर्णी टरिया गांव में ऑनर किलिंग का खौफनाक मामला सामने आया है। जिसने पूरे क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया है। रविवार की संध्या पुलिस को सूचना मिली कि गांव के एक कुएं में युवक और युवती का शव पड़ा है। मृतकों की पहचान सुभाष कुमार (22 वर्ष), पिता बिरेन्द्र सिंह, निवासी भंडरा और विभा कुमारी (21 वर्ष), पिता उपेन्द्र महतो निवासी पूर्णी टरिया के रूप में हुई है। दोनों के बीच प्रेम-प्रसंग था। जिसकी जानकारी लड़की के परिजनों को थी और वे इससे नाराज थे। पुलिस की जांच में सामने आया कि लड़की के परिवार के सदस्यों ने प्रेम संबंधों को लेकर गहरी नाराजगी जताते हुए साजिश के तहत दोनों की हत्या कर दी। हत्या में लड़की के माता-पिता उपेन्द्र महतो व कलावती देवी, चाचा जनेश्वर महतो, विमलेश उर्फ राजेश महतो और राकेश महतो शामिल थे। हत्या के बाद शव को छिपाने के उद्देश्य से दोनों को गांव के ही कुएं में फेंक दिया गया। पुलिस ने छापामारी कर सभी पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। हत्या में प्रयुक्त लाठी, लोहे की छड़ और मृतक का मोबाइल भी बरामद किया गया है। वहीं तरहसी थाना प्रभारी आनंद राम के नेतृत्व में गठित टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए सफलता पाई।

मामले की गहन जांच जारी

घटना को लेकर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी (एसडीपीओ) मनोज कुमार झा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पूरे घटनाक्रम की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह मामला ऑनर किलिंग से जुड़ा प्रतीत होता है, जिसमें परिजनों ने समाज के डर से खौफनाक कदम उठाया। सभी आरोपियों से पूछताछ की जा रही है और घटना के अन्य कारणों की भी जांच की जा रही है।

वहीं इस घटना से गांव में मातम पसरा हुआ है और स्थानीय लोग स्तब्ध हैं। पुलिस की सक्रियता से मामला जल्द खुल गया, लेकिन इस वीभत्स हत्याकांड ने समाज में रिश्तों और सोच पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

शहर में चोरी की घटनाओं पर पुलिस का कड़ा एक्शन

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। शहर में बढ़ती चोरी की घटनाओं के मद्देनज़र, पुलिस ने सघन तलाशी अभियान चलाकर तीन शातिर चोरों को गिरफ्तार किया। पुलिस के मुताबिक, चोरी की घटनाएं लगातार बढ़ रही थीं, जिसके बाद पुलिस अधीक्षक महोदया के निर्देशानुसार 2 अगस्त की रात रेलवे स्टेशन क्षेत्र में छापेमारी की गई।

इस अभियान में प्रमोद पांडेय नामक शख्स को पकड़ा गया, जिसके पास से एक चोरी का मोबाइल बरामद हुआ। पूछताछ के दौरान प्रमोद ने अपने दो सहयोगियों, अनिकेत तिवारी और संजीत ओझा के नाम भी उजागर किए, जिन्होंने कई ट्रेन और शहर से चोरी की घटनाओं को अंजाम दिया था। पुलिस ने उनकी निशानदेही पर बड़े पैमाने पर चोरी का सामान बरामद किया, जिसमें दो मोटरसाइकिल, एक लैपटॉप और आठ मोबाइल फोन शामिल हैं।

पलामू पुलिस ने आम जनता से अपील की है कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तत्काल पुलिस को दें, ताकि समय रहते आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके।

पतंजलि परिवार का औषधीय पौधों का वितरण व पौधरोपण अभियान

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। रविवार को आचार्य बालकृष्ण के जन्मोत्सव के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय औषधीय पौधा दिवस मनाया गया। इस दिन पतंजलि परिवार पलामू द्वारा औषधीय पौधों का निशुल्क वितरण किया गया। साथ ही वृक्षारोपण को बढ़ावा देने हेतु 15 जुलाई से 15 अगस्त तक यह अभियान चलाया जा रहा है।

इस मौके पर 3500 पौधों का वितरण किया गया, जिनमें मुख्यतः गिलोय, नींबू, कटहल, जामुन, परवल, घृतकुमारी जैसे औषधीय पौधे शामिल थे। इन पौधों के वितरण से स्वास्थ्य लाभ की उम्मीद जताई गई, खासकर गिलोय और मूंगा जैसे पौधों के जरिए इम्यूनिटी बढ़ाने का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम में पतंजलि परिवार के सदस्य, योग समिति और महिला पतंजलि समिति के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। पतंजलि परिवार का यह अभियान लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से चलाया जा रहा है। साथ ही, लोगों को पर्यावरण की सुरक्षा और वृक्षारोपण के महत्व पर भी जागरूक किया जा रहा है।

सावन के आखिरी सोमवारी पर पूजा-अर्चना

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। सावन माह के आखिरी सोमवारी पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी, जिन्होंने विभिन्न शिव मंदिरों में भगवान शिव का जलाभिषेक कर पुण्य लाभ लिया। खास बात यह रही कि इस दिन सर्वार्थ सिद्धि योग, इंद्र योग और रवि योग का विशेष संयोग था, जो पूजा के महत्व को और बढ़ा देता है। पंडित मनीष मिश्रा ने बताया कि इस दिन किया गया पूजा एवं अभिषेक मानसिक और सांसारिक मनोकामनाओं की पूर्ति करता है। भक्तों ने दिनभर उपवास रखा और विशेष पूजा की, जिससे सावन के माह की साधना पूरी मानी जाती है।

सफलता केवल दूसरों की नकल करने से नहीं : एसडीएम

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। रविवार को संत मरियम आवासीय विद्यालय में आयोजित संस्कारशाला में गढ़वा सदर अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का विषय "प्रतिस्पर्धा के दौर में शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावकों की चुनौतियाँ" था, जिसमें विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों ने शिक्षा के प्रति अपनी राय साझा की। संजय कुमार ने छात्रों को सफलता के विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन देते हुए कहा कि सफलता केवल दूसरों की नकल करने से नहीं, बल्कि अपने लक्ष्य तय करके और उस पर पूरी ईमानदारी से काम करने से मिलती है। उन्होंने यह भी कहा कि छात्रों को उनके स्वाभाविक कौशल के अनुसार मार्गदर्शन दिया जाए और टॉपर्स बनने की प्रतिस्पर्धा में बच्चों पर ज्यादा दबाव न डाला जाए।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन एवं ज्ञानरंजन एक सिक्के के दो पहलू थे : हृदयानंद मिश्र

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। हिन्दु न्यास बोर्ड के सदस्य सह वरिष्ठ कांग्रेसी नेता हृदयानंद मिश्र ने गुरु जी को याद करते हुए बताया कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन का आंदोलन महाजनी प्रथा के विरोध से शुरू होकर नेपथ्य नायक ज्ञानरंजन के दिशा निर्देशन में झारखंड अलग राज्य के निर्माण में ना केवल झारखंड तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि पश्चिम बंगाल और उड़ीसा जैसे राज्यों में विस्तारित हो गया था। बिहार प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं और मुख्यमंत्री के विरोध के वावजूद कांग्रेस का एक धड़ा ज्ञानरंजन के नेतृत्व में अहिंसक आंदोलन और सभाएं करता था वहीं दूसरी ओर झारखंड अलग राज्य के निर्माण में दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने झारखंड मुक्ति मोर्चा के आंदोलन को रेल रोको, चक्का जाम एवं समस्त राज्य के ग्रामीण इलाकों में अलख जगाकर इस आंदोलन को पैनी धार दिया। जब भी दिशोम गुरु शिबू सोरेन का रांची आगमन होता था तो उनका मिलना ज्ञानरंजन के साथ होता था। दोनों के बीच घंटों आंदोलन की तीव्रता के संबंध में ही बातें होती थीं। ज्ञानरंजन अपनी आय का अधिकांश भाग दिशोम गुरु शिबू सोरेन को सौंप दिया करते थे कि चूंकि वे शिबू सोरेन में ही सिर्फ वे संभावना और क्षमता देखते थे और सदा ही सार्वजनिक रूप से कहते थे कि शिबू सोरेन ही एकमात्र ऐसा नेता है जो भारत सरकार को झुकाकर एक दिन झारखंड राज्य का निर्माण करा सकते हैं। जिससे यहां के लोगों को बिहार सरकार के शोषण से मुक्ति दिला सकते हैं। एक दिन की बात है कि शिबू सोरेन एवं सूरज मंडल ज्ञानरंजन के आवास पर आए। ज्ञानरंजन ऊपर के कमरे में थे और शिबू सोरेन पदयात्रा से इतने थके हुए थे कि नीचे सोफे पर ही बेसुध हो कर सो गए। ज्ञानरंजन ने सबको हिदायत दी कि जब ये सोकर उठेंगे तो तब ही आंदोलन की बात की जाएगी।

कांग्रेस पार्टी में बिहार के नेताओं के डर से बहुत सारे नेतागण झारखंड के शोषण के विरूद्ध मूकदर्शक बने हुए थे वहीं दूसरी ओर झारखंड अलग राज्य निर्माण में ज्ञानरंजन के नेतृत्व में मेरे अलावा आर पी राजा, अनादि ब्रह्म, प्रदीप बलमुचू, केशव महतो कमलेश, प्रेमशंकर सिंह, गंगा प्रसाद, अरुण पांडेय और उनकी पत्नी प्रतिभा पांडेय, कमल किशोर पांडेय, सोमेश्वर प्रसाद, मणिशंकर तिवारी, अशोक श्रीवास्तव, ईश्वर चन्द्र पांडेय एवं अरुण श्रीवास्तव सरीखे सैकड़ों नेता ज्ञानरंजन के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे। झारखंड निर्माण का सपना जो दिशोम गुरु शिबू सोरेन एवं ज्ञानरंजन ने देखा था। शिबू सोरेन के जीवन काल में ही पूरा हो गया परन्तु दुर्भाग्यवश हृदय गति रुक जाने से 22 अप्रैल 1998 को अचानक ज्ञानरंजन का देहांत हो गया और दिशोम गुरु शिबू सोरेन उस दिन दिन भर बिना कुछ खाए पीए ही बैठे रहे।

आज ज्ञानरंजन के परिवार में उनके छोटे भाई राजीव रंजन की पत्नी बची हुई है और दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने मानवता का परिचय देते हुए प्रत्येक माह उनके पास बीस हजार रुपए भेजवाया करते थे। आज दिशोम गुरु के अवसान से झारखंड के संघर्ष के पर्याय का अंत हो गया जिसकी भरपाई कोई भी नहीं कर सकता है।

नवोदय विद्यालय की अस्थायी स्थिति : दो दशक से भवन के बिना छात्रों को हो रही कठिनाई

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। मेदिनीनगर में स्थित नवोदय विद्यालय–1, जिसे दो दशकों से भवन नहीं मिल पाया है, इस समय राजकीय उच्च विद्यालय के अस्थायी भवन में संचालित हो रहा है। इस विद्यालय की स्थापना 22 वर्ष पहले वर्ष 2003 में की गई थी, लेकिन शुरुआती समय में जमीन की कमी के कारण इसे राजकीय उच्च विद्यालय के भवन में ही शुरू किया गया। आज दो दशक से अधिक समय बीत जाने के बाद भी इस विद्यालय को अपना स्थायी भवन नहीं मिल सका है, जिससे यहाँ पढ़ाई कर रहे छात्रों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

नवोदय विद्यालय में कक्षा 6 से 10 तक के छात्र-छात्राएं अध्ययन करते हैं, जिनकी संख्या वर्तमान में 198 है। हालांकि, विद्यालय का पर्याप्त भवन न होने के कारण कक्षा कक्ष और प्रशासनिक दफ्तरों के ऊपरी तल्ले का उपयोग छात्रों के हॉस्टल के रूप में किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, छात्राओं का हॉस्टल पास के एक अन्य भवन में संचालित हो रहा है। इस अस्थायी व्यवस्था की वजह से विद्यालय में छात्रों की संख्या सीमित है, और वर्तमान में केवल 40 छात्रों का ही दाखिला लिया जा रहा है।

अगर इस विद्यालय को उचित भवन मिल जाता, तो यहाँ 80 छात्रों का दाखिला किया जा सकता था, जो विद्यालय की क्षमता से कहीं अधिक होता। इस स्थिति से न केवल छात्रों को शिक्षा में बाधाएं उत्पन्न हो रही हैं, बल्कि स्कूल के लिए आवश्यक खेलकूद की सुविधाओं का भी अभाव है। छात्रों को किसी प्रकार हॉस्टल में रहकर अपनी पढ़ाई पूरी करनी पड़ती है।

इसी बीच, जिले के जपला स्थित नवोदय विद्यालय–2 का भवन पहले ही बनकर तैयार हो चुका है और वहाँ स्कूल को शिफ्ट कर दिया गया है। यह विद्यालय भी 6 साल बाद स्थापित हुआ था, लेकिन इस बार उसके लिए भवन का निर्माण जल्दी किया गया और छात्रों की संख्या 80 तक पहुंच गई। हालाँकि, मेदिनीनगर के नवोदय विद्यालय–1 को लेकर एक सकारात्मक खबर यह है कि अब इसे अपना स्थायी भवन मिलने की उम्मीद जगी है। विद्यालय प्रबंधन से जुड़े सदस्यों ने बताया कि विद्यालय के लिए मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के पास स्थित पोखराहा में 24 एकड़ जमीन मिल चुकी है। यहाँ विद्यालय के स्थायी भवन का निर्माण किया जाएगा और इस बारे में विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की जा रही है। अगर यह निर्माण कार्य समय पर पूरा होता है, तो विद्यालय का अस्थायी संचालन समाप्त हो सकेगा और छात्रों को बेहतर सुविधाएँ मिल पाएंगी।

यह परियोजना विद्यालय के भविष्य को लेकर उम्मीद की किरण साबित हो सकती है। यदि यहाँ एक स्थायी भवन बनता है तो विद्यालय के संचालन में सहजता आएगी और छात्रों को अच्छे वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

न्यूज बॉक्स

झारखंड के सरताज थे गुरुजी : अविनाश देव

मेदिनीनगर। दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर शोक जताते हुए सामाजिक कार्यकर्ता अविनाश देव ने उन्हें झारखंड का सरताज बताया। उन्होंने कहा कि गुरुजी केवल आदिवासियों के नहीं, बल्कि शोषित-पीड़ितों के भी सच्चे नेता थे। गत 28 जून को दिल्ली के अस्पताल में अंतिम मुलाकात हुई थी, इस बात का अंदेशा नहीं था कि वह विदा ले लेंगे। संत मरियम स्कूल में बच्चों को गुरुजी के जीवन से अवगत कराते हुए मौन श्रद्धांजलि दी गई। पार्थिव शरीर दिल्ली से रांची लाया जा रहा है, 5 अगस्त को अंतिम यात्रा संभव है।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन को नेताओं ने दी श्रद्धांजलि

मेदिनीनगर। झारखंड के प्रथम विधानसभा अध्यक्ष इंदर सिंह नामधारी ने शिबू सोरेन के निधन पर शोक जताते हुए कहा कि उनका जाना अपूरणीय क्षति है। उन्होंने आंदोलन के दिनों को याद करते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से झारखंड के विकास को गुरुजी को सच्ची श्रद्धांजलि बनाने की अपील की। झामुमो नेता सन्नी शुक्ला ने कहा कि गुरुजी केवल एक नेता नहीं, बल्कि आदिवासी अस्मिता, न्याय और अधिकार की आवाज थे। उनके विचार और संघर्ष झारखंड के लोगों के लिए प्रेरणा बने रहेंगे। आशुतोष विनायक 'लाल बाबू' ने कहा कि शिबू सोरेन झारखंड की आत्मा को स्वर देने वाले नेता थे। उनका जीवन आदिवासी संघर्ष, बलिदान और जनसेवा को समर्पित था। उन्होंने राजनीति को सत्ता नहीं, जनहित के संघर्ष का माध्यम बनाया।

शिबू सोरेन के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित

मेदिनीनगर। झारखंड मुक्ति मोर्चा के जिला अध्यक्ष राजेंद्र सिन्हा ने कहा कि झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और आदिवासी समाज के प्रमुख नेता, दिशोम गुरु श्री शिबू सोरेन के निधन के बाद राज्य भर में शोक की लहर है। शिबू सोरेन के निधन से झारखंड की राजनीति में एक युग का अंत हो गया है। उनकी नेतृत्व क्षमता, संघर्षशीलता और आदिवासी समुदाय के लिए समर्पण को याद करते हुए, विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक संगठनों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। शिबू सोरेन का आंदोलन सिर्फ झारखंड राज्य निर्माण तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने समाज में समानता और न्याय की दिशा में भी काम किया। उनके नेतृत्व में झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) ने आदिवासी अधिकारों की बात की और राज्य गठन के लिए संघर्ष किया। उनका निधन राज्य के लिए अपूरणीय क्षति है। आज उनके निधन की खबर के बाद, झारखंड मुक्ति मोर्चा और अन्य संगठनों के कार्यकर्ताओं ने शहर भर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। कार्यकर्ताओं ने शिबू सोरेन को झारखंड के जनक और आदिवासी समाज का सच्चा नायक मानते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा।

झारखंड आंदोलन के महान नेता शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि : सतीश कुमार

मेदिनीनगर। झारखंड राज्य के निर्माण में दिशोम गुरु शिबू सोरेन का योगदान अमूल्य रहेगा। उनके निधन पर केन्द्रीय संयोजक झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा, सतीश कुमार ने गहरी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि शिबू सोरेन ने जब भी झारखंड के लिए संघर्ष किया, उन्होंने सिर्फ राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को भी जागृत किया। सतीश कुमार ने यह भी बताया कि जब वह चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे थे, तो शिबू सोरेन ने बिना हिचक उन्हें झारखंड मुक्ति मोर्चा से चुनाव लड़ने के लिए प्रेरित किया। उनका यह आशीर्वाद जीवनभर उनके साथ रहेगा और समाज सेवा में प्रेरणा देता रहेगा।

शिबू सोरेन के योगदान को याद करते हुए संजीव कुमार तिवारी का शोक संदेश

मेदिनीनगर। झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ नेता संजीव कुमार तिवारी ने शिबू सोरेन के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि गुरुजी का निधन झारखंड के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उनके नेतृत्व में झारखंड के आंदोलन ने एक नई दिशा पाई और उन्होंने हमेशा जनजातीय समाज और वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए आवाज उठाई। उनके योगदान को सदा याद रखा जाएगा और उनकी प्रेरणा से झारखंड को एक समावेशी राज्य बनाने की दिशा में काम किया जाएगा।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर डीआईजी नौशाद आलम ने दी श्रद्धांजलि

मेदिनीनगर। झारखंड आंदोलन के प्रणेता शिबू सोरेन के निधन पर डीआईजी नौशाद आलम ने अपने आवास पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की। उन्होंने जवानों के साथ दिशोम गुरु के चित्र पर पुष्प अर्पित किए और दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। डीआईजी ने कहा कि शिबू सोरेन झारखंड की अस्मिता के प्रतीक थे और उनका जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा रहेगा। सभा में मौजूद पुलिसकर्मियों ने भी उनके योगदान को याद करते हुए उन्हें नमन किया।

निगम के वार्ड 6 में जल जमाव बनी आफत

मेदिनीनगर। नगर निगम के अधिकांश वार्ड में जल निकासी की समस्या देखने को मिल रहा है। वार्ड छह में हनुमान नगर और भवानी नगर में यह समस्या धीरे-धीरे आफत बनती जा रही है। मुहल्ले में रहने वाले विश्वनाथ दुबे, आलोक सिंह, उमाशंकर भारती आदि लोगों ने बताया कि यहां पर सबसे बड़ी समस्या जल-निकासी की है। पानी का निकास नहीं होने से बरसात में बारिश का पानी घरों में घुस जाता है। इस कारण लोगों को भारी परेशानी के साथ आर्थिक क्षति भी उठानी पड़ती है। वहीं वार्ड के दोनों ओर से पांकी मेदिनीनगर मुख्य पथ जाने में काफी असुविधा हो रही है। इस वार्ड में निर्माण नहीं होने से वर्तमान में कच्ची या मोरम गिट्टी से बनी हुई है।

एक नजर

गाजे -बाजे के साथ निकली भव्य जल यात्रा

पत्थलगड़ा(चतरा)। श्रावण मास के अंतिम सोमवारी पर पत्थलगड़ा प्रखंड अंतर्गत नावाडीह कुर्मी टोला में गाजे-बाजे के साथ भव्य जल यात्रा निकाली गई। जल यात्रा में शामिल श्रद्धालु कुर्मी टोला से बासुदेव मठ पहुंचे जहां जल उठाने के उपरांत डमोल, नावाडीह चौक से कुर्मी टोला होते शिव मन्दिर पहुंचकर जलाभिषेक किया। इस पावन अवसर पर 24 घंटा का हरि कीर्तन का भी आयोजन किया जा रहा है। कलश यात्रा के दौरान बमबम भेले जय शिव शंकर के लगाए जा रहे जयकारे से पूरा क्षेत्र गुंजायमान होता रहा। साथ ही जल यात्रा में भारी संख्या में श्रद्धालु शामिल थे। जल यात्रा के सफल आयोजन में अध्यक्ष परमेश्वर प्रसाद, भुवनेश्वर प्रसाद, बल्कु प्रसाद, राजेंद्र प्रसाद, समाजसेबी रामचंद्र दांगी व गांव के लोगों ने अहम भूमिका निभया।

निकाली गयी भव्य कलश यात्रा

सिमरिया (चतरा)। बनवासी कल्याण केंद्र चतरा के तत्वधान में सोमवार को भव्य कलश यात्रा का आयोजन किया गया। कलश यात्रा सिमरिया प्रखंड के ग्राम चलकी से प्रारंभ हुआ। जिसमें काफी संख्या में ग्रामीण महिला एवं पुरूष गाजे बाजे के साथ जय भोलेनाथ, जय शिव शंकर के नारे लगाते हुए स्थानीय जलाशय पर पहुंचे। जहां कलश में अचार्य चंद्रिका पाठक ने लोगों को जल सकलंप कराया। उसके बाद सभी लोग देवी मंडप चाडरम पहुंचकर बाबा भोले नाथ पर जलाभिषेक किया। इस अवसर पर वनवासी कल्याण केंद्र के जिला अध्यक्षकृष्ण चंद्र सिंह ने कहा कि वनवासी कल्याण केंद्र के द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए कई कार्य महिला समूह के द्वारा किए जा रहे हैं। साथ ही लोगों में धार्मिक भावना जगाने एवं धर्म के प्रति आस्था बढ़ाने हेतु संस्था के द्वारा इस तरह के धार्मिक आयोजन किए जाते रहे हैं। इस अवसर पर जिला संगठन मंत्री दयाशंकर सिंह, महामंत्री नरदेव यादव, कोषाध्यक्ष मिथिलेश सिंह, सचिव सुरेश कुमार पाठक ने भी अपने अपने विचार रखें। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के ग्राम विकास प्रमुख किरण देवी, मंडल प्रमुख सरिता देवी, उर्मिला देवी, मालती देवी, ललिता देवी का यहम योगदान रहा।

सोमवारी पर शिव चर्चा का आयोजन

चतरा/हंटरगंज। हंटरगंज प्रखंड के पांडेयपुरा स्थित शिव मंदिर के बगल में श्रावण माह के शुभ अवसर पर सोमवार को शिव चर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें विशेष रुप से कलाकारों को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर शिव भक्तों ने शिव महिमा के बारे में लोगों को बताया और चर्चा की। कलाकारों के भजन, कीर्तन और संगीत से पूरा क्षेत्र भक्तिमय हो गया। वक्ताओं ने कहा सभी के गुरु एकमात्र शिव हैं। शिव भक्ति और चर्चा करने से जीवन के सभी दुःख व कष्ट दूर हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि शिव शिष्य बनने से मनुष्य का जीवन सफल हो जाता है। महादेव सेना संघ के द्वारा आगंतुक श्रद्धालुओं के लिए महाप्रसाद भोग का भी आयोजन किया गया। शिव चर्चा में भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया।

ग्रामीण बैंक द्वारा जादू कैंप का आयोजन

चतरा। हंटरगंज प्रखंड के पाण्डेयपुरा स्थित शिव मंदिर के समीप सोमवार को झारखंड राज्य ग्रामीण बैंक द्वारा शिविर का आयोजन कर लोगों को योजनाओं की जानकारी दी गईं। इस दौरान आयोजित जादू कैंप में जादूगर के कलाकार ने जादू के माध्यम से ग्रामीणों को प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, किसान क्रेडिट कार्ड खाता खुलवाने आदि को लेकर विस्तृत जानकारी दी। बताया गया कि आज कल साइबर फ्राड काफी ज्यादा सक्रिय है। जिससे सावधान रहने की जरूरत है। आप बड़े घटना के शिकार हो सकते हैं, जादूगर कलाकार एक से एक बढ़ कर जादू दिखकर बच्चों का खूब मनोरंन करके लोगों को जागरूक किया।

मझिआंव गोलीकांड का पुलिस ने किया खुलासा

छत्तीसगढ़ से एक आरोपी हथियार के साथ गिरफ्तार

जानकारी देते एसडीपीओ और थाना प्रभारी।

नवीन मेल संवाददाता

मझिआंव (गढ़वा)। थाना क्षेत्र के करमडीह चौक पर हुई गोलीबारी कांड में पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी नीरज कुमार एवं मझिआंव थाना प्रभारी सह पुलिस निरीक्षक सुनील कुमार तिवारी ने संयुक्त रूप से प्रेस वार्ता कर जानकारी दी कि गोलीकांड में शामिल एक आरोपी शेख लड्डु को छत्तीसगढ़ से गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर दो देसी कट्टा एवं जिंदा गोली भी बरामद किया है। ज्ञात हो की 10 जुलाई को कांड के वादी सकीब खान नामक व्यक्ति अपने तीन दोस्तों के साथ वैगनॉर कार से करमडीह चौक पर पान खाने के लिए रुके हुए थे। इसी दौरान दिन के करीब 12:30 बजे एक लाल रंग की पल्सर बाइक पर सवार दो हमलावर पहुंचे और कार की अगली सीट पर बैठे सकीब खान पर तीन राउंड फायरिंग कर दी। एक गोली उनके बाएं हाथ के उंगली में लगी थी, जिसके बाद उन्हें इलाज के लिए गढ़वा भेजा गया। सकीब खान ने मामले में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। प्राथमिकी में सकीब खान ने आरोप लगाया है कि आरोपी अफजल खान (पुत्र शमीम खान) उसकी बेटी से शादी करना चाहता था, लेकिन वह इसके लिए राजी नहीं थे। कुछ माह पूर्व अफजल की लाश मुंबई रेलवे ट्रैक पर मिली थी और अफजल के परिजनों को शक था कि उसकी हत्या सकीब खान ने करवाई है। इसी रंजिश में यह हमला किया गया। जांच में खुलासा हुआ कि इस कांड को अंजाम ट्विंकल खान और शेख लड्डु ने मिलकर दिया था। पुलिस ने छापेमारी कर बभनी गांव निवासी शेख लड्डु (उम्र 22 वर्ष, पिता शेख इस्माइल) को गिरफ्तार किया। पूछताछ में उसने अपराध स्वीकार किया और घुरुआ गांव के एक पुराने खपरैल मकान से छुपाकर रखे गए हथियारों की जानकारी दी।

वहीं आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। पुलिस का कहना है कि फरार अन्य आरोपी की तलाश जारी है और जल्द ही उसे भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

बाबा मंगरदह महादेव मंदिर में श्रद्धालुओं की उमड़ी जन सैलाब

नवीन मेल संवाददाता

डंडई। बाबा बैजनाथ धाम देवघर की तरह गढ़वा जिला के डंडई प्रखंड के प्रसिद्ध लवाहीखुर्द के बाबा मंगरदह महादेव मंदिर में अंतिम सोमवारी को जलाभिषेक करने को लेकर श्रद्धालुओं की जन सैलाब उमड़ पड़ी। श्रद्धालु अपने अपने परिवार के साथ वाहनों और पैदल आते जाते दिखे। लगभग 2 किलोमीटर तक पूजा अर्चना करने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ देखी गई।कमेटी के आंकड़े के अनुसार तकरीबन 10000 कांवरियाँ व डाकबम ने 30 किलोमीटर दूर छत्तीसगढ़ सीमावर्ती क्षेत्र बालचौरा कनहर नदी से जल उठाकर पैदल यात्रा कर जलाभिषेक किया। लगे मेले में लगभग 40 से 50 हजार लोगों की भीड़ होने का अनुमान लगाया गया। जल चढ़ाने को लेकर कावरियाँ व डाकबम ने मंदिर परिसर में जय शिव शंकर हर हर महादेव ,बोल बम का नारा है ,बाबा एक सहारा है सहित अन्य जयघोस लगा रहे थे। मंदिर के पुजारी दीनदयाल पाठक वैदिक मंत्रोंउच्चारण के साथ कांवरियाँ एवं डाकबम सहित पूजा अर्चना करने वाले श्रद्धालुओं को जलाभिषेक और पूजा अर्चना कराया जा रहा था। मंदिर समिति के लोगों ने जगह-जगह पर अपनी तैनाती सक्त रखी एवं जलाभिषेक के लिए काफी सहयोग करते दिखे। हालांकि श्रद्धालुओं की आवागमन से मंदिर आन और जाने वाले श्रद्धालुओं की वाहनों की लंबी कतार और जाम की स्थिति बन गई थी परंतु वॉलिंटियर के सूझबूझ से जाम को लगातार हटाया जा रहा था। मेले में बच्चे बूढ़े युवा युवती सहित महिला पुरुषों की काफी भीड़ थी लोग मेले का आनंद लेते नजर आ रहे थे। बच्चे मेले के झूले में झूल कर फुले नहीं समा रहे थे।

धान रोपने घर से निकली महिला लापता, नदी में बहने की आशंका

नवीन मेल संवाददाता

रमना। मड़वनीया पंचायत के कबीसा ग्राम में रविवार को घर से धान रोपने के लिए निकली कमला कुंवर महिला लापता हो गई है। रात्रि में महिला जब घर वापस नहीं आयी तो सुबह में परिजन खोजने लगे। इसी क्रम में महिला की चप्पल और घोघी पिपरादह नदी किनारे पाया गया। गत दिन इस क्षेत्र में वर्षा भी हुयी थी जिससे नदियों कि धार तेज हो गयी थी। उक्त स्थल पर लापता महिला का सामान पाए जाने पर परिजन एवं ग्रामीणो को आशंका हैं कि कमला कुंवर इसी नदी को पार करने के क्रम में डूब गयी हो गयी। इस घटना कि सूचना पाकर थाना प्रभारी ने सहायक अवर निरीक्षक सलीम खान पुलिस बल को भेजा साथ ही सीओ सह बीडीओ विकास पाण्डेय भी उक्त स्थल पर पहुंचकर ग्रामीण गोताखोर की मदद से नदी में खोजबीन कराया, लेकिन कुछ पता नहीं चला। इसके बाद कांडी थाना के श्रीनगर ग्राम के गौतखोर को बुला कर गहरे पानी में लापता महिला का खोज किया गया लेकिन कोई पता नहीं चला।

दिशोम गुरु के निधन पर जेएमएम कार्यकर्ताओं ने दी श्रद्धांजलि

नवीन मेल संवाददाता

बड़गड़। बड़गड़ प्रखंड के जेएमएम कार्यकताओं ने स्थानीय बस स्टैंड परिसर में सोमवार को पूर्व मुख्यमंत्री सह जेएमएम के संस्थापक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर शोक सभा का आयोजन कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके पुण्य आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना की। मौके पर कार्यकताओं ने दो मिनट का मौन रखा। इसके पश्चात जेएमएम के केंद्रीय कमिटी सदस्य सदस्य जय प्रकाश मींज ने कहा कि बिहार से लड़कर झारखंड को अलग किया। वे अपने जीवन काल में आदिवासियों के लिए एक शेर की तरह थे। 81 वर्ष के उम्र में सोरेन का इस धरती को छोड़कर चले जाना हम सभी झारखंड वासियों के लिए बहुत ही छती पूर्ण है जो पूरा नहीं जा सकता है। इस शोक सभा में प्रखंड अध्यक्ष अर्जुन मिंज, मिलयानुस केरकेट्टा, संजय कुजूर, संदीप गुप्ता, संतोष लकड़ा, ऐनुल हक, सोपान कच्छप, धर्मु मिंज, नूरुल हक, शंकर यादव, कौसर आलम ,अयूब हक, सोनू पासवान आदि लोग उपस्थित होकर भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं दो मिनट का मौन रखा। इसके पश्चात शोक सभा का समापन हुआ।

गुरु जी ने आदिवासी समाज के उत्थान के लिए आजीवन संघर्ष किया : जेएमएम

झारखंड निर्माण में गुरु जी के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता

शिबू सोरेन के असामयिक निधन की खबर से खरौंधी प्रखंड में शोक की लहर

शोक सभा में शामिल जेएमएम के नेता और कार्यकर्ता।

नवीन मेल संवाददाता

खरौंधी (गढ़वा)। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के सुप्रीमो और राज्य के कद्दावर नेता शिबू सोरेन के असामयिक निधन की खबर से खरौंधी प्रखंड में शोक की लहर दौड़ गई। सोमवार को प्रखंड कार्यालय, झामुमो कार्यालय, भाजपा कार्यालय सहित विभिन्न शिक्षण संस्थानों में दो मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई। इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ) रविन्द्र कुमार, अंचल पदाधिकारी गौतम कुमार लकड़ा, थाना प्रभारी रवि कुमार केशरी सहित कई प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। झामुमो नेता धर्मराज पासवान, प्रमुख आभा रानी, उपप्रमुख देवदत्त प्रसाद आर्य, पूर्व उपप्रमुख गोरखनाथ चौधरी, समाजसेवी हिफाजत अंसारी, बाबूलाल पासवान, अभिजीत किशोर, अशोक ठाकुर, शशि पासवान, भाजपा नेता उपेंद्र दास एवं जितेन्द्र प्रसाद यादव ने शिबू सोरेन के निधन को अपूरणीय क्षति बताया। सभी ने कहा कि शिबू सोरेन ने झारखंड के निर्माण और आदिवासी समाज के उत्थान के लिए आजीवन संघर्ष किया। उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

जनप्रतिनिधियों, समाजसेवियों और आम नागरिकों ने भी उनके निधन पर गहरा दुख प्रकट किया और शोकाकुल परिवार के प्रति संवेदना जताई। प्रखंड में पूरे दिन एक गमगीन माहौल देखा गया।

सड़क हादसे में दो साल की बच्ची की मौत, लोगों ने किया एनएच-75 जाम

श्री बंशीधर नगर। सोमवार दोपहर श्री बंशीधर नगर स्थित अंबा लाल पटेल बालिका उच्च विद्यालय के पास एक दर्दनाक सड़क हादसे में दो वर्षीय इनाया खातून की मौके पर ही मौत हो गई। यह घटना करीब दोपहर 12 बजे की है जब बरडीहा गांव निवासी शाहिद रजा अपनी बेटी को आधार कार्ड बनवाने के बाद लौट रहे थे। इसी दौरान हाईस्कूल के समीप एनएच-75 पर एक तेज रफ्तार ट्रक ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। स्थानीय लोगों की मदद से घायल बच्ची को अनुमंडलीय अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बच्ची की मौत से आक्रोशित ग्रामीणों ने शव को एनएच-75 पर रखकर सड़क जाम कर दिया और पीड़ित परिवार को उचित मुआवजा देने की मांग करने लगे। सावन की अंतिम सोमवारी होने के कारण सड़क पर वाहनों की लंबी कतार लग गई और अफरा-तफरी का माहौल बन गया। सूचना पर थाना प्रभारी उपेंद्र कुमार पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और ट्रैफिक को वैकल्पिक मार्गों से निकालने का प्रयास किया गया। वहीं, जामस्थल पर पूर्व मंत्री रामचंद्र केशरी, झामुमो जिला उपाध्यक्ष मुक्तेश्वर पांडेय आप नेता मंटू पांडेय सहित कई स्थानीय नेता पहुंचे और पीड़ित परिवार को मुआवजा देने की मांग की। एसडीओ प्रभाकर मिर्धा, एसडीपीओ सत्येंद्र नारायण सिंह व पुलिस निरीक्षक रतन कुमार सिंह ने मौके पर पहुंचकर आक्रोशित लोगों को समझाने का प्रयास किया। अंततः प्रशासन द्वारा पीड़ित परिवार को 1 लाख की सहायता राशि और अन्य सरकारी लाभ देने के आश्वासन के बाद जाम समाप्त हुआ।

विडंबना सैकड़ों गांवों की सच्चाई, आज भी मूलभूत सुविधाएं सिर्फ सपना

कंधों पर ढोनी पड़ी शव तो समझिए कैसा है गांव का हाल

शव को खाट पर ले जाते ग्रामीण।

हेमंत कुमार

चिनियां। आजादी के 75 साल बाद भी गढ़वा जिले के चिनियां प्रखंड के डोल पंचायत स्थित ठाढापत्थल गांव के हालात ऐसे हैं मानो यह गांव अब भी विकास की नक्शे से गायब हो। सड़क नहीं होने की वजह से यहां एक 40 वर्षीय युवक की मौत के बाद ग्रामीणों को उसकी लाश को 2 किलोमीटर तक खटिया पर कंधों पर उठाकर मुख्य सड़क तक लाना पड़ा।

यह दृश्य जितना पीड़ादायक था, उतना ही प्रशासन और जनप्रतिनिधियों की नाकामी को उजागर करता है। गांव में सड़क की ऐसी दुर्दशा है कि बीमार व्यक्ति को अस्पताल तक पहुंचाना भी किसी पहाड़ चढ़ने से कम नहीं। वहीं बीते दिन एक जंगली हाथी ने गांव के एक युवक को कुचलकर मार डाला। हादसे के बाद परिजन सदमे में थे, लेकिन सड़क नहीं होने के कारण शव को एम्बुलेंस तक लाना संभव नहीं था। मजबूरी में ग्रामीणों ने कंधे पर शव को खटिया पर रखकर 2 किलोमीटर तक पैदल यात्रा की, तब जाकर मुख्य सड़क पर पहुंचे।

इस घटना का वीडियो आज सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। बावजूद इसके प्रशासन और नेताओं के कान पर अब तक जूं तक नहीं रेंगी है। वहीं ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा। गुसाए ग्रामीणों ने कहा कि नेता लोग चुनाव के समय वोट मांगने आते हैं, बड़े-बड़े वादे करते हैं, पर जीतते ही हमें भुला देते हैं। अब हम भी ठान चुके हैं कि वोट उसी को देंगे जो गांव में सड़क बनाएगा।

अब नहीं तो कब?

गांव की यह कहानी सिर्फ एक गांव की नहीं, झारखंड के सैकड़ों ऐसे गांवों की सच्चाई है। जहां आज भी मूलभूत सुविधाएं सिर्फ सपना हैं। ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री से गुहार लगाई है कि अब देर नहीं हो। गांव में जल्द से जल्द पक्की सड़क का निर्माण हो, ताकि किसी मां की गोद उजड़ने के बाद शव को कंधे पर न ढोना पड़े। और गांव में किसी की तबीयत खराब हो तो उसे आसानी से वाहन द्वारा मुख्यालय के हॉस्पिटलों में ले जाकर इलाज कराया जा सके।

न्यूज बॉक्स

दिशोम गुरु के निधन पर शोक सभा

रमना। झारखंड राज्य नवनिर्माण आंदोलनकारी शिबू सोरेन झारखंड के तीसरे मुख्यमंत्री तीन बार के केंद्रीय मंत्री और 7 बार रहे संसद झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक दिशोंम गुरु शिबू सोरेन की मृत्यु की सूचना पर प्रखंड में शोक की लहर है, सभी सरकारी कार्यालयों को दो दिनों के लिए बंद कर दिया गया। झारखंड राज्य के लिए उनके योगदान और त्याग को याद कर उनकी मृत्यु की सूचना पाकर लोग शोकाकुल हैं। झारखंड मुक्ति मोर्चा के प्रखंड के कार्यकताओं ने रमना वन विभाग परिसर में शोक सभा आयोजन कर दो मिनट का मौन धारण किया। इस मौके पर विधायक प्रतिनिधि रोहित वर्मा, प्रखंड अध्यक्ष विशेश्वर मेहता, युवा मोर्चा प्रखंड अध्यक्ष मुन्ना पासवान, आशुतोष कुमार सिंह,राकेश कुमार, प्रदीप सिंह अनुज कुमार, वरिष्ठ झामुम नेता मुन्ना प्रसाद, रामचंद्र राम, अनिल गुप्ता, मुन्ना पांडे सचिव, बिरंची पासवान, चितरंजन सिंह, नरेश गुप्ता, नागेंद्र कुमार सिंह मंसूर अंसारी, सुभान अंसारी,नीरज गुप्ता,गोपाल प्रसाद गुप्ता,राजीव कुमार,मोहम्मद अली, कुलदीप पासवान प्रताप उराव गुलाम अली,शोभन पासवान, उदित ठाकुर नीरज गुप्ता इत्यादि मौजूद थे।

स्मृति कॉलेज ऑफ नर्सिंग में शोक सभा का आयोजन

मेराल। झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक एवं पूर्व मुख्यमंत्री तथा राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के निधन पर प्रखंड मुख्यालय अंचल कार्यालय और सभी सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में शोक सभा का आयोजन किया गया। आयोजित शोक सभा में 2 मिनट का मौन रखकर उनके आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया। इसके अलावा किस्मती कॉलेज ऑफ नर्सिंग और फामेर्सी कॉलेज में भी दिसम गुरु, शिबू सोरेन के निधन पर 2 मिनट का मौन रखकर उनके आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया। आयोजित शोक सभा में प्रखंड के प्रधान सहायक रामनाथ भगत, सुनील कुमार, रिजवान अख्तर, पंचायत सचिव राम जी राम, प्रेमचंद राम, परमानंद पाठक, किस्मती कॉलेज के सचिव वीरेंद्र प्रसाद, निर्देशक लव कुमार, प्राचार्य विकास कुमार मिश्रा सहित कॉलेज के सभी छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

केतार प्रखंड में शिबू सोरेन के निधन पर शोक सभा

केतार। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री व राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर प्रखंड में विभिन्न स्थानों पर शोक सभा का आयोजन किया गया। सोमवार को प्रखंड सह अंचल कार्यालय में शोक सभा का आयोजन कर दिशोम गुरु शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि देते हुए आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। इस अवसर पर ब्लाक कर्मियों ने कहा कि झारखंड प्रदेश को अलग करने की लड़ाई में शिबू शरण ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। उनके जाने से प्रदेश में शुन्यता आ गई है। सभी ने शिबू सोरेन के योगदान को याद करते हुए उन्हें एक महान जननायक व आदिवासी हितों के सच्चे प्रहारी के रूप में नमन किया। ज्ञात हो कि शिबू सोरेन के निधन पर राजकीय शोक घोषित किया गया है। इस दौरान 5 अगस्त को सभी सरकारी कार्यालय बंद रहेंगे। इस मौके पर राजस्व कर्मचारी प्रकाश कुमार, पंचायत सचिव राम सुरेश राम, आदित्य कुमार, चंद्रशेखर मिश्रा, रोजगार सेवक रामकुमार प्रजापति, दिनेश कुमार, धीरेंद्र विश्वकर्मा, छोटन पासवान, अयोध्या बैठा, रघुनाथ पाल, सत्यम कुमार, दिनेश पाल, सुधांशु यादव सहित अन्य लोग मौजूद थे।

जल सहिया समिति ने निभाया प्रकृति के प्रति कर्तव्य

हुसैनाबाद। प्रखंड क्षेत्र में जल सहिया समिति द्वारा वृक्षों को रक्षा सूत्र बांधने और वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वृक्ष रक्षा मम्म धर्म के नारे के साथ यह कार्यक्रम लोकजन चेतना मंच हुसैनाबाद द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम के तहत जलसहियाओं ने पेड़ों को रक्षासूत्र बांधकर उनकी रक्षा का संकल्प लिया और विभिन्न स्थानों पर वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर जलसहिया रीता देवी ने कहा की हम जैसे बहनों ने पहले अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर उनकी लंबी उम्र की दुआ मांगी, अब पेड़ों को राखी बांधकर पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लिया है। पेड़ ही जीवन हैं। इनकी रक्षा करना हम सभी का धर्म है। हर घर में एक पेड़ लगाने और उसकी देखभाल की जिम्मेदारी हम जलसहिया बहनों ने ली है। ये सिर्फ एक परंपरा नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता अधिवक्ता प्रेमतोष कुमार सिंह गुड्डू ने की और संचालन सचिव अधिवक्ता मधुलता रानी ने किया। कार्यक्रम के तहत दंगवार से मोहम्मदगंज तक वृक्षारोपण और रक्षा सूत्र बांधने का कार्य संपन्न हुआ। इस मौके पर डॉ. पी एन सिंह, डॉ.अमृता सिंह,अनिमेष अग्रवाल,मुकेश कुमार सिंह,चंदन पासवान,प्रिंस सिंह,जॉनी सिंह,विजय मेहता समेत कई लोग मौजूद थे।

जर्जर भवन में डर के साये में पढ़ाई करते हैं बच्चे

पत्थलगड़ा(चतरा)। जिले के पत्थलगड़ा प्रखंड अंतर्गत नावाडीह स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय मारंगा में लगभग चार सो बच्चे जर्जर भवन में डर के साये में पढ़ाई करने को मजबूर हैं। ज्ञात हो कि विद्यालय पूरी तरह से जर्जर हो चुका है। बारिश होने पर छत से पानी टपकने लगता है। साथ ही भवन इतना जर्जर हो चुका है कि हमेशा दीवार या छत टूट कर गिरते रहता है। ऐसे में कहीं पढ़ाई करते समय चोटीला ना हो जाएं, इसके डर से बहुत सारे बच्चे स्कूल में पढ़ाई करने नहीं जाते हैं। जबकी उक्त विद्यालय में कक्षा एक से लेकर आठ तक की पढ़ाई होती है। बताया गया कि विद्यालय में पांच शिक्षक होना चाहिए लेकिन दो शिक्षिका और एक शिक्षक है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक आदित्य राणा हैं। जो स्कूल के काम से व्यस्त रहते हैं और दो शिक्षिका के भरोसे एक से 8 तक की शिक्षा व्यवस्था रह जाती है। ऐसे में ग्रामीणों का कहना है कि भावन के साथ शिक्षकों की घोर कमी से बच्चों की पढ़ाई नही हो पाती है। सभी ने सरकार व प्रशासन से विद्यालय में कक्षा व बच्चों के अनुरुप शिक्षकों की प्रतिनियुक्ती करने की मांग की है।

टावर मजदूरों पर जेजेएमपी उग्रवादियों का हमला

फायरिंग व रंगदारी की मांग से मचा हड़कंप

- भाटचतरा में चार हथियारबंद उग्रवादियों ने मजदूरों से की मारपीट, 2 राउंड फायरिंग कर फैलाई दहशत, घायल मजदूर का इलाज जारी

नवीन मेल संवाददाता

बारियातू। लोहरदगा जिले के बारियातू थाना क्षेत्र अंतर्गत सिबला पंचायत के भाटचतरा बाजारटांड में शनिवार रात उग्रवादियों ने बड़ी वारदात को अंजाम दिया। वेस्ट बंगाल के मालदा जिले से आए हाईटेंशन लाइन टावर के निर्माण कार्य में लगे मजदूरों पर चार हथियारबंद उग्रवादियों ने हमला कर दिया। नरेश तुरी के घर में रह रहे इन मजदूरों के कमरे में रात करीब 9:30 बजे उग्रवादी घुसे और मारपीट के साथ-साथ पिस्टल से दो राउंड फायरिंग कर दहशत फैला दी।

घटना के समय मजदूर अपने कमरों में थे, तभी चार वर्दीधारी अपराधी—मुंह ढंके हुए, कबरा पैंट और काले शर्ट में—कमरे में जबरन घुसे और पहले मारपीट शुरू कर दी। फिर पिस्टल से दो फायर किए, जिससे अफरा-तफरी मच गई। जान बचाने के लिए कई मजदूर रात के अंधेरे में भाग निकले। घटना में पंचम नामक मजदूर को रॉड से मारा गया जिससे उसका दाहिना हाथ घायल हो गया।

स्थानीय ग्रामीणों के अनुसार, दो-तीन दिन पहले भी चार युवकों ने मजदूर बनकर भाटचतरा बाजारटांड में इन मजदूरों से बातचीत की थी। ये लोग खुद को मजदूरी की तलाश में बता रहे थे और विभिन्न जानकारी लेकर चले गए थे। शनिवार को साप्ताहिक बाजार खत्म होने के बाद ही यह वारदात की गई।

एक लाख की मांग और पोस्टर छोड़कर भागे अपराधी

अपराधियों ने मजदूरों से एक लाख रुपये की मांग की और धमकी भरा पर्चा (पोस्टर) छोड़ दिया। जाते-जाते अमूल, लोकेश, पंचम और विश्वजीत नामक मजदूरों के मोबाइल फोन भी ले गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, एक अपराधी लंबा कद का था और बाकी की उम्र 18 से 20 वर्ष के बीच की रही होगी। पहले से थी साजिश, घटना से दो दिन पूर्व मजदूर बनकर टोह ले चुके थे।

उग्रवादी संगठन जेजेएमपी ने ली जिम्मेदारी

घटना की सूचना मिलते ही बारियातू थाना प्रभारी रंजन पासवान पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। घटनास्थल से दो खोखा (कारतूस के खोल) और एक धमकीभरा पोस्टर बरामद किया गया है। पोस्टर में उग्रवादी संगठन झारखंड जनमुक्ति परिषद ने इस घटना की जिम्मेदारी ली है। पुलिस ने अपराधियों की तलाश में छापेमारी अभियान शुरू कर दिया है।

पुलिस अधीक्षक का सख्त रुख, जल्द गिरफ्तारी का दावा

थाना प्रभारी रंजन पासवान ने बताया कि घटना में शामिल अपराधियों की पहचान की जा रही है और जल्द गिरफ्तारी सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि ऐसे कृत्य को किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और जो भी दोषी होंगे, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा।

घायल मजदूर का इलाज जारी, अन्य मजदूरों में डर का माहौल

घटना में घायल मजदूर पंचम का इलाज कराया जा रहा है। वहीं अन्य मजदूरों में भय और असुरक्षा की भावना देखी जा रही है। मजदूरों का कहना है कि वे अब यहां काम करने से डर रहे हैं। स्थानीय प्रशासन से मजदूरों की सुरक्षा की मांग की जा रही है।

सावन की अंतिम सोमवारी पर शिवालयों में उमड़ा श्रद्धालुओं का जनसैलाब

लातेहार। सावन माह की चौथी और अंतिम सोमवारी पर जिलेभर के शिवालयों में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। सुबह से ही मंदिरों में लंबी कतारें देखने को मिलीं, जहां भक्तों ने शिवलिंग पर जलाभिषेक कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। 'हर-हर महादेव', 'जय शिव शंकर' और 'बोल बम' के उद्घोष से पूरा वातावरण शिवमय हो उठा। पुरुष, महिलाएं और युवा भक्त केसरिया वस्त्र धारण कर, गंगाजल से भगवान शिव का अभिषेक करते हुए नजर आए। जिले के प्रमुख मंदिरों में व्यवस्था संभालने के लिए जिला प्रशासन ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए थे। पुलिस बल की तैनाती के साथ-साथ नगर पालिका द्वारा साफ-सफाई और पेयजल की भी उचित व्यवस्था की गई थी। सावन की अंतिम सोमवारी पर शिवभक्तों की आस्था और उत्साह ने पूरे जिले को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया।

बोल बम के जयघोष से गूंजा माता भद्रकाली मंदिर परिसर

- अंतिम सोमवारी पर सहस्त्र शिविलिंग पर जलाभिषेक को उमड़ी भीड़

नवीन मेल संवाददाता

इटखोरी (चतरा)। सावन मास के अंतिम सोमवारी पर विभिन्न गांव के हजारों भक्तों ने कांवर लेकर जिले के प्रसिद्ध इटखोरी अंतर्गत माता भद्रकाली मंदिर स्थित 1008 शहस्त्र शिवलिंग महादेव मंदिर में जलाभिषेक को लेकर पहुंचे। इससे पूर्व श्रद्धालुओं द्वारा माता के मंदिर में पूजा-अर्चना किया। सोमवारी के मौके श्रद्धालुओं की अत्यधिक भीड़ होने के कारण श्रद्धालुओं ने कतारबद्ध होकर शहस्त्र शिवलिंग महादेव मंदिर में जलाभिषेक करने के उपरांत माता की पूजा-अर्चना की। अंतिम सोमवारी को लेकर देर रात से ही आसपास के विभिन्न गांवों से श्रद्धालु डीजे साउण्ड के साथ नाचते गाते कांवर के साथ माता के दरबार पहुंचे और अहले शुबह नदी में डुबकी लगा कर शहस्त्र शिवलिंग का विधिपूर्वक जलाभिषेक किया। सावन सोमवारी के मौके पर कई श्रद्धालुओं ने शहस्त्र शिवलिंग महादेव मंदिर में रूद्राभिषेक भी किया। अंतिम सोमवारी पर पितिज, परोरिया, परसौनी, करनी, पथरिय, बेला, मयुरहंड, दैहर एवं चौपारण थाना क्षेत्र से भारी संख्या में श्रद्धालु कांवर लेकर भद्रकाली मंदिर परिसर स्थित शहस्त्र शिवलिंग महादेव मंदिर में जलाभिषेक किया। इस दौरान विधि व्यवस्था बनाए रखने के साथ सुरक्षा को लेकर स्थानिय पुलिस एवं मंदिर प्रबंधन के लोग मुस्तैद थे।

शिबू सोरेन के निधन पर जिला से लेकर प्रखंड़ों में शोक सभा आयोजित

नवीन मेल संवाददाता

चतरा/गिद्धौर। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के दुखद निधन पर सोमवार को जिला मुख्यालय के अलावे प्रखंड़ों में शोक सभा का आयोजन कर श्रद्धांजलि दी गई। समाहरणालय स्थित सभागार में उपायुक्त कृतिश्री जी के अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला प्रशासन के सभी वरीय पदाधिकारी एवं कर्मी उपस्थित रहे। शोक सभा की शुरूआत दो मिनट के मौन के साथ दिवंगत आत्मा की शांति हेतु की गई। उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने शिबू सोरेन द्वारा झारखंड के सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में दिए गए योगदान को स्मरण करते हुए गहरी संवेदना व्यक्त की। शोकसभा का समापन श्रद्धांजलि स्वरूप मौन प्रार्थना के साथ किया गया। वहीं गिद्धौर प्रखंड परिसर में अधिकारी व कर्मी के साथ ग्रामीण जनता ने शोकसभा का आयोजन कर दो मिनट का मौन रख दिवगंत आत्मा के शांति के लिए इश्वर से प्रार्थना की। शोक सभा अंचलाधिकारी अनंत सयनम विश्वकर्मा के नेतृत्व में किया गया। जहां कर्मचारी के साथ.दर्जनों ग्रामीण उपस्थित थे। दुसरी ओर कुंदा प्रखंड क्षेत्र के पंचायत मुख्यालयों में पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर शोक सभा का आयोजन किया गया। मुखिया भरत यादव के नेतृत्व में नवादा पंचायत भवन परिसर मे दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर जनप्रतिनिधियों ने उनके कार्यकाल को याद किया और उनके योगदान को सराहा।

बारियातू से पंद्रह कांवरियों का जत्था बाबा नगरी देवघर के लिए रवाना

नवीन मेल संवाददाता

बारियातू (लातेहार)। सावन माह की भक्ति भावना से ओतप्रोत वातावरण में बारियातू प्रखंड मुख्यालय से सोमवार को पंद्रह श्रद्धालुओं का कांवरिया जत्था बोलबम के जयघोषों के बीच देवघर के लिए रवाना हुआ। इन कांवरियों का जत्था सुरक्षित वाहन से बोधगया और राजगीर होते हुए सुल्तानगंज पहुंचेगा। वहां उत्तरवाहिनी गंगा से जल भरकर बाबा बैद्यनाथ धाम के लिए पैदल यात्रा शुरू होगी। यात्रा के पूर्व सभी कांवरियों ने बारियातू थाना परिसर स्थित शिव मंदिर में माथा टेककर भगवान भोलेनाथ से सकुशल यात्रा की कामना की। इस धार्मिक जत्था का नेतृत्व झारखंड प्रजापति (कुम्हार) महासंघ के प्रखंड सचिव सह भाजपा युवा नेता सोनू प्रजापति कर रहे हैं। सोनू प्रजापति ने जानकारी दी कि कांवरिया जत्था सुल्तानगंज से जल लेकर बैद्यनाथ धाम और फौजदारी बाबा बासुकीनाथ धाम पहुंचकर जलाभिषेक कर पुण्य अर्जित करेगा। जत्थे में विधायक प्रतिनिधि योगेंद्र गंझु, सत्येंद्र प्रजापति, लोचन यादव, रवि गंझु, महेश यादव समेत कई अन्य श्रद्धालु शामिल हैं। क्षेत्रवासियों ने कांवरियों को शुभकामनाएं और आशीर्वाद के साथ रवाना किया।

11वीं वाहिनी सीआरपीएफ का वृक्षारोपण अभियान 5000 पौधों का लक्ष्य

लातेहारद। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में 11वीं वाहिनी, सीआरपीएफ ने सराहनीय पहल करते हुए 5000 पौधों के रोपण का लक्ष्य निर्धारित किया है। अभियान की शुरुआत 5 जून 2025 को विश्व पर्यावरण दिवस पर की गई थी, और अब तक 2000 से अधिक पौधे विभिन्न क्षेत्रों में लगाए जा चुके हैं। कमांडेंट याद राम बुनकर ने कहा, "पौधे लगाना सिर्फ एक औपचारिकता नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है। जितनी महत्ता रोपण की है, उतनी ही उसकी देखभाल की भी।" आज के अभियान में किनामाड़ मुख्यालय कैंप में 600 फलदार पौधे लगाए गए। इस अवसर पर कई वरिष्ठ अधिकारी, कर्मी और उनके परिजन उपस्थित थे, जिनमें द्वितीय कमान अधिकारी पितबास पण्डा, उप कमांडेंट शोभनाथ यादव, मुकेश कुमार, निरीक्षक ललन कुमार रंजन, एवं अन्य शामिल थे।

माल्हन में झुंड से बिछड़ा जंगली हाथी, ग्रामीणों में दहशत

नवीन मेल संवाददाता

चंदवा (लातेहार)। प्रखंड क्षेत्र के माल्हन गांव के समीप सोमवार को एक झुंड से बिछड़ा जंगली हाथी चंदवा-मैकलुस्कीगंज मुख्य मार्ग पर आ धमका। हाथी ने सड़कों के किनारे लगी फसल को नुकसान पहुंचाया और फिर लोहरसी गांव की ओर चला गया, जहां उसने पेड़ से कटहल खाया। इस दृश्य को देखने बड़ी संख्या में ग्रामीण जुट गए, कई लोगों ने तस्वीरें और वीडियो भी बनाए। हाथी की मौजूदगी से भयभीत ग्रामीणों ने वन विभाग को सूचना दी। वन कर्मी आलोक तिग्गा के नेतृत्व में वन विभाग एवं पुलिस की संयुक्त टीम ने हाथी को आबादी क्षेत्र से बाहर खदेड़ा। ग्रामीणों की भीड़ को नियंत्रित कर सुरक्षित दूरी बनाए रखने की अपील की गई। यह घटना क्षेत्र में वन्यजीव-मानव संघर्ष पर फिर से ध्यान केंद्रित कर रही है।

न्यूज बॉक्स

'गुरुजी का जाना अपूरणीय क्षति' : लाल मोती नाथ शहदेव

लातेहार। पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक शिबू सोरेन के निधन पर लातेहार जिला अध्यक्ष लाल मोती नाथ शहदेव ने गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने इसे झारखंड राज्य और पार्टी के लिए अपूरणीय क्षति बताया। उन्होंने कहा, "दिशोम गुरु न केवल झारखंड आंदोलन के प्रतीक थे, बल्कि वे एक ऐसा नाम थे जो अन्याय के खिलाफ संघर्ष और सामाजिक न्याय की लड़ाई का पर्याय बन चुके थे।" शोक संदेश में बताया गया कि लातेहार से हजारों की संख्या में झामुमो कार्यकर्ता रांची पहुंचकर उन्हें अंतिम विदाई देंगे।

पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर कुंदा में श्रद्धांजलि सभा

कुंदा (चतरा)। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन से पूरे राज्य में शोक की लहर है। कुंदा प्रखंड अंतर्गत विभिन्न पंचायत मुख्यालयों में उनके सम्मान में शोक सभाओं का आयोजन किया गया। नवादा पंचायत भवन परिसर में मुखिया भरत यादव के नेतृत्व में दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर जनप्रतिनिधियों ने गुरुजी के संघर्षमय राजनीतिक जीवन को याद किया। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन ने झारखंड की आत्मा को स्वर दिया और गरीबों, आदिवासियों एवं वंचित वर्गों की आवाज को राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाया। उनका जाना केवल एक नेता का नहीं, बल्कि एक विचार का अवसान है। सभा में शामिल लोगों ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की और उनके द्वारा शुरू की गई योजनाओं को आगे बढ़ाने का संकल्प दोहराया।

पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन को सहायक शिक्षकों की श्रद्धांजलि

लातेहार। झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक और झारखंड राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर लातेहार जिले के सहायक शिक्षकों ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। मोर्चा के जिला अध्यक्ष अतुल सिंह और महासचिव अनूप कुमार ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि शिबू सोरेन ने झारखंड के निर्माण और समाज के वंचित वर्गों के उत्थान के लिए जीवनभर संघर्ष किया। उनका जाना पूरे राज्य के लिए अपूरणीय क्षति है। श्रद्धांजलि देने वालों में ऋषिकेश पाठक, बेलाल अहमद, सिंटू सिंह, विनोद तिवारी, मनोज सिंह, सूर्यदेव तिवारी, उमेश साहू, गोविन्द कुमार, अभिनय मिश्र, अरविंद कुमार, दिलीप प्रसाद, दिनेश ठाकुर, राजेश सिंह, सतपाल ओरांव, नंदकिशोर यादव, विनोद राम, प्रमोद प्रसाद, संजीत प्रसाद, शिशुपाल सिंह, नेमा अगरिया, ब्रिज किशोर यादव, सुनैना देवी, मंजू देवी, जयश्री कश्यप, बिहारी यादव, सुशीला देवी, रामप्रसाद प्रसाद समेत दर्जनों शिक्षक और ग्रामीण उपस्थित थे। सभी ने दो मिनट का मौन रखकर गुरुजी को अपनी श्रद्धांजलि दी।

पूर्व सीएम शिबू सोरेन के निधन पर लातेहार समाहरणालय में शोकसभा आयोजित

लातेहार। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर लातेहार समाहरणालय सभागार में सोमवार को शोकसभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता, उप विकास आयुक्त सैयद रियाज अहमद, आईटीडीए निदेशक प्रवीण कुमार गगराई, अपर समाहर्ता रामा रविदास समेत जिले के तमाम प्रशासनिक पदाधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। शोकसभा की शुरुआत दो मिनट के मौन के साथ हुई, जिसमें सभी ने दिवंगत नेता की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता ने अपने श्रद्धांजलि संदेश में कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन का जीवन संघर्ष, आदिवासी समाज के अधिकारों और सम्मान के लिए समर्पित रहा। उन्होंने झारखंड राज्य के गठन में निर्णायक भूमिका निभाई। उनका निधन राज्य के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

महुआडांड़ में प्रखंड कार्यालय में शोकसभा का आयोजन

महुआडांड़ (लातेहार)। पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर सोमवार को प्रखंड सह अंचल कार्यालय में एक शोकसभा आयोजित की गई। प्रखंड विकास पदाधिकारी संतोष बैठा की उपस्थिति में कर्मियों एवं ग्रामीणों ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की। बीडीओ ने कहा कि गुरुजी का जीवन संघर्ष, सेवा और आत्मबल का प्रतीक रहा है। उन्होंने अपने जीवन को झारखंड की अस्मिता, उसकी माटी और लोगों की भलाई के लिए समर्पित किया। विद्यालयों, अन्य कार्यालयों में भी श्रद्धांजलि सभाएं आयोजित की गईं, जिसमें क्षेत्रवासियों ने भाग लिया और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

चंदवा प्रखंड कार्यालय में श्रद्धांजलि सभा बीडीओ ने दी गुरुजी को अंतिम श्रद्धांजलि

चंदवा (लातेहार)। सोमवार को चंदवा प्रखंड सह अंचल कार्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में बीडीओ चंदन प्रसाद एवं कार्यालय के अन्य कर्मियों ने पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि अर्पित की। बीडीओ ने कहा, "गुरुजी का जीवन आदिवासी अस्मिता, न्याय और अधिकारों की लड़ाई का प्रतीक था।" सभा में उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया और कहा कि उनका संघर्ष हम सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत रहेगा। इस मौके पर प्रखंड कृषि पदाधिकारी मनीष कुमार पांडेय, लव कुमार पासवान, रितेश कुमार, शिव कुमार, अमित कुमार, संतोष कुमार, ग्रामीणों समेत कई लोगों ने श्रद्धांजलि दी।

लोध फॉल पर खतरे की अनदेखी पर्यटकों की भीड़ से बढ़ रही चिंता

- बंद गेट के बावजूद पर्यटक जबरन पहुंच रहे जलप्रपात तक प्रशासन मौन

नवीन मेल संवाददाता

महुआडांड़। लगातार बारिश और सुरक्षा कारणों से झारखंड का सबसे ऊंचा जलप्रपात लोध फॉल बीते एक सप्ताह से बंद है, बावजूद इसके पर्यटक खतरा मोल लेकर वहां पहुंच रहे हैं। फॉल तक जाने वाले मार्ग की रेलिंग बारिश में क्षतिग्रस्त हो चुकी है और ऊपर बना पुल भी खतरनाक स्थिति में है। पुल की रेलिंग के नीचे लगे तीन खंभे पूरी तरह टूट चुके हैं, जो कभी भी तेज बहाव में बह सकते हैं।

हालांकि मुख्य प्रवेश द्वार पर चेन लगाकर फॉल को बंद कर दिया गया है, फिर भी पर्यटक गेट के किनारे से होकर जबरदस्ती फॉल तक जा रहे हैं। हर दिन सैकड़ों की संख्या में वाहन फॉल के पास पहुंच रहे हैं, जिससे सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

वन विभाग के अंतर्गत आने वाली इको विकास समिति और पर्यटक मित्र जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। समिति द्वारा गेट पर नोटिस लगाया गया है, जिसमें स्पष्ट लिखा गया है कि कोई हादसा होने की स्थिति में पर्यटक स्वयं जिम्मेदार होंगे। पर्यटक मित्रों का कहना है कि वे बार-बार लोगों को रोकने की कोशिश करते हैं, लेकिन पर्यटक जबरदस्ती फॉल की ओर बढ़ जाते हैं। लगातार हो रही बारिश से नदी का बहाव तेज है और रास्ते अत्यंत फिसलनभरे हो चुके हैं। यह स्थिति किसी बड़ी दुर्घटना को आमंत्रण दे रही है। हालांकि सोमवार से टूटे हुए रेलिंग की मरम्मत का काम शुरू हो गया है। इको विकास समिति और वन विभाग द्वारा कहा गया है कि जैसे ही मरम्मत कार्य पूरा होगा, लोध फॉल को पर्यटकों के लिए पुनः खोल दिया जाएगा। तब तक सुरक्षा नियमों का पालन करना सभी के लिए अनिवार्य है।

संत जॉन वियानी पर्व गोठगांव में श्रद्धा व उल्लास से मनाया गया

- रंगारंग कार्यक्रमों के साथ मिस्सा पूजा, प्रेरणादायक प्रवचन ने मोहा मन

नवीन मेल संवाददाता

महुआडांड़। पवित्र परिवार पल्ली गोठगांव में रविवार को संत जॉन मेरी वियानी का पर्व अत्यंत श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य अनुष्ठान फा. अशोक नगेसिया की अगुवाई में संपन्न हुआ, जिसमें फा. मनोरंजन कच्छप और फा. बलबीर टोप्पो भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रवचन में फा. अशोक ने कहा कि संत वियानी का जीवन संघर्ष, सेवा और आत्मत्याग का प्रतीक रहा है। उन्होंने युवाओं और बच्चों से कहा कि कमजोरियों को त्यागकर अच्छाई की राह अपनाना ही सच्ची श्रद्धा है।

मिस्सा पूजा के बाद बच्चों और युवाओं द्वारा रंगारंग गीत और नृत्य प्रस्तुत किए गए, जिससे माहौल उल्लासमय हो गया। सभी फादरों और ब्रदर्स को श्रद्धालुओं ने हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

उधर, संत जेवियर्स एकेडमी, रामपुर में भी फा. बरथोलिमी टोप्पो और प्राचार्य सिस्टर शशि की उपस्थिति में मिस्सा पूजा का आयोजन हुआ। इसके पश्चात रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

सावन की अंतिम सोमवारी पर शिवालयों में उमड़ा जनसैलाब

नवीन मेल संवाददाता

भंडरा/लोहरदगा। सावन की अंतिम सोमवारी को लेकर प्रखंड के प्रमुख शिवालयों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। अखिलेश्वर धाम, कसपुर, नकटी महादेव व चट्टी के शिवालयों में दिनभर हर-हर महादेव के जयघोष गूंजते रहे। भक्तों ने बेलपत्र, धतूरा, भांग, दूध आदि अर्पित कर शिवलिंग पर जलाभिषेक किया। महिलाओं ने खास श्रृंगार के साथ पूजा-अर्चना की। पुजारी भजन शर्मा ने बताया कि अंतिम सोमवारी का विशेष महत्व है। इस दिन का व्रत करने से आर्थिक संकट दूर होते हैं और भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त होती है। छत्तीसगढ़ के शिव भक्तों ने खीर-पूड़ी और सब्जी का भंडारा आयोजित किया। अजित अग्रवाल समेत स्थानीय भक्तों ने 101 किलो दूध से बनी खीर श्रद्धालुओं के बीच वितरित की।

लोहरदगा पुलिस को बड़ी सफलता : वांछित अपराधी अरुण उरांव उर्फ लैला गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। जिले की सक्रिय पुलिस टीम ने एक और बड़ी सफलता अर्जित करते हुए लंबे समय से फरार चल रहे कुख्यात अपराधी अरुण उरांव उर्फ लैला (उम्र 21 वर्ष) को गिरफ्तार कर लिया। यह गिरफ्तारी रविवार शाम मैना बगीचा क्षेत्र से की गई। आरोपी बीते 24 जून को जुरिया रोड स्थित एक घर में हुई चोरी की घटना में शामिल था। पुलिस ने घटना के तत्काल बाद दो अन्य आरोपियों – संतोष उरांव और जीतराम उरांव को मौके से गिरफ्तार कर लिया था, जिनके पास से देशी कट्टा, मोटरसाइकिल, जनरेटर और पिकअप वैन बरामद हुए थे।

तीन अन्य आरोपी फरार थे, जिनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस लगातार छापेमारी कर रही थी। थाना प्रभारी रत्नेश मोहन ठाकुर के नेतृत्व में बनी विशेष टीम ने 3 अगस्त को शाम 7:30 बजे अरुण को धर दबोचा। पूछताछ के क्रम में उसकी निशानदेही पर चोरी की गई एक पैशन प्रो मोटरसाइकिल भी बरामद की गई। पुलिस अधीक्षक सादिक अनवर रिज़वी ने कहा कि यह गिरफ्तारी अपराध नियंत्रण की दिशा में एक अहम कदम है। अरुण उरांव पर रांची, लोहरदगा, टाटीसिलवे, बेड़ो, चतरा और लापुंग थानों में दर्जनों मामले दर्ज हैं, जिनमें चोरी, लूट, हथियार तस्करी और धोखाधड़ी शामिल हैं।

गिरफ्तारी में शामिल टीम में थाना प्रभारी रत्नेश मोहन ठाकुर, पु.अ.नि. रवि रंजन कुमार, रमेश कुमार सिंह, स.अ.नि. रमेश तिवारी, अमरनाथ पांडेय, चंद्रदीप मेहता, चा.पु. मुकेश कुमार शर्मा , सत्यकिशोर कुमार शामिल रहे।

न्यूज बॉक्स

झामुमो प्रखंड अध्यक्ष परवेज अंसारी की श्रद्धांजलि

भंडरा। झामुमो प्रखंड अध्यक्ष परवेज अंसारी ने कहा कि दिशोम गुरु का जीवन राष्ट्रवाद, पारदर्शिता और सेवा भावना की मिसाल है। उन्होंने झारखंड को नयी दिशा दी और राजनीतिक ईमानदारी की एक अमिट छवि छोड़ी। बिशुनपुर विधायक प्रतिनिधि बिट्ठु उरांव, जिला उपाध्यक्ष तिवारी उरांव, पूर्व जिला परिषद सदस्य श्याम उरांव, अल्पसंख्यक जिला उपाध्यक्ष नसीम मिरदाहा समेत दर्जनों वरिष्ठ जन उपस्थित रहे।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर शोक की लहर

लोहरदगा। झारखंड आंदोलन के महानायक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर पूर्व राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू ने गहरा शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन जी ने जनहित, सामाजिक न्याय और आदिवासी अस्मिता की रक्षा के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उनका संघर्ष आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।" जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से अध्यक्ष सुखैर भगत की अध्यक्षता में एक शोकसभा आयोजित की गई, जिसमें दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई।

शिबू सोरेन के निधन पर तीन दिन का राजकीय शोक घोषित

लोहरदगा। झारखंड सरकार ने पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर तीन दिन का राजकीय शोक घोषित किया है। सरकार के आदेशानुसार 4 अगस्त से 6 अगस्त तक राज्य के सभी भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा और किसी भी प्रकार के राजकीय समारोह का आयोजन नहीं किया जाएगा। साथ ही 4 और 5 अगस्त को राज्य सरकार के सभी कार्यालय बंद रहेंगे। उक्त आदेश के अनुपालन में उपायुक्त लोहरदगा ने जिले के सभी कार्यालय प्रमुखों को निर्देशित किया है कि वे सभी बिंदुओं का अक्षरशः पालन सुनिश्चित करें।

समाहरणालय में दिशोम गुरु को दी गई मौन श्रद्धांजलि

लोहरदगा। पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड आंदोलन के प्रणेता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर जिला समाहरणालय परिसर में शोकसभा का आयोजन किया गया। इस दौरान अधिकारियों और कर्मियों ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी और उनके चित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया। उपस्थित अधिकारियों ने दिशोम गुरु के संघर्षमय जीवन और झारखंड राज्य निर्माण में उनके योगदान को स्मरण किया।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन व पत्रकार हरिनारायण सिंह के निधन पर भाजपा ने जताया शोक

लोहरदगा। पूर्व मुख्यमंत्री एवं झारखंड आंदोलन के अग्रणी नेता दिशोम गुरु शिबू सोरेन तथा वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण सिंह के निधन पर भाजपा लोहरदगा जिला इकाई ने गहरा शोक जताया है। पार्टी ने दिवंगत आत्मा की शांति और शोक संतप्त परिजनों को धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की। शोक व्यक्त करने वालों में जिला अध्यक्ष मनीर उराँव, समीर उराँव, सुदर्शन भगत, प्रवीण सिंह, ओम प्रकाश सिंह, श्रीचंद्र प्रजापति, राजकिशोर महतो, अजात शत्रु, राजमोहन राम, विनोद राय, रिपुसूदन साहू, हर्षनाथ महतो, अजय मित्तल, देवाशीष कार, राजकुमार वर्मा, राजेश महतो, संजय कुमार, मिथुन तमेड़ा, मीणा बाखला, कैलाश महतो, विमलकांत सिंह, विश्वजीत सहदेव, भारती सिन्हा, संगीता कुमारी, निधि प्रसाद, विवेक चौहान, अमरेश भारती, राजू शर्मा, धनंजय तिवारी, बजरंग करूवा, अशोक कास्यकार, लालू सिंह समेत सैकड़ों कार्यकर्ता शामिल हैं।

हमने एक बेहतर संघर्षशील साथी खो दिया : डॉ. रामेश्वर उरांव

लोहरदगा। झारखंड आंदोलन के जनक और दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त करते हुए पूर्व मंत्री सह विधायक डॉ. रामेश्वर उरांव ने कहा कि यह खबर अत्यंत दुखद और हृदयविदारक है। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन के जाने से न केवल झारखंड, बल्कि पूरे देश ने एक महान नेता, आदिवासी अस्मिता के प्रतीक और झारखंड आंदोलन के प्रेरणास्रोत को खो दिया है। डॉ. उरांव ने कहा, "हमने साथ रह कर कई कार्य किए और नए आयामों को प्राप्त किया। उनका संघर्ष, समर्पण और जनसेवा का योगदान हमेशा अमर रहेगा।" उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति और परिजनों को इस दुख की घड़ी में शक्ति देने की प्रार्थना की।

दिशोम गुरु झारखडियों के राजनीतिक गुरु थे, इनकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती : अजातशत्रु

लोहरदगा। दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन की सूचना मिलते ही भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष अजातशत्रु द्वारा लोहरदगा के मिलन चौक स्थित टाइनी टास्क विद्यालय परिसर में शोक सभा आयोजित की गई। सभा में वरिष्ठ भाजपा नेता ओमप्रकाश सिंह ने उनके संघर्षपूर्ण जीवन की चर्चा करते हुए कहा कि शिबू सोरेन ने बिहार, बंगाल, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ के आदिवासी समाज में राजनीतिक चेतना जगाई। उन्होंने बताया कि शिबू सोरेन तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री, तीन बार दुमका से सांसद, केंद्र सरकार में कोयला मंत्री और आठ बार राज्यसभा सांसद रहे। अजातशत्रु ने कहा, "उनका जीवन सादा लेकिन विचार उच्च थे। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर झारखंड और देश के हित में कार्य करना चाहिए।

सावन की अंतिम सोमवारी पर हर-हर महादेव से गूंजे शिवालय

- महादेव मंडा धाम में उमड़े श्रद्धालु, भजन-कीर्तन और पूजन का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

कुडू (लोहरदगा)। सावन की अंतिम सोमवारी को कुडू प्रखंड सहित पूरे क्षेत्र के शिवालयों में श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा। महादेव मंडा धाम सलगी, टीको मंदिर, बड़की चाँपि, टाटी शिव मंदिर, कुडू ब्लॉक परिसर, तान पहाड़ी और अन्य शिवालयों में भक्तों ने बेलपत्र, दूध, गंगाजल आदि अर्पित कर भोलेनाथ की पूजा की। दिनभर भजन-कीर्तन का आयोजन हुआ और प्रसाद वितरण किया गया। बड़की चाँपि पंचायत की उपमुखिया हेना तिवारी ने विधिवत पूजन कर क्षेत्र की सुख-समृद्धि की कामना की। सुरक्षा व्यवस्था भी चाक-चौबंद रही। महादेव मंडा धाम में एएसआई सुनील कुमार सिन्हा सहित कई सुरक्षाकर्मी तैनात रहे। कार्यक्रम में पुरोहित कुनु नाथ बैध, मनोज दुबे, मिथलेश सिंह, प्रवीण गोयल, दीपक अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

सुंदरी देवी सरस्वती शिशु मंदिर में अभिभावक गोष्ठी आयोजित

शिक्षा और विश्वास के बीच पुल है अभिभावक संवाद : महेंद्र मिश्रा

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। सुंदरी देवी सरस्वती शिशु मंदिर, लोहरदगा में कक्षा अरुण उदय और प्रभात के बच्चों के लिए अभिभावक गोष्ठी आयोजित की गई। इस अवसर पर भैया-बहनों की शैक्षणिक प्रगति, अनुशासन और समग्र विकास पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रभारी प्रधानाचार्य महेंद्र कुमार मिश्रा और अभिभावक प्रतिनिधियों द्वारा दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन से हुई। सुश्री सुनीता कुमारी ने विद्यालय की गतिविधियों, पाठ्यक्रम, अनुशासन व आगामी योजनाओं की जानकारी दी।

अभिभावकों ने खुलकर विचार साझा किए और विद्यालय प्रबंधन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। सुझाव भी दिए गए जिससे विद्यालय बच्चों के विकास में और प्रभावी योगदान दे सके। लक्ष्मी देवी सहित कई शिक्षक और अभिभावक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन 'वंदे मातरम्' के साथ हुआ।

निःशुल्क निःसंतानता परामर्श शिविर 6 अगस्त को

लोहरदगा। सनराइज हॉस्पिटल, नई रोड एमआर मार्केट, पटेल भवन के पास (कटहल पेड़ के बगल) में 6 अगस्त 2025, बुधवार को निःशुल्क निःसंतानता परामर्श शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर देश की प्रसिद्ध स्त्री एवं आईवीएफ विशेषज्ञ डॉ. जया भट्टाचार्य (एमबीबीएस, स्त्री रोग एवं निःसंतानता विशेषज्ञ) के मार्गदर्शन में संपन्न होगा।

हॉस्पिटल के संचालक विकास अग्रवाल ने बताया कि यह एकदिवसीय शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक चलेगा। जो महिलाएं लंबे समय से संतान सुख से वंचित हैं, वे इस विशेष शिविर में आकर विशेषज्ञ से निःशुल्क परामर्श प्राप्त कर सकती हैं। सभी इच्छुक महिलाएं समय पर पहुंचकर इस अवसर का लाभ उठाएं।

कैरो में युवक ने की आत्महत्या, गांव में छाया शोक

कैरो/लोहरदगा। कैरो थाना क्षेत्र अंतर्गत एड़ादोन गांव में रविवार शाम एक हृदयविदारक घटना सामने आई, जहां दीपक राम (35 वर्ष), पिता कमल राम उर्फ महरन, ने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना के समय दीपक घर में अकेला था। बच्चों के घर लौटने पर जब उन्होंने पिता को फंदे से लटका देखा, तो चीख-पुकार मच गई। ग्रामीणों ने तत्परता दिखाते हुए शव को नीचे उतारा और पुलिस को सूचना दी। शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा गया है। परिजनों और ग्रामीणों के अनुसार मृतक नशे का आदी था और लंबे समय से मानसिक तनाव में था। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। दीपक अपने पीछे पत्नी और तीन छोटे बच्चों को छोड़ गया है। घटना से पूरे गांव में शोक का माहौल है।

भड़गांव पंचायत में पुलिया निर्माण में गड़बड़ी, मुखिया और सचिव को नोटिस

नवीन मेल संवाददाता

सेन्हा/लोहरदगा। भड़गांव पंचायत में 15वें वित्त आयोग की योजना संख्या 01/2024-25 के अंतर्गत आरसीसी पुलिया निर्माण में अनियमितता का मामला सामने आया है। प्रखंड विकास पदाधिकारी संग्राम मुर्मू ने पंचायत मुखिया और पूर्व पंचायत सचिव को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। इस योजना के तहत 1,08,100 की लागत से पुलिया निर्माण स्वीकृत हुआ था, परंतु मापी पुस्तिका में 59,650 की राशि ही अंकित है। इसके बावजूद लाभुक समिति को 75,000 का भुगतान कर दिया गया – वह भी बिना किसी वैध फंड ट्रांसफर आदेश के। पूर्व की योजनाओं में भी गड़बड़ीः योजना संख्या 04/2023-24 में भी महादेव उरांव के घर के पास अधूरे पैरापेट निर्माण का मामला सामने आया था। प्रशासन ने चेतावनी दी है कि यदि जवाब असंतोषजनक पाया गया, तो वरीय अधिकारियों को आगे की विभागीय कार्रवाई हेतु प्रस्ताव भेजा जाएगा।

नारी सम्मान ग्रुप ने हर्षोल्लास के साथ सावन महोत्सव का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। सावन के पावन अवसर पर नारी सम्मान ग्रुप द्वारा होटल अमृत पैलेस में भव्य सावन महोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लोहरदगा की विभिन्न क्षेत्रों की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन एवं गणेश वंदना के साथ हुई। इसके पश्चात समूह की महिलाओं ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं।

सावन के लोकगीतों पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत करते हुए महिलाओं ने अपनी कला और संस्कृति का अनूठा प्रदर्शन किया। ग्रुप की अध्यक्ष रचना रॉय ने सावन के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह महीना शिव भक्ति, रंगों और श्रृंगार का प्रतीक है। इस मौके पर वनवासी कल्याण केंद्र की नगर अध्यक्ष सुमन राय, रीता अग्रवाल व लक्ष्मी अग्रवाल ने ग्रुप की अध्यक्ष रचना रॉय को क्राउन पहनाकर सम्मानित किया। उन्होंने समूह की सक्रियता की सराहना करते हुए कहा कि कठिन परिस्थितियों में भी ऐसे आयोजन महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में प्रेरणास्रोत हैं। रचना राय, रिमझिम पांडे, आकांक्षा पाठक, रचना पाठक, अनु अग्रवाल, मंजू सोनी, संगीता प्रजापति, संगीता गुप्ता, मुक्ता पांडे, विनीत वर्मा, नवनीता विश्वकर्मा, प्रेरणा खत्री, रुना पाठक, लक्ष्मी देवी, प्रीति, सुंदर कला समेत कई महिलाएं मौजूद रहीं।

उद्घाटन की प्रतीक्षा में अस्पताल जर्जर, जनता आज भी स्वास्थ्य सेवाओं को तरस रही

कई सरकारें आईं-गईं, लेकिन कैरो की समस्याएं जस की तस

- कैरो की किस्मत पर ताले, वादे तो हुए पर विकास नहीं

शकील अहमद

कैरो/लोहरदगा। झारखंड में सरकारें बदलीं, सत्ता के रंग बदले, लेकिन लोहरदगा जिला अंतर्गत कैरो प्रखंड की तस्वीर नहीं बदली। कैरो की समस्याएं आज भी वहीं की वहीं हैं, जैसे दशकों पहले थीं।

वर्ष 2014 से 2019 तक डबल इंजन की सरकार रही। इसके बाद महागठबंधन की सरकार भी बनी। लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र से निर्वाचित सांसद केंद्रीय मंत्री बने और विधायक झारखंड सरकार में वित्त मंत्री की कुर्सी पर बैठे। इसके बावजूद कैरो प्रखंड की मूलभूत आवश्यकताओं पर कोई ठोस कार्य नहीं हुआ।

सबसे बड़ा उदाहरण प्रखंड मुख्यालय के समीप करोड़ों की लागत से निर्मित अतिरिक्त अस्पताल भवन है, जो 2014 में बनकर तैयार हो गया था, लेकिन न उद्घाटन हुआ, न सेवाएं शुरू हुईं।

न उद्घाटन हुआ, न सेवा शुरू हुई

अस्पताल भवन वर्षों से महज एक राजनीतिक घोषणाओं और झूठे वादों का प्रतीक बना हुआ है। देखरेख के अभाव में यह आधुनिक भवन अब जर्जर हो चुका है। स्थानीय लोग बताते हैं कि स्वास्थ्य सुविधा के नाम पर उन्हें आज भी लोहरदगा या रांची का रुख करना पड़ता है। जनप्रतिनिधियों की चुप्पी और सरकारी तंत्र की निष्क्रियता पर अब जनता सवाल उठा रही है–"आखिर कब खुलेगा अस्पताल?"

सरकारी वादों का 'दम' टूटा, जनता की उम्मीदें टूटीं : महताब आलम

लोहरदगा। मौलाना आज़ाद वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष महताब आलम ने कहा कि वर्ष 2014 में करोड़ों की लागत से बने अस्पताल भवन ने कैरोवासियों में एक नई आशा जगाई थी। लोगों को लगा कि अब इलाज के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा, डॉक्टर रहेंगे और समय पर इलाज मिलेगा। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण यह रहा कि उद्घाटन से पहले ही अस्पताल दम तोड़ गया। यह सरकारी पैसे की बर्बादी का सबसे कड़वा उदाहरण बन चुका है। कई बार प्रखंडवासी सभी दलों के सांसद और विधायकों से गुहार लगा चुके हैं, पर हर बार उन्हें सिर्फ आश्वासन मिला। जनता अब जवाब चाहती है, वादों की नहीं, काम की राजनीति देखना चाहती है।

15 साल बाद भी कैरो की चिकित्सा व्यवस्था सिर्फ प्राथमिक स्तर पर टिकी : अमित यादव

लोहरदगा। कैरो प्रखंड बने 15 वर्षों से अधिक हो चुके हैं, फिर भी यहां की चिकित्सा व्यवस्था केवल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के भरोसे है। यहां के लोगों को बेहतर इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कुडू जाना पड़ता है। स्थानीय लोगों की मांग है कि कैरो को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का दर्जा दिया जाए, और जो अस्पताल भवन वर्षों से बंद पड़ा है, उसकी मरम्मत कर उसे चालू किया जाए। इससे हजारों लोगों को राहत मिलेगी और सरकारी योजनाओं का सार्थक परिणाम सामने आएगा।

घोषणाएं होती रहीं, पर उद्घाटन नहीं : विनोद रविदास

लोहरदगा। डबल इंजन की सरकार हो या वर्तमान महागठबंधन की, दोनों ही सरकारें जनकल्याण के प्रति संवेदनहीन रहीं। सरकारें शिलान्यास तो कर देती हैं, लेकिन उद्घाटन के नाम पर सिर्फ कागजों में योजनाएं पूरी होती हैं। आईटीआई भवन, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और पेयजल की समस्या आज भी जस की तस है। जनता तकनीकी शिक्षा, स्वास्थ सुविधा और शुद्ध पेयजल जैसी मूलभूत जरूरतों के लिए दर-दर भटक रही है। और करोड़ों की लागत से बना भवन अब अंतिम सांसे गिन रहा है। यह सब कुछ सरकारी तंत्र की असंवेदनशीलता और जिम्मेदारियों से भागने का जीता-जागता उदाहरण है।

झारखंड को दिल्ली-बिहार नहीं, झारखंडी सोच चाहिए : मजुल

लोहरदगा। जेएलकेएम नेता मजुल अंसारी ने तीखा बयान देते हुए कहा कि लोगों को यह समझना होगा कि दिल्ली से जन्मी पार्टियां झारखंड की भलाई नहीं सोचतीं, वे सिर्फ झारखंड का खजाना लूटने आई हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार झारखंड में जरूर बनी है, लेकिन यदि इसके नीति-निर्धारक दिल्ली, छत्तीसगढ़ और बंगाल से हैं तो वे झारखंड के नहीं, अपने राज्य के हित में सोचेंगे। उन्होंने जनता से आह्वान किया कि यदि सच में झारखंड को उसके अधिकार, पहचान और विकास दिलाना है तो झारखंडी नेतृत्व को मजबूती दें। तभी वह सपना साकार होगा, जिसके लिए यह राज्य अलग बना था।

नारी शक्ति के उत्सव में सजी सावन की रंगीन शाम

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। नारी सम्मान ग्रुप द्वारा होटल अमृत पैलेस में सावन महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें लोहरदगा की विभिन्न क्षेत्रों से आई महिलाओं ने हर्षोल्लास के साथ भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं गणेश वंदना के साथ हुआ। इसके पश्चात समूह की महिलाओं ने पारंपरिक परिधानों में रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देकर समां बाँध दिया।

अध्यक्ष रचना रॉय ने सावन की धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा, "सावन शिव भक्ति और श्रृंगार का महीना है। हर रंग का विशेष अर्थ होता है, जो भगवान शिव को अर्पित किया जाता है।" कार्यक्रम में वनवासी कल्याण केंद्र नगर समिति की अध्यक्ष सुमन राय, रीता अग्रवाल और लक्ष्मी अग्रवाल ने रचना रॉय समेत समूह की सभी महिलाओं को क्राउन पहनाकर सम्मानित किया।

महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि विषम परिस्थितियों में भी आपका सामूहिक प्रयास समाज के लिए मिसाल है। कार्यक्रम में रिमझिम पांडे, आकांक्षा पाठक, रचना पाठक, अनु अग्रवाल, मंजू सोनी, समेत कई महिलाएं मौजूद थीं।

सुप्रभात

विचार प्रवाह

अगर मैं एक दरवाज़े से नहीं निकल पाया, तो मैं दूसरे दरवाज़े से निकल जाऊंगा या फिर एक दरवाज़ा बना लूंगा। चाहे वर्तमान कितना भी अंधकारमय क्यों न हो, कुछ शानदार ज़रूर होगा। - **रवींद्रनाथ टैगोर जी**

संपादकीय

झारखंड के लिए कठिन राह चुनने वाले गुरूजी

बचपन में पिता सोबरन सोरेन की हत्या सूदखोर महाजनों शोषकों के हाथों देखने के बाद बालक शिबू के सामने दो ही रास्ते थे पहला जैसा पहले से चल रहा चलने दिया जाए या दूसरा उसके विरुद्ध खाद हुआ जाए। उन्होंने दूसरा कठिन रास्ता ही चुना और आदिवासी मूलवासियों के गुरूजी बने। बिहार के शोषण से मुक्ति और ओडिशा और बंगाल के झारखंड से लगे कुछ भूभाग को मिलाकर वृहद् झारखंड बनाना चाहते थे। बिहार से अलग होकर झारखंड राज्य बनने की लंबी लड़ाई के नायक और झारखंड आंदोलन के प्रतीक पुरुष शिबू सोरेन 'गुरु जी' के निधन से पूरे झारखंड में शोक की लहर है। उन्हें जानने वाले लोग आज उनके जीवन, संघर्ष और झारखंड आंदोलन में उनके योगदान को याद कर भावुक हो रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन ने कहा कि गुरु जी झारखंड के आदिवासियों के दिल में बसते थे। उन्होंने जिन मुद्दों को लेकर संघर्ष किया, वे आज भी झारखंड के विकास से सीधे जुड़े हैं। भाजपा ने इस क्षेत्र को 'वनांचल' कहा और आंदोलन चलाया क्योंकि यहां घने जंगल, आदिवासी बहुल जनसंख्या और अपार खनिज संपदा है। लेकिन शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, उद्योग जैसे बुनियादी ढांचों की भारी कमी थी। बाहरी लोग संसाधनों का दोहन कर रहे थे और स्थानीय लोग उपेक्षित थे। इसी शोषण के खिलाफ अलग राज्य की मांग ने जोर पकड़ा और 1970-80 के दशक में इसे एक व्यापक जनांदोलन का स्वरूप मिला। आंदोलन के प्रमुख चेहरे शिबू सोरेन बने, जिन्हें प्यार से 'दिशोम गुरु' कहा गया। उन्होंने 1972 में झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की स्थापना की और आदिवासी अधिकारों के लिए निर्णायक लड़ाई शुरू की। गुरु जी ने कोयला खदानों में बंधुआ मजदूरी और महजनी प्रथा खत्म कराने के लिए व्यापक आंदोलन किया। श्रमिकों को उनका हक दिलाने के लिए संघर्ष किया और झारखंड की आवाज दिल्ली तक पहुंचाई। उनकी नेतृत्व क्षमता, दूरदृष्टि और संघर्ष ने झारखंड आंदोलन को राष्ट्रीय पहचान दिलाई, जिसका परिणाम 15 नवंबर 2000 को झारखंड राज्य के गठन के रूप में सामने आया। झामुमो विधायक मथुरा महतो, पूर्व मंत्री बैद्यनाथ राम और कांग्रेस नेता केएन त्रिपाठी का कहना है कि अलग राज्य बनने के बाद झारखंड को कई अहम फायदे हुए। राज्य को अपनी खनिज संपदा पर सीधा अधिकार मिला। कोयला, लोहा, बॉक्साइट और यूरेनियम जैसे खनिजों से मिलने वाली रॉयल्टी अब राज्य सरकार को मिलने लगी, जिससे आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ा। उनके अनुसार, प्रशासनिक स्तर पर भी झारखंड को स्वतंत्रता मिली। अब राज्य अपनी योजनाएं, बजट और नीतियां स्वयं तय कर सकता है। सड़क, पुल, बिजली परियोजनाएं और शिक्षण संस्थानों की स्थापना में तेजी आई। साथ ही, आदिवासी संस्कृति, भाषाओं और परंपराओं को संरक्षित करने के लिए विशेष योजनाएं बनीं। खनन, उद्योग और सरकारी नौकरियों में स्थानीय युवाओं को प्राथमिकता दी गई। झामुमो नेताओं के अनुसार, जब नए राज्य का नाम तय किया जा रहा था, तब केंद्र सरकार की ओर से इसे 'वनांचल' नाम देने का प्रस्ताव था। लेकिन शिबू सोरेन इस नाम के सख्त खिलाफ थे। उनका स्पष्ट कहना था कि यह क्षेत्र सिर्फ जंगल नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से समृद्ध है। इसलिए इसका नाम 'झारखंड' ही होना चाहिए। अंततः उनकी दृढ़ता के आगे सभी को झुकना पड़ा और राज्य का नाम झारखंड रखा गया।

झारखंड राज्य बनने की लंबी लड़ाई के नायक और झारखंड आंदोलन के प्रतीक पुरुष 'गुरु जी' के निधन से पूरे राज्य में शोक की लहर है।

पीएम-किसान : किसानों के सशक्तिकरण के रूपांतरण का भारत का वैश्विक खाका

समावेशी विकास और ग्रामीण समृद्धि के सफर में, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना, भारत सरकार की एक अग्रणी पहल के रूप में उभर कर सामने आई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 24 फरवरी 2019 को शुरू की गई, इस पहल ने लाखों छोटे एवं सीमांत किसानों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है और पूरी तरह से डिजिटल, कुशल एवं पारदर्शी प्रणाली के जरिए प्रत्यक्ष आय सहायता प्रदान करने के एक वैश्विक मॉडल के रूप में खुद को स्थापित किया है।

प्रत्यक्ष समर्थन के जरिए किसानों का सशक्तिकरण

मूल रूप से, पीएम-किसान योजना पात्र किसान परिवारों को प्रतिवर्ष 6,000 रुपये की सहायता प्रदान करती है। यह सहायता राशि प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) प्रणाली के जरिए 2,000 रुपये की तीन बराबर किस्तों में सीधे उनके बैंक खातों में जमा की जाती है। इस सुव्यवस्थित एवं तकनीक-संचालित कदम से बिचौलियों की भूमिका, लाभ मिलने में होने वाली देरी और त्रुटि की गुंजाइश खत्म होती है और एक-एक पाई इच्छित लाभार्थी तक पहुंचना सुनिश्चित होता है। इस योजना की शुरुआत से लेकर अब-तक, कुल 3.69 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि किसानों को हस्तांतरित की जा चुकी है। इस प्रकार, पीएम-किसान दुनिया के सबसे बड़े डिजिटल रूप से क्रियान्वित नकद हस्तांतरण कार्यक्रमों में से एक बन गया है। आंकड़ों से परे, यह कदम सब्सिडी से हटकर सशक्तिकरण की दिशा में बढ़ने संबंधी एक बदलाव का प्रतीक है। बात चाहे बीज की हो या उपकरण या शिक्षा या फिर स्वास्थ्य की, इस योजना से किसानों को यह तय करने की आजादी मिलती है कि वे इस सहायता का सबसे बेहतर इस्तेमाल कैसे करें।

भारत के छोटे किसानों के हित में एक परिवर्तनकारी कदम

दो हेक्टेयर से कम जमीन वाले भारत के 85 प्रतिशत से अधिक किसानों के लिए ये लाभ बुवाई या कटाई के मौसम में एक अहम आर्थिक सेतु का काम करते हैं। ये लाभ अल्पकालिक नकदी प्रवाह के तनाव को कम करते हैं, अनौपचारिक ऋण पर निर्भरता में कमी लाते हैं और संकट के समय एक सुरक्षा कवच प्रदान करते हैं। वित्तीय सहायता से कहीं बढ़कर, पीएम-किसान योजना समावेशिता, सम्मान और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में एक भागीदार के रूप में किसान की मान्यता का प्रतीक है।

डिजिटल शासन की श्रेष्ठता

पीएम-किसान की सफलता का श्रेय भारत के मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचे को जाता है। जेएएम की तिकड़ी - जन धन बैंक खाते, आधार बायोमेट्रिक पहचान और मोबाइल कनेक्टिविटी - ने बड़े पैमाने पर लाभ के निर्बाध वितरण को संभव बनाया है। स्व-पंजीकरण से लेकर भूमि स्वामित्व के सत्यापन और डीबीटी द्वारा समर्थ भुगतान तक, इस पूरी योजना का जीवनचक्र डिजिटल है।

राज्य सरकारों के सहयोग से, पीएम-किसान डिजिटल रूप से समन्वित तथा एक छोर से दूसरे छोर तक आसानी से पहुंचने वाले शासन के एक बेहतरीन मॉडल के रूप में कार्य करता है। इसने विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में भूमि अभिलेखों, लाभार्थियों के डेटाबेस और भुगतान प्रणालियों को सफलतापूर्वक समन्वित किया है और इससे दुनिया के किसी भी अन्य देश की तुलना में किसान-केन्द्रित एक उत्तम संरचना का निर्माण हुआ है।

पीएम किसान ने कृषि से जुड़े इकोसिस्टम में किसान ई-मित्र वॉयस-आधारित चैटबॉट और एग्री स्टैक जैसी नवीन परियोजनाओं को भी प्रेरित किया है। एग्रीस्टैक व्यक्तिगत, समय पर और पारदर्शी सेवाएं प्रदान करने के लिए तैयार है, जिससे भारतीय कृषि भविष्य की जरूरतों के अनुरूप तैयार हो सके।

आज की बात

प्रमोद मेहरदा
अतिरिक्त सचिव
भारत सरकार

अरिंदम मोदक
सलाहकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

वैश्विक मानकों की स्थापना

दुनिया भर में, प्रत्यक्ष लाभ कार्यक्रमों को गरीबी उन्मूलन के कारगर साधनों के रूप में तेजी से मान्यता मिल रही है। फिर भी, पीएम-किसान की कुछ अनूठी विशेषताएं हैं-इसका विशाल आकार, गति और डिजिटल विश्वसनीयता इसे बिखरी हुई कृषि सहायता प्रणालियों में सुधार के लिए प्रयासरत देशों के लिए एक अनुकरणीय मॉडल बनाती है। आईएफपीआरआई, एफएओ, आईसीएआर और आईसीआरआईएसएटी जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने छोटे किसानों की आय बढ़ाने, ऋण की सुलभता में सुधार, असमानता को कम करने और आधुनिक कार्यप्रणालियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने की दिशा में पीएम किसान की भूमिका पर प्रकाश डाला है। कई देशों में जारी सशर्त हस्तांतरण के उलट, इसका विश्वास-आधारित व बिना शर्त वाला दृष्टिकोण, सहभागी एवं सम्मान-आधारित कल्याणकारी वितरण की दिशा में एक बड़ी छलांग है।

ग्रामीण विकास को गति देना

पीएम-किसान का सकारात्मक प्रभाव केवल व्यक्तिगत लाभार्थियों तक ही सीमित नहीं है। इसके तहत होने वाले अनुमानित नकदी प्रवाह ने ग्रामीण बाजारों को पुनर्जीवित किया है, कृषि-उत्पादों की मांग को प्रोत्साहित किया है और घरेलू उपभोग के पैटर्न को मजबूत किया है। इसने महिलाओं को सशक्त बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, खासकर उन मामलों में जहां बैंक खाते संयुक्त रूप से खोले जाते हैं। इसके अलावा, यह एक समग्र और परस्पर संबद्ध ग्रामीण विकास इकोसिस्टम का निर्माण करके मृदा स्वास्थ्य कार्ड, किसान क्रेडिट कार्ड, पीएम फसल बीमा योजना और ई-नाम जैसी अन्य प्रमुख योजनाओं का पूरक है। किसानों के लिए एक पेंशन योजना, पीएम-किसान मानधन योजना के साथ इसका एकीकरण, भारत के कृषि कार्यबल के लिए सामाजिक सुरक्षा जाल बनाने की दिशा में एक अहम कदम है।

सुनहरे भविष्य का एक दृष्टिकोण : दृढ़ता समानता और स्थिरता

पीएम-किसान एक वित्तीय सहायता तंत्र से कहीं बढ़कर है। यह भारत सरकार के किसानों के नेतृत्व वाले विकास का एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण है। अधिकार से सशक्तिकरण की ओर, सहायता से स्वायत्तता की ओर स्थानांतरित होकर, यह राज्य और किसान के बीच अनुबंध को नए सिरे से परिभाषित करता है। भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की आकांक्षा रखता है, ऐसे में पीएम-किसान जैसी पहल समावेशी प्रगति की नींव रखती है। उन्नत तकनीकों के निरंतर एकीकरण और जलवायु परिवर्तन के प्रति दृढ़ता, स्थिरता और सटीक कृषि पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, यह योजना बदलाव की दिशा में एक बेहद शक्तिशाली कदम के रूप में विकसित होने के लिए तैयार है। पीएम-किसान विश्वास, तकनीक और परिवर्तन की कहानी है। यह दुनिया के लिए भारत का योगदान है। यह योजना एक जीवंत उदाहरण है कि कैसे एक दूरदर्शी नीति, डिजिटल नवाचार और राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ मिलकर, लाखों लोगों को सशक्त बना सकती है और 21वीं सदी के शासन को नए सिरे से परिभाषित कर सकती है।

सबसे अनसुनी यात्रा-अपने भीतर लौटने की राह

दुनिया ने कई यात्राएँ देखी हैं। किसी ने रेगिस्तानों को पार किया, किसी ने सागर की लहरों से जूझते हुए नए महाद्वीप खोज निकाले, तो किसी ने अंतरिक्ष की ओर छलाँग लगाकर ग्रह-नक्षत्रों को छू लिया। सभ्यता ने हर दिशा में अपने पाँव पसारे हैं-ज़मीन पर, पानी में, आसमान में। लेकिन इन सबमें एक यात्रा ऐसी है, जो सबसे मौन है, सबसे कठिन है और सबसे अनसुनी है-अपने भीतर लौटने की राह। यह यात्रा बाहर की यात्राओं जैसी नहीं है, जहाँ नक्शे, गाइड या मंज़िल का पता हो। यहाँ तो पहला कदम यही है कि हर नक्शा फाड़ देना पड़ता है। क्योंकि बाहर का कोई रास्ता भीतर नहीं ले जा सकता। अपने भीतर लौटना वैसा है, जैसे पुराने, धूल जमे आईने को धीरे-धीरे साफ़ करना। बरसों की मान्यताएँ, रिश्तों की अपेक्षाएँ, समाज की परतें-सब उस आईने पर जमती रही हैं। लेकिन उन परतों के नीचे एक असली 'मैं' है, जो अब भी चुपचाप इंतज़ार कर रहा है। सोचिए, सागर की गहराई को मापना कठिन है, पर संभव है। लेकिन जब आप अपने भीतर उतरते हैं, यह यात्रा एक अंतहीन कुएँ जैसी हो जाती है। हर तल के नीचे एक और तल निकल आता है। हर सवाल के नीचे एक और सवाल। हर खोज के नीचे एक और खोज। अपने भीतर लौटने की यह राह सबसे बड़ी इसलिए है क्योंकि यहाँ कोई ताज नहीं पहनना, कोई विजय पताका नहीं फहराना। यहाँ असली जीत यही है कि आप अंततः अपने ही भीतर लौट आए। सत्य यह है कि हम जीवन भर बाहर तलाश में दौड़ते रहते हैं-खुशी, ईश्वर, शांति की तलाश में। हमें लगता है कि यह सब कहीं बाहर है-किसी और जगह, किसी और व्यक्ति, किसी और समय में। लेकिन जब भीतर की राह पकड़ते हैं, परतें उतरती हैं, तो अचानक एक दिन यह अहसास होता है- "जिसे बाहर खोज रहा था, वह तो हमेशा मेरे भीतर था।" जैसे कोई आदमी घर-भर चाबी ढूँढे और अंत में पता चले कि चाबी तो उसकी जेब में ही थी। यही इस यात्रा का ध्यानसूत्र है-ईश्वर, सत्य, शांति या आनंद कहीं बाहर नहीं हैं; वे हमारे भीतर की गहराई में ही सुप्त हैं। जो इस राह को समझ लेता है, उसकी बाहरी यात्राएँ भी अर्थ बदल देती हैं। उसके लिए एवरेस्ट पर चढ़ना, सागर पार करना, या चाँद पर जाना केवल खेल-सा हो जाता है। संदेश सरल है- पहले भीतर की यात्रा करो। क्योंकि जिसने स्वयं को पा लिया, उसके लिए दुनिया का हर शिखर पहले ही छोटा हो चुका होता है। आख़िरकार यही सच है- सबसे अनसुनी यात्रा कहीं जाने की नहीं, बल्कि अपने भीतर लौट आने की है। **(लेखक आदर्श महाविद्यालय, राजधनवार के विद्यार्थी हैं)**

आपकी **बात**

बोधार्थी रौनक
गिरिडीह, झारखंड

दिशोम गुरु शिबू सोरेन का जाना एक युग का अंत

झारखंड की मिट्टी का वह सपूत, जिसने दलित आदिवासी मूलवासी समाज की आवाज को न केवल बुलंद किया, बल्कि उसे एक नई पहचान दी, दिशोम गुरु शिबू सोरेन अब हमारे बीच नहीं हैं। शिबू सोरेन का जीवन केवल एक नेता की कहानी नहीं, बल्कि एक ऐसे क्रांतिकारी की गाथा है, जिसने अपने लोगों के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया। उनके पिता सोबरन मांझी, एक सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिन्होंने आदिवासियों के शोषण के खिलाफ आवाज उठाई। 1957 में उनके पिता की हत्या ने 13 वर्षीय शिबू के जीवन को बदल दिया। कम लोग जानते हैं कि शिबू सोरेन ने अपनी युवावस्था में कविताएँ लिखी थीं। ये कविताएँ आदिवासी संस्कृति, प्रकृति, और शोषण के खिलाफ विद्रोह की भावना से भरी थीं। उनकी एक कविता की पंक्तियां थीं: "जंगल हमारा, जमीन हमारी, फिर क्यूं भटके हम बेगाने? हक छीन लो, उठो मेरे भाई, बनो अपने भाग्य के विधाता।" ये पंक्तियां बाद में धनकटनी आंदोलन का आधार बनीं, जिसमें आदिवासी युवाओं ने महाजनों के खेतों से जबरन धान काटकर अपनी जमीन और सम्मान की रक्षा की। इस आंदोलन के दौरान शिबू सोरेन ने गांव-गांव में "सांस्कृतिक जागरण सभाएं" आयोजित कीं, जहां आदिवासी लोकगीत, नृत्य, और कहानियों के माध्यम से युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ा गया। वे मानते थे कि बिना सांस्कृतिक जागरूकता के कोई भी आंदोलन अधूरा है। इन सभाओं में वे खुद ढोल-मांदर बजाते और आदिवासी गीत गाते थे, जिससे युवाओं में जोश और एकता की भावना जागृत होती थी। शिबू सोरेन ने झामुमो के शुरुआती दिनों में एक "पंचायत पत्रिका" शुरू की थी, जो स्थानीय भाषाओं में छपती थी। इस पत्रिका में आदिवासियों के अधिकार, शिक्षा, और पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दों पर लेख प्रकाशित होते थे। यह पत्रिका गाँवों में मुफ्त बांटी जाती थी, ताकि साक्षरता और जागरूकता बढ़े। इस पहल को उन्होंने अपने निजी खर्च से चलाया, जो उनकी दूरदृष्टि को दर्शाता है।शिबू सोरेन की छवि एक कठोर और दृढ़ नेता की रही, लेकिन उनके करीबी जानते थे कि वे कितने संवेदनशील थे। वे रातों को गाँवों में घूमते, लोगों की समस्याएँ सुनते, और उनके साथ बैठकर चूल्हे पर बनी रोटी खाते। उनकी सादगी ऐसी थी कि केंद्रीय कोयला मंत्री रहते हुए भी वे सादा खाना और साधारण वस्त्र पसंद करते थे। शिबू सोरेन ने गुप्त रूप से कई आदिवासी बच्चों की शिक्षा का खर्च उठाया। उनके एक सहयोगी ने बताया कि वे अक्सर गाँव के स्कूलों में जाकर शिक्षकों से मुलाकात करते और बच्चों को किताबें वितरित करते थे। वे कहते थे, "शिक्षा ही वह हथियार है, जो हमें शोषण से मुक्ति दिलाएगा।" शिबू सोरेन की पत्नी, रूपी सोरेन, उनकी सबसे बड़ी ताकत थीं। उन्होंने आंदोलनों में शिबू का साथ दिया, लेकिन हमेशा पर्दे के पीछे रहीं। उनके बच्चों, विशेष रूप से हेमंत सोरेन, को उन्होंने हमेशा सिखाया कि सत्ता से ज्यादा महत्वपूर्ण जनसेवा है। उनके बड़े बेटे, दुर्गा सोरेन, की मृत्यु (2009) ने उन्हें गहरा आघात पहुँचाया, लेकिन उन्होंने इस दुख को सार्वजनिक रूप से कभी व्यक्त नहीं किया। उनके करीबी बताते हैं कि वे अक्सर रात में अकेले बैठकर अपने बेटे की तस्वीर देखते और चुपके से आँसू बहाते थे। यह उनकी निजी जिंदगी का वह पहलू था, जो जनता से हमेशा छिपा रहा।विवादों के दौरान शिबू सोरेन ने एक डायरी लिखी, जिसमें उन्होंने अपने विचार और दुख व्यक्त किए। इस डायरी में उन्होंने लिखा, "सच्चाई का रास्ता कठिन होता है, लेकिन वह हमेशा जीतता है।" यह डायरी उनके परिवार के पास सुरक्षित है और उनके निजी विचारों का एक अनमोल दस्तावेज है। शिबू सोरेन पर्यावरण संरक्षण के भी प्रबल समर्थक थे। उन्होंने अपने गाँव में सैकड़ों पेड़ लगवाए और आदिवासियों को जंगल संरक्षण के लिए प्रेरित किया। वे कहते थे, "जंगल हमारी माँ है, इसे बचाना हमारा धर्म है।" उनकी यह सोच आज के पर्यावरण संकट के दौर में और भी प्रासंगिक है। झारखंड की मिट्टी और झारखंडी समाज आपको हमेशा याद रखेंगे।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

अलग **बात**

विजय शंकर नायक

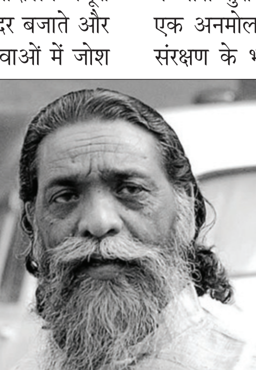

फेसबुक वॉल से

एक्स से

आज का दोहा

चुप भी हो, अब बंद कर, शेखी वाली बात।
कट जायेगी कब बता, मजलूमों की रात।।

सोमदत्त शर्मा, गाजियाबाद (उ.प्र.)

रचना भेजिए

समाचारों के संबंध में शिकायत या इस पेज के लिए आर्टिकल कृप्या भेजें artical.rnmail@gmail.com

कॉल/व्हाट्सएप 8292553444

संपादक

अब तो भारत की गलतफहमी दूर हो

डॉनल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में भारत और अमेरिका के बीच साझेदारी नई ऊंचाइयों पर पहुंचने की उम्मीदें चकनाचूर हो गईं हैं, ट्रंप ने अपने 'मित्र' भारत पर 25 प्रतिशत शुल्क लगाने का ऐलान कर डाला है ।यही नहीं उन्होंने रूस से हथियार और तेल खरीदने, ईरान से पेट्रोलियम उत्पाद खरीदने तथा ब्रिक्स प्लस का सदस्य होने के कारण भारत पर जुर्माना लगाने की बात भी कही। यह अलग बात है जुर्माना कितना होगा और कब से प्रभावशील होगा , यह अभी नहीं पता है। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था को मृत प्राय बताते हुए कहा कि यह भी उसी तरह गर्त में चली जाएगी, जैसे उनके पुराने दोस्त रूस की अर्थव्यवस्था जा रही है। अब यह मामला व्यापार या शुल्क की जंग भर का नहीं रह गया है बल्कि भूराजनीतिक चुनौती बन गया है, जहां अमेरिकी राष्ट्रपति अपनी दोस्तों और दुश्मनों को झुकाने की अपनी सनक में वाणिज्यिक उपायों को हथियार बनाकर इस्तेमाल कर रहे हैं। कुछ देशों ने उनकी अतिरंजित और भेदभाव भरी मांगों के सामने घुटने टेक दिए हैं और अमेरिका में भारी निवेश का वादा किया है, जो पता नहीं ट्रंप का कार्यकाल समाप्त होने तक पूरा हो पाएगा या नहीं। चीन जैसे अन्य देशों ने अपनी वाणिज्यिक बढ़त का इस्तेमाल कर अमेरिका का प्रतिरोध किया है। मगर भारत के पास तो इस तरह की बढ़त भी नहीं है तो क्या उसे चुपचाप अमेरिकी मनमानी सहन कर लेनी चाहिए? धौंस जमाने वालों से निपटने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि उनकी धौंस नहीं सही जाए। अगर पहली बार में ही झुक गए तो भविष्य में और भी दबाव पड़ सकता है तथा बार-बार घुटने टेकने पड़ सकते हैं। अभी जान छुड़ाने के लिए छोटी कीमत चुका दी गई तो भविष्य में बड़ी कीमत चुकाने के लिए भी तैयार रहना पड़ेगा। भारत अगर अभी ट्रंप की मांगों के खिलाफ खड़ा नहीं होता है तो आगे चलकर अमेरिका की फरमाइशें बढ़ती ही जाएंगी और वह बड़ी रियायतें मांगेंगे। अगर हमने अभी सीमा रेखा नहीं खींची तो भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और दुनिया में इसकी विश्वसनीयता तथा प्रभाव के लिए दुष्परिणाम होंगे। क्या भारत को अपने प्रतिरोध की कीमत चुकानी होगी? बिल्कुल चुकानी होगी और हमें इसके लिए तैयार भी रहना चाहिए। अमेरिका के साथ हमारे आर्थिक और वाणिज्यिक रिश्तों की सीमा क्या है? 2024-25 में भारत और अमेरिका के बीच कुल 186 अरब डॉलर का व्यापार हुआ, जो भारत के कुल व्यापार का 10.73 फीसदी है। भारत का 8 फीसदी निर्यात अमेरिका जाता है और अमेरिका से हम 6 फीसदी आयात करते हैं। 10 फीसदी व्यापार की निर्भरता ज्यादा तो है मगर ऐसा भी नहीं है कि उसका खत्म होना बरदाश्त नहीं किया जा सकता। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की बात करें तो उसी साल अमेरिका चौथे नंबर पर रहा और भारत में 81.04 अरब डॉलर की कुल आवक में उसका योगदान केवल 11 फीसदी रहा। हिस्सेदारी का यह आंकड़ा ज्यादा तो है मगर इतना ज्यादा नहीं है कि उसे किसी अन्य देश से हासिल न किया जा सके। अनुमान है कि उच्च टैरिफ लागू होने के बाद भारत के सकल घरेलू उत्पाद में दो फीसदी तक कमी आ सकती है। परंतु यह बहुत बड़ी कीमत नहीं है। अतीत में जब हम कमजोर देश थे तब भी अहम मसलों पर अपना रुख साफ करने की कीमत हमने चुकाई है। ट्रंप के कदमों के भूराजनीतिक परिणाम और भी चिंतित करने वाले हो सकते हैं। वह अन्य देशों के साथ भारत के रिश्तों पर वीटो चाहते हैं, यानी चाहते हैं कि अमेरिका तय करे कि भारत किसके साथ कैसे रिश्ते रखे। इसे पुरजोर तरीके से नकारा जाना चाहिए। भारत के पास ब्रिक्स प्लस और क्वाड में बने रहने की पर्याप्त वजह है। रूस के साथ हमारा रिश्ता कई तरह से हमारे हित में है। हालांकि इसमें अब कुछ विविधिता आ रही है लेकिन उसकी अपनी वजह हैं। अमेरिकी विदेश नीति में जिस तरह किसी एक की सनक के कारण पल भर में दुश्मन और दोस्त बदल जाते हैं, उसे देखते हुए जरूरी है कि भारत साझेदारियों का अपना नेटवर्क बनाए रखे तथा मजबूत करे। अन्य देशों के साथ भारत के रिश्तों में सबसे अहम रही है उसकी विश्वसनीयता। विभिन्न देश भारत पर भरोसा कर सकते हैं कि उसके साथ रिश्तों में निरंतरता बनी रहेगी। हमें एक अस्थिर चित्त वाले नेता के फेर में अपनी यह साख गंवानी नहीं चाहिए। भले ही वह दुनिया के सबसे ताकतवर मुल्क का मुखिया क्यों न हो? हमने दशकों में जो विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा अर्जित की है उसे इस हाथ दे उस हाथ ले वाले रिश्ते की भेंट नहीं चढ़ा देना चाहिए। भारत को अपनी अर्थव्यवस्था को और भी बहिर्मुखी बनाना चाहिए मगर ऐसा अपने हित के लिए करना चाहिए, ट्रंप की मांगें पूरी करने के लिए नहीं। अच्छी बात यह है कि भारत ने कुछ व्यापार समझौते कर लिए हैं और उसे दोगुनी तेजी के साथ ऐसे अन्य समझौतों की दिशा में बढ़ना चाहिए जैसे यूरोपीय संघ के साथ समझौता। भारत ने बिना किसी ठोस वजह के स्वयं को दक्षिण-पूर्व एशिया के जीवंत आर्थिक क्षेत्र से अलग कर लिया है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

देश की **बात**

राकेश दुबे

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. के लिए प्रकाशक एंव मुद्रक हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से प्रकाशित एवं एस एच प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड), नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. RNI.61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13 ।प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, कार्यकारी संपादक : सुनील सिंह 'बादल', स्थानीय संपादक : राणा अरुण सिंह*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नम्बर : 06562-796018, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-834001, फोन नं.- 0651-3553943, लोहरदगा कार्यालय : सरस्वती निवास, तेली धर्मशाला के सामने, कृषि मार्केट, लोहरदगा। - फोन : 7903891779, ई-मेल : news.rnmail@gmail.com, article.rnmail@gmail.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

सावन की अंतिम सोमवारी पर देवाकी बाबा धाम में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

नवीन मेल संवाददाता

घाघरा। घाघरा, श्रावण माह के अंतिम सोमवारी को घाघरा के प्रसिद्ध देवाकी बाबाधाम शिव पार्वती मंदिर में जलाभिषिक को लेकर भीड़ उमड़ पड़ी। अपराह्न चार बजे तक भीड़ पूजा अर्चना को लेकर मंदिर परिषर में लगी रही।

काफी संख्या में महिला पुरूष भक्त लंबी कतारों में अपनी बारी का घंटो इंतजार करते रहे और शिव पार्वती का अभिषेक कर मनोवांक्षित बर मांगा। देवाकी बाबाधाम प्रबंधन समिति द्वारा देर शाम तक लंगर में हलवा प्रसाद वितरित किया गया। वहीं चाय का भी लुफ्त भी भक्तों ने उठाया। प्रबंधन समिति के लोगों ने अंतिम सोमवारी को 120 लीटर दूध की चाय की भी व्यवस्था की थी। मेले में मिठाई की दुकानें, प्रसाद दुकान एवं झूले में काफी भीड़ देखी गयी। *छठ मुहल्ला घाघरा के भक्तों द्वारा आकर्षक शिवलिंग के साथ विशाल कांवड़ यात्रा लेकर पैदल चल देवाकी बाबाधाम पहुँचे।* इधर पुलिस प्रशाशन भी चाक चौबंद रही ताकि शांतिपूर्ण माहौल में पूजा अर्चना की जा सके। भक्तों के लिए पार्किंग की भी व्यवस्था की गई थी।

सावन की चौथी व अंतिम सोमवार, भक्तों में बही शिवभक्ति की बयार

सिसई (गुमला)। प्रखण्ड क्षेत्र के बूढ़ा महादेव, प्रखण्ड मुख्यालय शिव मंदिर, भदौली मंडा टांड़ शिव मंदिर,थाना रोड शिव मंदिर, नगर कपिलनाथ देव मंदिर सहित प्रखण्ड क्षेत्र के सभी शिवालयों एवं मंदिरों में सावन की चौथी व अंतिम सोमवारी पर शिवभक्तों का भारी भीड़ लगा हुआ था। श्रावण मास को पवित्रता और हरियाली का प्रतीक माना जाता है माह के सभी सोमवार विशेष और शुभ होते हैं। इस माह में श्रद्धा भाव से किए गए कार्यों से शुभ फल की प्राप्ति होती है। अंतिम सोमवार को प्रातः काल से ही शिवभक्त मंदिरों में बाबा भोलेनाथ जी को जलार्पण करने और उनका दर्शन पाने के लिए जुटे हुए थे। भक्तों द्वारा शिवलिंग पर दूध, दही,शहद,और गंगा जल से जलाभिषेक किया गया एवं बिल्वपत्र, फूल, धतुरा का फूल व फल और अक्षत बाबा को अर्पण किया गया तथा धुप दीप जला कर पूजा अर्चना करते हुए भगवान भोलेनाथ से अपने घर परिवार में सुख समृद्धि और क्षेत्र की शांति के लिए प्रार्थना किया गया। श्रावण मास की अंतिम सोमवारी पर पूरा प्रखण्ड क्षेत्र शिवमय रहा और चारों ओर "हर हर महादेव", "ॐ नमः शिवाय", "बोल बम" की जयघोष गूंज रही थी। वहीं विभिन्न मंदिरों में धार्मिक अनुष्ठान किए गए साथ ही भजन कीर्तन और भंडारा का आयोजन भी किया गया था। इसी के साथ पवित्र श्रावण मास की चार सोमवारी का श्रद्धा भक्ति के साथ समापन किया गया।

सावन की अंतिम सोमवारी में शिवभक्तों ने की जलाभिषेक और मंगल कामना

भरनो (गुमला)। पवित्र सावन मास की चौथी और अंतिम सोमवारी के अवसर पर भरनो प्रखंड के विभिन्न शिवालयों में श्रद्धा और आस्था का अद्भुत संगम देखने को मिला। सुबह से ही शिवभक्त स्नान कर, कांवर और जल पात्र लेकर भोलेनाथ की पूजा-अर्चना और जलाभिषेक के लिए मंदिरों की ओर निकल पड़े। चारों ओर हर-हर महादेव और भोलेनाथ के जयकारों से वातावरण भक्तिमय हो उठा। प्रखंड के प्रमुख शिवालयों – कमलपुर स्थित प्राचीन शिव मंदिर, स्कूल चौक शिव मंदिर, बाजार रोड शिव मंदिर, छठ तालाब शिव मंदिर, थाना परिसर एवं ब्लॉक परिसर स्थित शिव मंदिर, समसेरा स्थित सत्यवानी आश्रम, बूढ़ीपाठ, डोम्बा, डूडीया, करंज, करौंदाजोर सहित अनेक ग्रामीण शिवालयों में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। श्रद्धालुओं ने पूरी आस्था और भक्ति से जलाभिषेक, बेलपत्र अर्पण, धतूरा, भस्म, अक्षत, और प्रसाद चढ़ाकर सुख-समृद्धि, पारिवारिक कल्याण एवं मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना की। स्थानीय मंदिरों में पूजा-पाठ और शिव पुराण पाठ के साथ भजन-कीर्तन का भी आयोजन हुआ, जिसमें महिलाएं और युवाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। पूरे दिन भर क्षेत्र का माहौल धार्मिक ऊर्जा और शिवभक्ति से सराबोर रहा।

66 लाख की अवैध अंग्रेजी शराब जब्त के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

भरनो (गुमला)। गुमला जिले के भरनो थाना क्षेत्र में पुलिस को एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। एसपी गुमला के निर्देश पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने एनएच-23 रांची-गुमला मुख्य मार्ग पर अवैध रूप से हरियाणा से लाई जा रही 66 लाख रुपये से अधिक मूल्य की अंग्रेजी शराब जब्त की है। इस कार्रवाई में एक कंटेनर वाहन से कुल 685 पेटी अवैध शराब बरामद की गई, वहीं दो तस्करों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

जानकारी के अनुसार पुलिस अधीक्षक को गुप्त सूचना मिली थी कि एक कंटेनर में भारी मात्रा में शराब लोड कर सिसई बाइपास होते हुए रांची ले जाया जा रहा है। इस सूचना पर एसडीपीओ गुमला सुरेश कुमार यादव के नेतृत्व में एक छापामारी दल का गठन किया गया, जिसमें पुलिस इंस्पेक्टर सुरेंद्र कुमार सिंह, भरनो थाना प्रभारी कंचन प्रजापति, सब इंस्पेक्टर मंटू चौधरी, एएसआई प्रदीप कुमार और सशस्त्र बल शामिल थे। छापामारी दल ने भरनो थाना चेक पोस्ट पर वाहन चेकिंग के दौरान रजिस्ट्रेशन नंबर एचआर 61ई 9722 वाले कंटेनर को रोका। प्रारंभिक पूछताछ में चालक ने कंटेनर में प्लाईवुड होने की बात कही, लेकिन उसकी गतिविधि संदिग्ध लगी। जब कंटेनर को खोला गया तो उसमें भारी मात्रा में अंग्रेजी शराब लदी पाई गई।

नवागढ़ दुर्गा पूजा समिति की बैठक संपन्न

रायडीह (गुमला)। नवागढ़ पतराटोलीआगामी दुर्गा पूजा की तैयारियों को लेकर नवागढ़ दुर्गा मंदिर, रायडीह में दुर्गा पूजा समिति की बैठक विजय महामंत्र के साथ संपन्न हुई। बैठक में पिछले वर्ष का आय-व्यय लेखा प्रस्तुत किया गया, साथ ही नए समिति का गठन सर्वसम्मति से किया गया।

कमेटी के अध्यक्ष ब्रजेश कुमार लाल को चुना गया तथा उपाध्यक्ष विवेक कुमार लाल को बनाया गया है नवनियुक्त सचिव हिमांशु कुमार गुप्ता ने अपने वक्तव्य में कहा की जो जिम्मेदारी मुझे दी गई है, उसे पूरी निष्ठा से निभाऊंगा। इस वर्ष दुर्गा पूजा को पहले से अधिक भव्य और सुसंगठित तरीके से मनाया जाएगा।" उन्होंने सभी भक्तों और ग्रामीणों से अपील की कि वे भारी संख्या में उपस्थित होकर आयोजन को सफल बनाने में सहयोग करें।

सैकड़ों कांवरियों ने शंख नदी से उठाया जल, रूसु शिवमंदिर में किया जलाभिषेक जलापर्ण

केरसई। सावन महीने की चौथी व अंतिम सोमवारी के अवसर पर रूसु गांव शिव भक्ति में डूबा रहा। सुबह से ही पूरे क्षेत्र में "बोल बम" और "हर हर महादेव" के जयकारे गूंजने लगे। भगवा वस्त्रधारी सैकड़ों कांवरिए पंडित श्री नवीन मिश्रा के वैदिक मंत्रोच्चार के साथ बुदाधार शंख नदी से जल भरकर झूमते-नाचते हुए रूसु शिवमंदिर पहुंचे और बाबा भोलेनाथ का जलाभिषेक किया।इस पावन अवसर पर कांवरियों ने भगवान शिव को जलार्पण के साथ बिल्व पत्र, सफेद पुष्प व प्रसाद अर्पित कर विशेष पूजा-अर्चना की। भक्तिभाव से ओतप्रोत माहौल ने समस्त वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया।

ट्रक की टक्कर से स्कूटी सवार युवक-युवती गंभीर रूप से घायल, रिम्स रेफर

भरनो (गुमला)। एनएच-23 रांची-गुमला मुख्य मार्ग पर भरनो थाना क्षेत्र अंतर्गत कुसुम्बाहा मोड़ के पास सोमवार को एक तेज रफ्तार मालवाहक ट्रक ने स्कूटी सवार युवक और युवती को टक्कर मार दी, जिससे दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों की पहचान निशांत कुमार (26 वर्ष), निवासी चुटिया, रांची और अंजली कुमारी (24 वर्ष), निवासी ओरमांझी, रांची के रूप में की गई है। दोनों स्कूटी से रांची से नेतरहाट घूमने जा रहे थे कि तभी कुसुम्बाहा मोड़ के पास अचानक सामने से आ रहे ट्रक ने उनकी स्कूटी को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही दोनों सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे की सूचना मिलते ही भरनो थाना के एसएसआई वशिष्ठ नारायण सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे, और ग्रामीणों के सहयोग से दोनों घायलों को पुलिस वाहन से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भरनो पहुंचाया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उनकी स्थिति गंभीर देखते हुए रिम्स रांची रेफर कर दिया। पुलिस ने मौके से ट्रक को जब्त कर लिया है, जबकि ट्रक चालक घटना के बाद वाहन छोड़कर फरार हो गया। पुलिस चालक की तलाश में जुटी हुई है। यह दुर्घटना एक बार फिर तेज रफ्तार और लापरवाही से वाहन चलाने के खतरे को उजागर करती है।

मिड-डे मील में नहीं परोसा जा रहा है बच्चों को मेनू के हिसाब से खाना

नवीन मेल संवाददाता

घाघरा(गुमला)। घाघरा प्रखंड के नवडीहा करंजटोली प्राथमिक विद्यालय में मध्यान भोजन योजना मात्र कागजों पर सीमित होकर रह गई है। विद्यालय में बच्चों को रोज़ाना पौष्टिक आहार देने के शासन–प्रशासन के दावे जमीनी हकीकत से कोसों दूर हैं। शिक्षकों द्वारा कभी–कभी फर्श पर कच्चे अंडे रखकर फोटो शिक्षा विभाग के अधिकारियों को भेजे जाते हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि बच्चों को नियमित रूप से केवल दाल–भात और कभी–कभी आलू की सब्जी दी जाती है। पोषण के लिए आवश्यक फल, अंडा, दाल व हरी सब्ज़ी जैसे घटक लगभग हमेशा अनुपस्थित रहते हैं, जबकि केंद्र और राज्य सरकार की गाइडलाइन के अनुसार मिड डे मील में सप्ताह में दो दिन फल और अंडा देना अनिवार्य है।

मौके पर पहुंचे संवाददाता से हुई बातचीत में विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें अब तक कभी फल नहीं मिला। एक छात्रा के मुताबिक, "हमने तो स्कूल में कभी फल खाया ही नहीं। अंडा भी कभी–कभी मिलता है, वह भी आलू के साथ भुजिया बनाकर या हल्का झोर बनाकर दिया जाता है।" स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि विद्यालय में निरीक्षण न के बराबर है, जिससे पूरी व्यवस्था लापरवाह हो गई है। छात्रों की दैनिक प्लेट पोषक तत्त्वों से खाली दिखती है, जबकि मिड डे मील के लिए सरकार हर सप्ताह फल और अंडे जैसी चीज़ों को मेनू में शामिल करने का आदेश दे चुकी है।

योजना के लिए निर्धारित निर्देशानुसार, सप्ताह में दो दिन अंडा और फल देना ज़रूरी है, लेकिन विद्यालय में यह केवल फोटो भेजने तक की औपचारिकता रह गई है। सुप्रीम कोर्ट का स्पष्ट निर्देश भी है कि किसी भी हालत में मध्याह्न भोजन योजना बंद नहीं होनी चाहिए या उसमें कटौती नहीं होनी चाहिए। बावजूद इसके बच्चों को बुनियादी पोषण नहीं मिल पा रहा है, जिससे उनके शारीरिक व मानसिक विकास पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है। अब सवाल उठता है कि सरकारी योजनाएं केवल रिपोर्ट या व्हाट्सएप तक ही क्यों सीमित हैं? यदि बच्चों को उनका अधिकार और पोषण नहीं मिलेगा, तो बेहतर स्वास्थ्य और शिक्षा की आशा अधूरी रह जाती है। स्थानीय लोगों ने मामले में सख्त प्रशासनिक हस्तक्षेप व नियमित निरीक्षण की मांग की है, ताकि हर बच्चों को उसका अधिकार और पोषण मिल सके और योजना वास्तविक रूप से सफल हो सके ।

बाड़ोटोली गांव में आजादी के 77 साल बाद भी विकास से कोसों दूर

- गांव तक पहुंचने के लिए कोई पक्की सड़क नहीं है
- गांव के पास बहने वाली नदी पर पुल नहीं है

नवीन मेल संवाददाता

घाघरा (गुमला)। घाघरा थाना छेत्र से 8 किलोमीटर की दूरी पर देवाकी पंचायत का बाड़ोटोली गांव आजादी के 77 साल बाद भी विकास से कोसों दूर है। यहां के लोग आज भी बदहाल जिंदगी जीने को मजबूर हैं, क्योंकि उनके पास न सड़क, स्कूल और पुल जैसी बुनियादी सुविधाएं तक नहीं हैं।

बाड़ोटोली गांव तक पहुंचने के लिए कोई पक्की सड़क नहीं है। यहां के निवासियों को हर दिन उबड़-खाबड़ और कच्चे रास्तों से गुजरना पड़ता है। बारिश के मौसम में यह रास्ता कीचड़ में तब्दील हो जाता हैं और ये कीचड़ वाला रास्ता खतरनाक हो जाता है।

गांव में सड़क न होने से सबसे ज्यादा दिक्कत स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर होती है। यदि कोई ग्रामीण बीमार पड़ जाता है, तो उसे अस्पताल तक पहुंचाना एक बड़ी चुनौती बन जाता है। एंबुलेंस तो दूर की बात है, यहां पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में, गांव वाले मरीजों को कंधों पर उठाकर एक किलोमीटर तक पैदल चलते हैं, तब जाकर वे पक्की सड़क तक पहुंच पाते हैं।

बच्चों की शिक्षा की स्थिति भी दयनीय है। गांव में कोई स्कूल नहीं है, जिससे बच्चों को पढ़ाई के लिए दूर जाना पड़ता है।

इसके अलावा, गांव के पास बहने वाली नदी पर पुल नहीं है। खासकर बारिश में नदी पार करना बेहद मुश्किल हो जाता है, जिससे लोगों का संपर्क बाहर की दुनिया से कट जाता है।

बाड़ोटोली के ग्रामीण सरकार और स्थानीय प्रशासन की उदासीनता के कारण यहां के ग्रामीण निराश हैं।

वे लगातार यह उम्मीद लगाए बैठे हैं कि उनके गांव में जल्द से जल्द सड़क, स्कूल और पुल जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। गांववालों का कहना है कि वे भी एक सम्मानजनक और बेहतर जीवन जीना चाहते हैं। यह गांव आज भी आदिम युग में जीने को मजबूर है और विकास के नाम पर सिर्फ वादे मिल रहे हैं।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर चैनपुर पत्रकार संघ ने जताया गहरा शोक

गुमला (चैनपुर)। झारखंड आंदोलन के प्रणेता, जननेता और राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री दिसोम गुरु शिबू सोरेन के निधन की खबर से राज्यभर में शोक की लहर फैल गई है। इसी क्रम में चैनपुर पत्रकार संघ ने उनके निधन पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए इसे झारखंड की आत्मा को लगी गहरी चोट बताया है। संघ के अध्यक्ष बजरंग गुप्ता ने कहा कि दिसोम गुरु केवल एक राजनीतिक शख्सियत नहीं थे, बल्कि झारखंड की सामाजिक चेतना, आदिवासी अस्मिता और अधिकारों की लड़ाई के प्रतीक थे। उनके संघर्षों और विचारों ने न सिर्फ झारखंड राज्य को आकार दिया, बल्कि राज्य के हज़ारों लोगों को उनकी पहचान दिलाई। उनका जाना एक ऐसी क्षति है जिसकी भरपाई संभव नहीं। संघ के सदस्यों ने कहा की उनका जीवन एक आंदोलन था, और उनके विचार आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहेंगे। यह केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि एक संपूर्ण चेतना की विदाई है।" शोक जताने वालों में सचिन कुमार, राजेश कुमार, मनोज कुमार, अमित पांडेय, राहुल कुमार नंद, अभिषेक केशरी, रंजीत कुमार, कुलदीप कुमार, मुकेश कुमार, रुपेश गुप्ता, अंकित पासवान, शनिरंजन कुमार समेत चैनपुर पत्रकार संघ के सभी सदस्य शामिल रहे। संघ ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिवारजनों और समस्त झारखंडवासियों के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

गुरु शिबू सोरेन को दी गयी श्रद्धांजलि

गुमला। झारखंड आंदोलन के महानायक, दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, गुमला में गहरी शोकाभिव्यक्ति के साथ श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के आचार्यगण, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं (भैया-बहन) बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। शोक सभा की शुरुआत दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट के मौन से की गई। इसके पश्चात विद्यालय के प्राचार्य संजीव कुमार सिंहा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए शिबू सोरेन जी के प्रेरणादायी जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा की शिबू सोरेन केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि झारखंड की आत्मा और संघर्ष की चेतना थे। उनका सम्पूर्ण जीवन राज्य के आदिवासी समाज और वंचितों के अधिकारों के लिए समर्पित रहा।" प्राचार्य ने बच्चों को बताया कि शिबू सोरेन जी का संघर्ष आज भी हर युवा के लिए प्रेरणास्रोत है, और उनके विचार सदैव झारखंडवासियों को मार्गदर्शन प्रदान करते रहेंगे। उन्होंने यह भी कहा की उन्होंने हमें सिखाया कि मातृभूमि, संस्कृति और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्षरत रहना ही सच्ची सेवा है।" सभा का समापन सभी उपस्थितजनों द्वारा नम आंखों से प्रार्थना और श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हुआ।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर मयूरी ट्रस्ट एवं चैताली कॉलेज गुमला ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की

गुमला। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, झारखंड आंदोलन के पुरोधा एवं जननायक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर पूरे राज्यभर में शोक की लहर है। इसी क्रम में मयूरी ट्रस्ट गुमला एवं चैताली कॉलेज गुमला ने भी गहरी शोक संवेदना व्यक्त करते हुए उनके योगदान को अविस्मरणीय बताया है। मयूरी ट्रस्ट एवं चैताली कॉलेज के डायरेक्टर बसंत कुमार गुप्ता एवं सचिव चैताली सेनगुप्ता ने संयुक्त रूप से शोक व्यक्त करते हुए कहा कि दिशोम गुरु का निधन न केवल झारखंड, बल्कि पूरे देश के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने झारखंड राज्य के निर्माण और आदिवासी समाज की पहचान को राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बसंत कुमार गुप्ता ने बताया कि 9 फरवरी 2012 को मयूरी ट्रस्ट के तत्वावधान में सिसई प्रखंड के मुरगू गांव में आयोजित शहीद तेलंगा खड़िया जयंती समारोह में दिशोम गुरु शिबू सोरेन मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए थे। इस अवसर पर उन्होंने मुरगू गांव को आदर्श ग्राम के रूप में विकसित करने की घोषणा भी की थी। उनके प्रेरक संबोधन और मार्गदर्शन आज भी लोगों के मन में जीवंत हैं। सचिव चैताली सेनगुप्ता ने कहा की उनका जाना केवल एक जननेता का निधन नहीं, बल्कि झारखंड की आत्मा और अस्मिता के संरक्षक का अवसान है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति और उनके परिजनों को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान हो।" शोक संवेदना व्यक्त करने वालों में मयूरी ट्रस्ट व चैताली कॉलेज गुमला के संरक्षक रामकुमार साहू, फुलेश्वरी देवी, शुभम कुमार गुप्ता, हर्ष कुमार गुप्ता, समाजसेवी हंदू भगत, विष्णु राम, मुकेश गिरी, पवन गोप, प्रमोद कुमार पाठक, प्रसाद सोनी, नवनीत कसेरा समेत अनेक लोग शामिल रहे।

शिबू सोरेन के निधन के कारण झारखंड विद्यालय रसोइया संयोजिका संघ का धरना-प्रदर्शन स्थगित

गुमला। झारखंड प्रदेश विद्यालय रसोइया संयोजिका अध्यक्ष संघ द्वारा 4 अगस्त से 7 अगस्त 2025 तक प्रस्तावित धरना-प्रदर्शन कार्यक्रम को दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन के कारण स्थगित कर दिया गया है। उनकी श्रद्धांजलि स्वरूप विधान सभा सत्र स्थगित कर दिए जाने के साथ-साथ संघ ने भी अपनी आंदोलनात्मक कार्यक्रम को समाप्त करने की घोषणा की है। गुमला जिले के सभी प्रखंड अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष से आग्रह किया गया है कि वे अपने-अपने क्षेत्र के विद्यालय रसोइया संयोजिका अध्यक्षों को सूचित करें कि अब रांची में कोई धरना-प्रदर्शन नहीं होगा और सभी निर्धारित तिथि से अपने-अपने विद्यालयों में भोजन निर्माण कार्य के लिए उपस्थित हों। धरना स्थगन के पूर्व सभी रसोइया संयोजिकाओं ने दिवंगत नेता शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए एक मिनट का मौन रखा।

शिबू सोरेन का जाना झारखंड के लिए अपूरणीय क्षति : कांग्रेस प्रवक्ता

गुमला। झारखंड के महानायक, आदिवासी अस्मिता के प्रतीक और तीन बार राज्य के मुख्यमंत्री रहे दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मीडिया चेयरमैन सह प्रवक्ता आरिफ हुसैन अख्तर ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन का जाना झारखंड राज्य और आदिवासी समाज के लिए अपूरणीय क्षति है, जिसकी भरपाई आने वाले समय में संभव नहीं।आरिफ हुसैन अख्तर ने कहा कि दिशोम" का अर्थ होता है राह दिखाने वाला, और शिबू सोरेन वास्तव में आदिवासियों एवं वंचित वर्गों के पथ प्रदर्शक रहे। उन्होंने अपने पूरे जीवन को आदिवासी अधिकारों, सामाजिक न्याय और जनहित के संघर्ष में समर्पित कर दिया। वे न केवल आवाज बने, बल्कि आंदोलन के नेतृत्वकर्ता भी बने।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर भरनो में शोक की लहर

भरनो (गुमला)। झारखंड आंदोलन के पुरोधा और पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर भरनो प्रखंड में शोक की लहर फैल गई है। सीताराम साव सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में एक शोकसभा का आयोजन कर आचार्यों एवं स्कूली बच्चों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। इस दौरान उपस्थित सभी ने शिबू सोरेन के सामाजिक और राजनीतिक योगदान को स्मरण करते हुए उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। इधर झारखंड सरकार द्वारा तीन दिन का राजकीय शोक घोषित किए जाने के क्रम में दो दिनों तक सभी सरकारी कार्यालयों को बंद रखने का निर्णय लिया गया है।

बिना बीमा वाली कार लेकर निकले तो लगेगा बेस प्रीमियम के 3 से 5 गुना जुर्माना

-ब्यूरो

- 55 साल से ज्यादा उम्र वालों को लाइसेंस रिन्यू कराते समय ड्राइविंग टेस्ट देना होगा
- तेज गाड़ी चलाने या शराब पीकर चलाने पर पकड़े गए तो लाइसेंस रिन्यू कराने के लिए फिर होगा ड्राइविंग टेस्ट

नई दिल्ली। भारत में लोग मोटर गाड़ी की बीमा पॉलिसी खत्म हो जाने के बाद भी उसे लेकर कहीं जाने के लिए निकल पड़ते हैं। यदि इन गाड़ियों के दुर्घटना हो जाए तो नुकसान की भरपाई नहीं हो पाती। केंद्र सरकार ऐसी प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए मोटर वाहन अधिनियम में कुछ बदलाव कर इस तरह की गाड़ी चलाने पर भारी-भरकम जुर्माना लगाने का प्रावधान बनाने जा रही है। अभी इस तरह की गाड़ी चलाने वालों पर पहली बार पकड़े जाने पर 2,000 रुपये ,दोबारा पकड़े जाने पर 4,000 रुपये का जुर्माना लगता है। नए नियम के अनुसार, पहली बार बिना इंश्योरेंस वाली गाड़ी चलाने पर इंश्योरेंस के बेस प्रीमियम का 3 गुना जुर्माना लगेगा। वहीं, दोबारा पकड़े जाने पर यह जुर्माना 5 गुना हो जाएगा। जहां तक गाड़ी चलाने के स्पीड का सवाल है तो अभी सड़कों पर चलने वाली मोटर गाड़ियों की स्पीड लिमिट केंद्र सरकार व राज्य सरकारें (अलग-अलग तय करती हैं। इससे मोटर चलाने वालों को बहुत परेशानी होती है। वे समझ नहीं पाते कि किस सड़क पर कितनी स्पीड से चलना है। कई बार तो वे अनजाने में ही नियम तोड़ भी देते हैं और उनकी गाड़ी पर चालान जारी हो जाता है। नए नियमों के अनुसार केंद्र सरकार की सड़क मतलब कि नेशनल हाइवे व एक्सप्रेसवे पर स्पीड लिमिट तय करने का अधिकार केंद्र सरकार के पास होगा। वहीं, स्टेट हाइवे व अन्य स्थानीय सड़कों के लिए स्पीड लिमिट राज्य सरकारें तय करेंगी। इससे लोगों को आसानी होगी और वे बिना वजह चालान से बच सकेंगे। अधिकारियों का कहना है कि इससे भ्रष्टाचार पर भी लगाम लग सकता है।

केंद्र सरकार जो मोटर वाहन अधिनियम में भी बदलाव कर रही है, उसमें ड्राइविंग लाइसेंस को लेकर भी कुछ नया प्रावधान आने वाला है। अब यदि कोई व्यक्ति तेज गाड़ी चलाने या शराब पीकर गाड़ी चलाने जैसे गंभीर अपराध में दोषी पाया जाता है, तो उसे लाइसेंस रिन्यू कराने के लिए एक बार फिर से ड्राइविंग टेस्ट देना होगा। इतना ही नहीं, 55 साल से ज्यादा उम्र वाले लोगों को भी लाइसेंस रिन्यू कराते समय ड्राइविंग टेस्ट देना होगा। इससे यह पता चलेगा कि वे इस उमर में भी सुरक्षित तरीके से गाड़ी चला सकने में सक्षम हैं या नहीं। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय ने इन बदलावों का प्रस्ताव अन्य सरकारी विभागों या संबंधित मंत्रालयों को भेजा है। उनसे राय लेने के बाद इसे कैबिनेट की मंजूरी के लिए भेजा जाएगा। एक बार कैबिनेट से मंजूरी मिल जाए तो फिर इसे देश भर मे लागू कर दिया जाएगा।

'हर घर तिरंगा' अभियान से जागा राष्ट्र प्रेम, तिरंगे संग सेल्फी जरूर लें : अमित शाह

नई दिल्ली (आईएएनएस)। देश भर में स्वतंत्रता दिवस को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं। इसी क्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 'हर घर तिरंगा' अभियान को लेकर एक अहम संदेश दिया है। गृह मंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से शुरू की गई इस पहल को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि इस अभियान ने देशवासियों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अमित शाह ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा हर घर तिरंगा अभियान की जो पहल की गई थी, उसने देशवासियों को एकजुट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज यह अभियान जन-जन से जुड़ चुका है। प्रत्येक देशवासी में राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति की भावना इस अभियान के माध्यम से साफ दिखाई दे रही है।" गृह मंत्री ने विशेष रुप से युवाओं से आग्रह किया कि वे इस अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाएं।

बांग्लादेश के पूर्व सेनाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल एम. हारुन-उर-रशीद का मिला शव

ढाका (आईएएनएस)। बांग्लादेश के पूर्व सेनाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल एम. हारुन-उर-रशीद का सोमवार को निधन हो गया। वे चटगांव क्लब परिसर में मृत पाए गए। 77 वर्षीय राशिद 1971 के युद्ध के नायक, एक सम्मानित सैनिक और पाकिस्तान के कड़े आलोचक माने जाते थे। बांग्लादेश की स्थानीय मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, कोतवाली पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी अब्दुल करीम के अनुसार, शव को पोस्टमार्टम के लिए चटग्राम मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेजा गया। सितंबर 1970 में एक युवा लेफ्टिनेंट के रूप में पाकिस्तानी सेना में कमीशन मिलने के बाद, हारुन-उर-रशीद ने 2002 तक बांग्लादेश की सेना में सेवा दी। सेवानिवृत्ति के बाद, वह युद्ध अपराधियों के अत्याचारों के खिलाफ मुखर रहे और उन्होंने पाकिस्तान पर बांग्लादेश की राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डालने का आरोप लगाया। पुलिस के अनुसार, हारुन-उर-रशीद रविवार को एक मामले में स्थानीय अदालत में पेश होने के लिए ढाका से चटगांव आए थे।

इस्लामाबाद-ढाका संबंधों में बढ़ रही मिठास, पाक के विदेश मंत्री जाएंगे बांग्लादेश

ढाका। पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार इस महीने बांग्लादेश के दो दिवसीय दौरे पर जाएंगे। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, डार 23 अगस्त से ढाका की यात्रा पर रहेंगे। बता दें कि यह कई वर्षों बाद किसी पाकिस्तानी विदेश मंत्री की पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी, जो पिछले साल प्रधानमंत्री शेख हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग सरकार के हटने के बाद ढाका और इस्लामाबाद के बीच बढ़ती निकटता को दर्शाती है। बांग्लादेश के प्रमुख बंगाली दैनिक अखबार प्रोथोम अलो ने राजनयिक सूत्रों के हवाले से बताया कि इस यात्रा के दौरान इशाक डार विदेश मामलों के सलाहकार तौहीद हुसैन के साथ बातचीत करेंगे और अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार डॉ. मुहम्मद यूनुस से भी मुलाकात करेंगे। डार के बांग्लादेशी राजनीतिक नेताओं से भी संवाद करने की संभावना है।

रूस का क्राशेनिनिकोव ज्वालामुखी 600 साल बाद फटा 6 किमी ऊंचा राख का गुबार उठा

मॉस्को (आईएएनएस)। रूस के कामचटका प्रायद्वीप में क्राशेनिनिकोव ज्वालामुखी 600 वर्षों में पहली बार फटा है, जिससे आसमान में छह किलोमीटर तक विशाल राख का गुबार उठा है।

रूसी विज्ञान अकादमी की 'यूनिफाइड जियोफिजिकल सर्विस' की कामचटका ब्रांच ने यह जानकारी दी। कामचटका ज्वालामुखी विस्फोट प्रतिक्रिया दल (केवीईआरटी) के अनुसार, रविवार को स्थानीय समयानुसार सुबह 2:50 बजे विस्फोट शुरू हुआ, जिससे शुरुआत में राख के गुबार उठे जो समुद्र तल से 3 से 4 किलोमीटर की ऊंचाई तक पहुंच गए। बाद में, राख का गुबार काफी बढ़ गया और 6,000 मीटर (19,700 फीट) तक पहुंच गया, जिसके कारण क्षेत्र के लिए ऑरेंज एविएशन वार्निंग जारी की गई। केवीईआरटी की प्रमुख ओल्गा गिरिना ने आरआईए नोवोस्ती को बताया कि क्राशेनिनिकोव ज्वालामुखी में छह सदियों से ज्यादा समय बाद पहली बार ऐसी गतिविधि देखी गई है।

बीएसएफ, सेना और पुलिस के संयुक्त ऑपरेशन में मिली बड़ी कामयाबी

कुपवाड़ा में सुरक्षा बलों को मिली आतंकी गुफा, चीनी ग्रेनेड व गोला-बारूद बरामद

कुपवाड़ा (आईएएनएस)

आतंकियों की साजिश नाकाम

बीएसएफ ने अपने बयान में कहा, इस संयुक्त कार्रवाई से आतंकियों की खतरनाक साजिश को नाकाम कर दिया गया है, जहां से भारी मात्रा में हथियार और अन्य सामान बरामद किया गया है।

जम्मू कश्मीर में आतंकवाद के खिलाफ सुरक्षा बलों का अभियान लगातार जारी है। इस दौरान, बीएसएफ, सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने कुपवाड़ा जिले के कालारूस में संयुक्त ऑपरेशन में बड़ी कामयाबी हासिल की, जहां एक पथरीली गुफा में छिपे आतंकी ठिकाने का पता लगाया गया, जहां से ग्रेनेड, पिस्तौल के साथ गोला-बारूद बरामद किया गया है। बीएसएफ ने इस ऑपरेशन की जानकारी सोशल मीडिया के माध्यम से दी है।

कश्मीर फ्रंटियर बीएसएफ के आधिकारिक 'एक्स' हैंडल से सोमवार को एक पोस्ट शेयर कर कालारूस में चलाए गए संयुक्त ऑपरेशन के बारे में जानकारी दी। बीएसएफ ने 'एक्स' पर फोटो शेयर कर बताया कि जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के कालारूस में तीन दिन के संयुक्त अभियान में बीएसएफ, सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने 4 अगस्त को एक पथरीली गुफा में छिपा आतंकी ठिकाना खोज निकाला। सुरक्षाबलों ने वहां से 12 चीनी ग्रेनेड, एक चीनी पिस्तौल के साथ गोला-बारूद, केनवुड रेडियो सेट, उर्दू में लिखी आईईडी बनाने की किताब और आग जलाने वाली छड़ें बरामद की हैं।

बता दें कि जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा बल लगातार आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई कर रही है। कुलगाम जिले में आतंकवादियों के खिलाफ सुरक्षाबलों का अभियान सोमवार को चौथे दिन भी जारी रहा। अधिकारियों ने बताया कि अखल जंगल इलाके में रातभर रुक-रुक कर गोलीबारी होती रही।

सेना, सीआरपीएफ, और जम्मू-कश्मीर पुलिस सहित संयुक्त बलों ने सीएएसओ (घेराबंदी और तलाशी अभियान) के तहत का दायरा बढ़ा दिया है। इस अभियान में अब तक एक आतंकवादी मारा गया है और एक अन्य गंभीर रूप से घायल हुआ है। इसके अलावा, चार जवानों को भी चोटें आई हैं।

इससे पहले, सुरक्षाबलों ने तीन खूंखार पाकिस्तानी आतंकियों को मार गिराया था। ये आतंकी 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए हमले के लिए जिम्मेदार थे, जिसमें 26 पर्यटकों की हत्या कर दी गई थी।

सेना के पर्वतारोहियों ने की पैंगोंग त्सो की सबसे ऊंची चोटियों पर चढ़ाई

नई दिल्ली (आईएएनएस)

देश के तीन प्रमुख पर्वतारोहण संस्थानों, जवाहर पर्वतारोहण एवं शीतकालीन खेल संस्थान पहलगाम, नेहरू पर्वतारोहण संस्थान उत्तरकाशी और हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान दार्जिलिंग, के प्रशिक्षकों की एक संयुक्त टीम ने पैंगोंग त्सो क्षेत्र की सबसे ऊंची चोटियों पर सफलतापूर्वक चढ़ाई की है। लद्दाख क्षेत्र में इस साहसिक अभियान का आयोजन और नेतृत्व कर्नल हेम चंद्र सिंह द्वारा किया गया। वह जवाहर पर्वतारोहण एवं शीतकालीन खेल संस्थान पहलगाम में प्रिंसिपल हैं। यह भारत के पर्वतारोहण समुदाय के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। जवाहर पर्वतारोहण एवं शीतकालीन खेल संस्थान के मुताबिक, सफल आरोहण का आरंभ माउंट मेरग-3 की 6,480 मीटर या 21,254 फीट ऊंची चोटी से 29 जुलाई को सुबह 9.39 बजे हुआ। इसके उपरांत भारतीय पर्वतारोहण दल ने माउंट कांगजू कांगरी की 6,710 मीटर या 22,008 फीट ऊंची चोटी पर 2 अगस्त को चढ़ाई की। यह अभियान 24 जुलाई को जम्मू कश्मीर के सोनमर्ग से कर्नल हेम चंद्र सिंह द्वारा ध्वज दिखाकर रवाना किया गया था। अत्यधिक ऊंचाई और कठिन मौसम की चुनौतियों के बावजूद, टीम ने असाधारण साहस, दृढ़ता और सामूहिक समर्पण का प्रदर्शन करते हुए भारतीय पर्वतारोहण के इतिहास में एक नई मिसाल कायम की।

एक सितंबर से नहीं भेज पाएंगे रजिस्ट्री से चिट्ठी, सेवा होगी बंद

- रह जाएगा 25% और महंगा वाला स्पीड पोस्ट
- रजिस्टर्ड पोस्ट की शुरुआत 25.96 रुपए से होती थी, फिर हर 20 ग्राम के लिए 5 रुपए ज्यादा लगते थे
- स्पीड पोस्ट 50 ग्राम तक के पार्सल के लिए 41 रुपए से शुरू होता है, 25% महंगा है

-ब्यूरो

नई दिल्ली। भारत सरकार का डाक विभाग अब रजिस्टर्ड पोस्ट सेवा बंद कर रही है। डाक विभाग के एक परिपत्र के मुताबकि 1 सितंबर, 2025 से रजिस्टर्ड पोस्ट सेवा बंद हो जाएगी। उससे बीस से पत्तीस प्रतिशत महंगी स्पीड पोस्ट रह जाएगी। सरकार का दावा है कि ऐसा करने से काम करने का तरीका और भी आधुनिक हो जाएगा। अभी तक कोई महत्वपूर्ण कागजात भेजना हो, बाहर पढ़ने वाले बच्चों को बैंक ड्राफ्ट बना कर भेजना हो या रक्षा बंधन पर राखी, सबके लिए रजिस्टर्ड पोस्ट का इस्तेमाल होता रहा है। आजादी के बाद से ही रजिस्टर्ड पोस्ट बहुत ही भरोसेमंद माना जाता था। सरकार भी अपाइन्टमेंट लेटर भेजने में इसका इस्तेमाल करती रही है। अदालत भी कानूनी नोटिस इसके मार्फ़त भेजा करती थी। लेकिन अब अच्छे दिन आ जाने के कारण सब कुछ बदला जा रहा है, तो डाक विभाग क्यों पीछे रहे। डाक विभाग के सचिव व डायरेक्टर जनरल ने सभी विभागों, अदालतों, संस्थानों व लोगों को 1 सितंबर तक नई व्यवस्था में बदलने के लिए कहा है। 31 अगस्त तक दोनों सेवाएं पहले की तरह चलती रहेंगी। लेकिन 1 सितंबर से लोगों को अपनी चीजें स्पीड पोस्ट से भेजनी होंगी। इस तरह रजिस्टर्ड पोस्ट का एक युग खत्म हो जाएगा। बताया जा रहा है कि यह बदलाव इसलिए किया जा रहा है क्योंकि रजिस्टर्ड पोस्ट का इस्तेमाल बहुत कम हो गया है। लोग अब ऑनलाइन चीजें इस्तेमाल करने लगे हैं। व्हाट्सऐप व ईमेल के चलते अब पत्र लिखना या भेजना भी कम हो गया है। इसके अलावा प्राइवेट कूरियर और ई-कॉमर्स लॉजिस्टिक्स से भी रजिस्टर्ड पोस्ट का मुकाबला बढ़ गया है। डाक विभाग की ही एक और सेवा स्पीड पोस्ट है। इसे 1986 में शुरू किया गया था। रजिस्ट्री चिट्ठी की तरह ही इसमें भी बुकिंग के समय रसीद दी जाती है। इसे आप ऑनलाइन ट्रैक कर सकते हैं। हालांकि, स्पीड पोस्ट की सेवा रजिस्टर्ड पोस्ट से महंगी है। रजिस्टर्ड पोस्ट की शुरुआत 25.96 रुपये से होती थी। इसके बाद हर 20 ग्राम के लिए 5 रुपये ज्यादा लगते थे। वहीं स्पीड पोस्ट 50 ग्राम तक के पार्सल के लिए 41 रुपये से शुरू होता है। यह लगभग 20-25% महंगा है। रजिस्टर्ड पोस्ट सेवा का बंद होना एक युग का अंत होना है। रजिस्टर्ड पोस्ट काफी लोगों के लिए भरोसे का प्रतीक रहा है, विशेषकर गांवों में रहने वाले लोगों के लिए। बैंक, विश्वविद्यालय व सरकारी विभाग कानूनी रूप से मान्य कागजात भेजने के लिए रजिस्टर्ड पोस्ट का ही इस्तेमाल करते थे। लेकिन अब इसे 1 सितम्बर से इतिहास बना दिया जा रहा है।

मोहन भागवत की उद्बोधन श्रृंखला दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु व कोलकाता में

-ब्यूरो

नई दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में जन संवाद सघन करने की योजना के तहत संघ प्रमुख मोहन भागवत का व्याख्यान देश के चार मेट्रो शहर दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु व कोलकाता में होगा। शुरुआत दिल्ली से होगी। संघ ने कहा कि 26 से 28 अगस्त तक दिल्ली के विज्ञान भवन में तीन दिन की व्याख्यानमाला का आयोजन होगा जिसे संघ प्रमुख मोहन भागवत संबोधित करेंगे। संघ प्रमुख इस व्याख्यानमाला में अलग अलग क्षेत्र के जुड़े लोगों के साथ संवाद कार्यक्रम करेंगे। ऐसा पहली बार होगा जब इस स्तर पर व ज्यादा जगहों पर यह संवाद कार्यक्रम होगा। इससे पहले सितंबर 2018 में दिल्ली के विज्ञान भवन में ही तीन दिन की व्याख्यान श्रृंखला हुई थी। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने लेक्चर सीरीज के आखिरी दिन अलग अलग विषयों पर संघ की सोच से जुड़े सवालों के जवाब दिए थे। तब सिर्फ दिल्ली में ऐसा हुआ था लेकिन इस बार चार शहरों दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु व कोलकाता में संवाद कार्यक्रम होंगे। 2018 में मोहन भागवत की लेक्चर सीरीज से पहले इस तरह का कार्यक्रम 1974 में हुआ था। तब उस वक्त के सरसंघचालक बालासाहब देवरस ने पुणे की वसंत व्याख्यानमाला में संघ के संदेश व संघ के विचारों को रखा था जिसमें उन्होंने अस्पृश्यता को पाप बताया था।पहले यह माना जाता था कि आम जन का संघ के प्रमुख (सरसंघचालक) तक पहुंच नहीं है और उनसे सीधा संवाद नहीं हो सकता। इसके बाद संघ के संपर्क विभाग ने 2018 में एक प्रयोग के तौर पर सरसंघचालक का दिल्ली में संवाद कराया। संघ के अनुसार वह बहुत सफल व प्रचारित रहा , और संघ को लेकर कई तरह की भ्रांतियों को दूर करने में सहायता मिली। अब और भ्रांतियां दूर करने व संघ की पहुँच व पकड़ आम जनता में बनाने के लिए उस योजना को बड़े स्तर पर देश के 4 बड़े शहरों में किया जा रहा है। इससे संघ का वैचारिक आधार उसकी राजनीतिक शाखा भाजपा से अलग हो एक अलग व और प्रतिबद्ध जन समूह की बनेगी।

कहानी फिल्म जगत की

सुधीर बाबू और सोनाक्षी सिन्हा की 'जटाधारा' का नया पोस्टर जारी

सोमवार को मेकर्स ने 'जटाधारा' का फर्स्ट लुक पोस्टर जारी किया। इसमें सुधीर बाबू और सोनाक्षी सिन्हा का अलौकिक अवतार दिखाई दे रहा है। इंस्टाग्राम पर इस पोस्टर को शेयर करते हुए मेकर्स ने लिखा, "इंतजार खत्म, गवाह बनिए पौराणिकता के शानदार विजुअल से भरी जटाधारा का! सुधीर बाबू, सोनाक्षी सिन्हा और भगवान शंकर की एक झलक स्क्रीन पर आग लगा रही है। प्रेरणा अरोड़ा इंडियन सिनेमा को फिर से परिभाषित करने जा रहे हैं। टीजर 8 अगस्त को आएगा, इतिहास बनने जा रहा है।"इस पोस्टर से 'जटाधारा' की दुनिया से दर्शक रुबरु होते हैं, जहां मिथक और सच्चाई के बीच की उहापोह है। इसी बीच तूफानी माहौल में सुधीर बाबू का किरदार उभरता है। जो युद्ध के लिए तैयार है। अगले सीन में दसपिशाचिनी दिखती है। एक राक्षसी जो दबे हुए खजाने की रक्षा करती दिख रही है।

शिबू सोरेन के निधन पर ममता, केजरीवाल सहित कई नेताओं ने जताया शोक

11 जनवरी 1944 से 04 अगस्त 2025

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक शिबू सोरेन के निधन पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल समेत कई प्रमुख नेताओं ने शोक व्यक्त किया।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने शिबू सोरेन को झारखंड की आत्मा बताते हुए लिखा, "दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन का समाचार बेहद पीड़ादायक है। दिशोम गुरु शिबू सोरेन केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि झारखंड और आदिवासी समाज की आत्मा थे। उन्होंने आदिवासी अधिकारों, जल-जंगल-जमीन और संवैधानिक न्याय के लिए जीवन भर संघर्ष किया। उनका निधन एक युग का अंत है। उनका जाना देश की राजनीति और आदिवासी आंदोलन की अपूरणीय क्षति है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें एवं हेमंत सोरेन और समस्त परिजनों को यह दुख सहने की शक्ति दें।"

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी

ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट के जरिए बताया कि आज झारखंड के इतिहास का एक अध्याय समाप्त हो गया। उन्होंने लिखा, "मैं झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व केंद्रीय मंत्री, झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक और मेरे आदिवासी भाइयों और बहनों के गुरु दिशोम (महान नेता) शिबू सोरेन के निधन से अत्यंत दुःखी हूं। मेरे भाई, हेमंत सोरेन और उनके पूरे परिवार, उनके सभी अनुयायियों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदना।"

ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक

ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने दुख जताते हुए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, "झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक शिबू सोरेन के निधन की खबर सुनकर गहरा दुख हुआ। वे एक प्रमुख आदिवासी नेता थे और उन्हें आदिवासी व वंचित वर्ग के अधिकारों के लिए उनके समर्पण के लिए याद किया जाएगा। इस दुःख की घड़ी में मेरी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं उनके शोक संतप्त परिवार, मित्रों और अनुयायियों के साथ हैं।"

टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी

ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, "शिबू सोरेन के निधन से अत्यंत दुखी हूं। एक ऐसे महान व्यक्तित्व जिनकी आवाज ने आदिवासियों की पीढ़ियों को शक्ति दी और जिनके संघर्ष ने झारखंड की आत्मा को आकार दिया। जमीनी स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक का उनका सफर साहस, त्याग और अपने लोगों के प्रति अटूट विश्वास की कहानी है। उनकी अनुपस्थिति एक ऐसा शून्य छोड़ गई है जिसे भरा नहीं जा सकता। हेमंत सोरेन और उनके प्रियजनों और झारखंड के लोगों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं।"

राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट की फटकार पर किरेन रिजिजू बोले-

झूठा नैरेटिव फैला रही कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के संसद में चीन और भारतीय सेना को लेकर दिए बयान पर सोमवार को सर्वोच्च न्यायालय ने फटकार लगाई। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कांग्रेस और 'लेफ्ट इकोसिस्टम' के लोगों पर झूठे नैरेटिव फैलाने का आरोप लगाया।

केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर संसद में दिए अपने वक्तव्य की एक वीडियो क्लिप शेयर की। वीडियो में वे स्पष्ट बताते हुए दिख रहे हैं कि 1962 के बाद से चीन ने भारत की एक इंच भी जमीन नहीं कब्जाई है। उन्होंने वीडियो शेयर करते हुए एक्स पर लिखा, "सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी को उनके गैर-जिम्मेदाराना दावे के लिएa फटकार लगाई कि चीन ने भारतीय जमीन पर कब्जा कर लिया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि आपको कैसे पता कि 2000 वर्ग किलोमीटर भारतीय जमीन पर चीनियों ने कब्जा कर लिया है? एक सच्चा भारतीय ऐसा नहीं कहेगा।"

रिजिजू ने लिखा, "भारत की सीमाओं के संबंध में कांग्रेस और लेफ्ट इकोसिस्टम के झूठे नैरेटिव के कारण कोई भ्रम नहीं होना चाहिए। 1962 के बाद, अरुणाचल प्रदेश में एक इंच जमीन चीन ने नहीं ली है।"

केंद्रीय मंत्री ने संसद में दिए अपने भाषण की क्लिप शेयर की। इसमें वे बोल रहे हैं, "जिस प्रदेश (अरुणाचल प्रदेश) से मैं आता हूं, वहां पर चीन कितने अंदर घुसकर और कब्जा किए हुए बैठा है, इस पर मैं साफ करना चाहता हूं कि जब 10 अक्टूबर, 1962 में चीन का आक्रमण हुआ, उस समय उनकी आर्मी असम के मिसामारी तक पहुंची। फिर सीजफायर के बाद 21 नवंबर को वे सभी वापस चले गए।" उन्होंने बताया, "चीन ने जिस जगह पर कब्जा करके रखा हुआ है, वह लोंगजू है। 1959 में जब हमारी असम राइफल का वहां पर कैंप था, उस समय किया था। चीन ने इसके अतिरिक्त थोड़ा सा और 1962 में लिया। 1962 के बाद से देश में कई सरकारें आईं, लेकिन इस दौरान चीन ने हमारी एक इंच भी जमीन नहीं ली।

53 दिन में ही पटना के डबल डेकर फ्लाईओवर की खुली पोल

एजेंसी। पटना

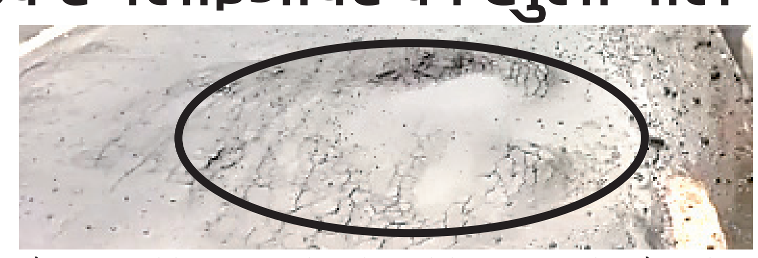

पटना में 422 करोड़ रुपये की लागत से बने डबल-डेकर फ्लाईओवर का एक हिस्सा उद्घाटन के दो महीने बाद ही रविवार को भारी बारिश के कारण धंस गया। इस डबल-डेकर फ्लाईओवर का निर्माण अशोक राजपथ पर हमेशा जाम की समस्या से निजात दिलाने के लिए किया गया था और इसका उद्घाटन इसी साल जून में हुआ था। समाचार एजेंसी एएनआई द्वारा साझा किए गए एक वीडियो में राज्य की राजधानी के पहले एलिवेटेड कॉरिडोर पर एक गड्ढा दिखाई दे रहा है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 11 जून को इस नवनिर्मित फ्लाईओवर का उद्घाटन किया था। गांधी मैदान में कारगिल चौक से पटना मेडिकल कॉलेज और अस्पताल (पीएमसीएच) होते हुए साइंस कॉलेज तक 2.2 किलोमीटर का फ्लाईओवर अशोक राजपथ पर भीड़भाड़ कम करने के लिए बनाया गया था। मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) के एक बयान के अनुसार, यह फ्लाईओवर बिहार राज्य पुल निर्माण निगम लिमिटेड द्वारा 422 करोड़ की लागत से बनाया गया है। अशोक राजपथ क्षेत्र में चार मंजिलें बनाई जाएँगी—दो फ्लाईओवर, एक भूतल सर्विस रोड और एक भूमिगत मेट्रो प्रणाली। पटना में पिछले 24 घंटों से लगातार बारिश हो रही है, जिससे कई प्रमुख सड़कें और निचले इलाके जलमग्न हो गए हैं। कंकड़बाग, राजेंद्र नगर, एग्ज़िबिशन रोड और गांधी मैदान सहित कई इलाकों में जलभराव की सूचना मिली है। मौसम विभाग ने अगले 48 घंटों के लिए पटना, गयाजी, जमुई, औरंगाबाद, खगड़िया, बांका, वैशाली, समस्तीपुर, शेखपुरा, लखीसराय, पूर्वी चंपारण, अरवल, पश्चिमी चंपारण और नवादा समेत बिहार के कई जिलों के लिए 'ऑरेंज' अलर्ट जारी किया है।

मणिपुर में आठ उग्रवादी गिरफ्तार

नई दिल्ली। मणिपुर में सुरक्षाबलों ने विभिन्न जिलों से चार प्रतिबंधित संगठनों के आठ उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने सोमवार को बताया कि सभी गिरफ्तारियां रविवार को की गयीं। सुरक्षाबलों ने इंफाल पश्चिम एवं पूर्व तथा बिष्णुपुर जिलों में विभिन्न स्थानों से केसीपी (पीडब्ल्यूजी) के पांच सक्रिय कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया। पुलिस ने एक बयान में बताया कि ये सभी वसूली, गोलीबारी, अपहरण और हथियार एवं गोला-बारूद रखने में शामिल थे। उनकी पहचान एम प्रेमकुमार सिंह (28), यमबेम शीतल सिंह (39), सोरोखाइबाम इनाओटन सिंह (38), खोंगबंताबम इनाओचा देवी (52) और ओइनम नाओबा सिंह (18) के रूप में हुई है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कल कर्तव्य भवन का करेंगे उद्घाटन

- 1.5 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र में फैला होगा और इसमें दो बेसमेंट और सात मंजिलें (भूतल प्लस 6 मंजिल) होंगी।

एजेंसी। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 6 अगस्त को दोपहर लगभग 12.15 बजे दिल्ली के कर्तव्य पथ स्थित कर्तव्य भवन जाकर उसका उद्घाटन करेंगे। इसके बाद वे शाम लगभग 6.30 बजे कर्तव्य पथ पर एक सार्वजनिक कार्यक्रम को संबोधित करेंगे।

यह प्रधानमंत्री के आधुनिक, कुशल और नागरिक-केंद्रित शासन के दृष्टिकोण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा। कर्तव्य भवन-3, जिसका उद्घाटन किया जा रहा है, सेंट्रल विस्टा के व्यापक परिवर्तन का एक हिस्सा है। यह कई आगामी कॉमन सेंट्रल सेक्रेटेरियट भवनों में से पहला है, जिसका उद्देश्य प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित और चुस्त शासन को सक्षम बनाना है।

यह परियोजना सरकार के व्यापक प्रशासनिक सुधार के एजेंडे का प्रतीक है। मंत्रालयों को एक साथ स्थापित करके और अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर को अपनाकर साझा केंद्रीय सचिवालय अंतर-मंत्रालयी समन्वय में सुधार लाएगा, नीति कार्यान्वयन में तेजी लाएगा और एक उत्तरदायी प्रशासनिक इकोसिस्ट्म को बढ़ावा देगा।

वर्तमान में कई प्रमुख मंत्रालय 1950 और 1970 के दशक के बीच निर्मित शास्त्री भवन, कृषि भवन, उद्योग भवन और निर्माण भवन जैसी पुरानी इमारतों से काम करते हैं, जो अब संरचनात्मक रूप से पुरानी और अक्षम हो चुकी हैं। इन नए भवनों की मरम्मत और रखरखाव की लागत कम होगी, उत्पादकता बढ़ेगी, कर्मचारियों के हितों में सुधार होगा और समग्र सेवा वितरण में सुधार होगा।

प्रयागराज में गंगा-यमुना का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर

उत्तरप्रदेश। प्रयागराज जिले में पिछले कई दिनों से जारी भारी बारिश के बीच गंगा और यमुना का जलस्तर शनिवार से ही खतरे के निशान 84.73 मीटर से ऊपर बना हुआ है जिससे जिले के 200 से अधिक गांव और शहर की करीब 60 बस्तियों में पानी भर गया है। जिला प्रशासन की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक, सोमवार को सुबह आठ बजे यमुना नदी का जलस्तर नैनी में खतरे के निशान से ऊपर 86.04 मीटर दर्ज किया गया, जबकि गंगा नदी का जलस्तर फाफामऊ में 86.03 मीटर दर्ज किया गया। जिला प्रशासन ने नगर क्षेत्र में बाढ़ प्रभावित क्षेत्र के नागरिकों के लिए बाढ़ राहत शिविर केंद्र के तौर पर बनाए गए विद्यालयों और ग्रामीण क्षेत्रों में बाढ़ ग्रस्त प्रभावित विद्यालयों में अध्यापन कार्य स्थगित कर दिया है। नगर में सदर तहसील के अंतर्गत आने वाले 107 वार्ड एवं मोहल्ले बाढ़ से प्रभावित हैं जिनमें राजापुर, बेली कछार, चांदपुर सलोरी, गोविंदपुर, छोटा बघाड़ा और बड़ा बघाड़ा प्रमुख रूप से प्रभावित हैं। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में फूलपुर तहसील के 18, सोरांव के आठ, मेजा के 12, बारा तहसील के आठ और हंडिया तहसील के छह गांव बाढ़ की चपेट में हैं।

बिहार में शिक्षक बहाली में लागू होगी डोमिसाइल पॉलिसी : सीएम नीतीश

एजेंसी। पटना

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को एक बड़े नीतिगत बदलाव की घोषणा की जिसका उद्देश्य भविष्य में शिक्षक भर्ती में राज्य के निवासियों को प्राथमिकता देना है। बिहार के मुख्यमंत्री ने कहा कि यह कदम राज्य की शिक्षा व्यवस्था को मज़बूत करने के व्यापक प्रयास का हिस्सा है। नीतीश ने X पर एक पोस्ट में कहा नवंबर 2005 में सरकार बनने के बाद से, हम शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए लगातार काम कर रहे हैं। शिक्षा व्यवस्था को मज़बूत करने के लिए बड़ी संख्या में शिक्षकों की नियुक्ति की गई है। उन्होंने आगे कहा कि शिक्षा विभाग को शिक्षक नियुक्तियों में बिहार के निवासियों को वरीयता देने के लिए संबंधित नियमों में संशोधन करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने लिखा, "यह टीआरई-4 से लागू होगा। टीआरई-4 वर्ष 2025 में और टीआरई-5 वर्ष 2026 में आयोजित किया जाएगा।" नीतीश ने यह भी पुष्टि की कि एसटीईटी परीक्षा टीआरई-5 से पहले आयोजित की जाएगी। यह घोषणा राज्य द्वारा मुख्यमंत्री विद्युत उपभोक्ता सहायता योजना के तहत लगभग 1.86 करोड़ उपभोक्ताओं को 125 यूनिट मुफ्त बिजली प्रदान करने की योजना को लागू करने के एक महीने से भी कम समय बाद आई है। इससे पहले नीतीश कुमार सरकार ने शुक्रवार को सरकारी स्कूलों में कार्यरत रसोइयों, रात्रि प्रहरियों और शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य अनुदेशकों का मानदेय दोगुना कर दिया।

यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड / URANIUM CORPORATION OF INDIA LIMITED
[भारत सरकार के उद्यम] (A Government of India Enterprise)
(CIN: U 12000 JH 1967 GOI 000806)
पीओ : जादूगोड़ा माइंस, जिला पूर्वी सिंहभूम / PO : Jaduguda Mines, Dist : East Singhbhum,
झारखंड – 832 102/Jharkhand – 832 102

विज्ञापन संख्या / ADVT.NO. - UCIL-05-2025

यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड [यूसीआईएल), परमाणु ऊर्जा विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम कंपनी आवश्यकता और उम्मीदवार के प्रदर्शन के आधार पर 01 (एक) वर्ष के विस्तार के प्रावधान के साथ 01 (एक) वर्ष के अवधि के लिए अनुबंध के आधार पर निम्नलिखित पद के लिए भारतीय नागरिको से आवेदन ऑमंत्रित करता है। उपर्युक्त पद के लिए आवश्यक पात्रता मानदंड और अन्य विवरण निम्नानुसार है।

UCIL, a Public Sector Enterprise under the administrative control of Department of Atomic Energy invites applications from Indian Citizens for the following post on contract basis for a period of 01(One) year with a provision of extension of 01(One) year based on requirement of the Company and performance of the candidate. The required eligibility criteria and other details for the above mentioned post are furnished as under:

क्र. सं. Sl. No.	पद का नाम Name of the post	पदों की संख्या और श्रेणी No. of post & category	20.08.2025 तक न्यूनतम योग्यता Minimum Qualification as on 20.08.2025	20.08.2025 तक वांछनीय अनुभव Experience as on 20.08.2025
01	Minig Mate (on contract)	55 UR-18 EWS - 10 OBC (NCL) -01 SC-06 ST-20	**For Underground Mines:** Valid Unrestricted Mining Mate Certificate of Competency/ Unrestricted Foreman Certificate of Competency/ Unrestricted Second Class Managers Certificate of Competency/ Unrestricted First Class Managers Certificate of Competency Metalliferous Mines issued by DGMS for **16 vacancies out of 55 will have following Qualification:** Valid Restricted/Unrestricted Mining Mate Certificate of Competency/ Restricted/Unrestricted Certificate Foreman of Competency/Restricted/ Unrestricted Second Class Managers Certificate of Competency/ Restricted/Unrestricted First Class Managers Certificate of Competency for Metalliferous Mines issued by DGMS	Minimum 03 (Three) years experience in Metalliferous Mines:

More details are available at UCIL website: www.Uraniumcorp.in
उपरोक्त विज्ञापन की विस्तृत जानकारी यूसिल के वेबसाइट www.Uraniumcorp.in पर उपलब्ध है।

cbc48134/12/0019/2526

पेज एक के शेष

अंतिम जोहार गुरुजी...

वे किडनी की बीमारी से पीड़ित थे और डेढ़ महीने पहले उन्हें स्ट्रोक भी हुआ था। पिछले एक महीने से वे लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर थे। 81 वर्षीय शिबू सोरेन लंबे समय से अस्पताल में नियमित रूप से इलाज करा रहे थे।

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने 24 जून को अपने पिता के अस्पताल में भर्ती होने पर कहा था, 'उन्हें हाल ही में यहां भर्ती कराया गया था, इसलिए हम उनसे मिलने आए थे। उनकी स्वास्थ्य समस्याओं की जांच की जा रही है।' ज्ञात हो कि शिबू सोरेन पिछले 38 वर्षों से झामुमो के नेता थे और उन्हें पार्टी के संस्थापक संरक्षक के रूप में जाना जाता है।

रामगढ़ के नेमरा....

झारखंड राज्य का गठन हुआ। राज्य गठन के बाद शिबू सोरेन तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री बने - 2005, 2008 और 2009 में। हालांकि, राजनीतिक अस्थिरता और गठबंधन की खींचतान के कारण उनका कार्यकाल लंबा नहीं चल सका। इसके बावजूद उन्होंने आदिवासी कल्याण, रोजगार और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए कई पहल की। उन्होंने केंद्र में कोयला मंत्री के रूप में भी सेवा दी। उनकी राजनीतिक यात्रा में कई उतार-चढ़ाव भी आए। भ्रष्टाचार और हत्या जैसे गंभीर मामलों में वे आरोपित हुए, हालांकि बाद में कई मामलों में वे बरी भी हुए।

पीएम मोदी पहुंचे गंगाराम...

प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शेयर करते हुए लिखा, शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि देने सर गंगाराम अस्पताल गया। इस दौरान उनके परिवार से भी मुलाकात हुई। मेरी संवेदनाएं हेमंत सोरेन, कल्पना सोरेन और शिबू सोरेन के सभी प्रशंसकों के साथ हैं। इससे पहले, पीएम मोदी ने शिबू सोरेन के निधन पर गहरा दुख जताया। इस दौरान उन्होंने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से फोन पर बात कर संवेदना प्रकट की। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बातचीत की जानकारी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर दी। पीएम मोदी ने पोस्ट में लिखा, शिबू सोरेन एक जमीनी नेता थे, जिन्होंने जनता के प्रति अटूट समर्पण के साथ सार्वजनिक जीवन में ऊंचाइयों को छुआ। वे आदिवासी समुदायों, गरीबों और वंचितों के सशक्तिकरण के लिए विशेष रूप से समर्पित थे। उनके निधन से दुख हुआ। मेरी संवेदनाएं उनके परिवार और प्रशंसकों के साथ हैं। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से बात की और संवेदना व्यक्त की।

जन चेतना की मशाल....

यद्यपि वे अंतिम समय में कार्यक्रम में शरीक नहीं हो सके, पर कुछ ही दिन बाद वे डाल्टनगंज स्थित राष्ट्रीय नवीन मेल के प्रेस कार्यालय पहुँचे और प्रधान संपादक सुरेश बजाज से आत्मीय मुलाक़ात की।

इस मुलाक़ात के दौरान उन्होंने बड़े ही भावुक और स्पष्ट शब्दों में कहा-

"पलामू जैसे पिछड़े इलाके में अख़बार निकालना, बालू में धान उगाने जैसा कठिन कार्य है।"

उनका यह कथन उस दौर की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियों की गहराई को उजागर करता है। ऐसे कठिन परिदृश्य में भी पत्रकारिता का संकल्प लेना किसी साधारण प्रयास का परिणाम नहीं था, बल्कि यह एक साहसी सोच, अदम्य आत्मबल और बदलाव के प्रति अटूट आस्था का प्रतीक था।

दिशोम गुरु ने सुरेश बजाज जी के संघर्ष, दूरदृष्टि और सामाजिक प्रतिबद्धता की सराहना करते हुए उन्हें भविष्य का युगद्रष्टा बताया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय नवीन मेल केवल समाचारों का माध्यम नहीं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक विचारधारा, एक चेतना और एक सशक्त सामाजिक आंदोलन का स्वरूप लेगा। वास्तव में, यह अख़बार उन युवाओं के लिए आशा और प्रेरणा का स्त्रोत बन गया, जो कलम को परिवर्तन का औजार मानते हैं। यह सिर्फ छपाई का कार्य नहीं था, बल्कि इसमें संकल्प की रोशनी, संघर्ष की स्याही और समाज के प्रति समर्पण की भावना शामिल थी।

आज दिशोम गुरु हमारे बीच भले ही शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं हैं, लेकिन उनके विचार, उनका आशीर्वाद और उनका दिया मार्गदर्शन आज भी हमारे कार्यों को दिशा दे रहा है।

जननायक को भावभीनी श्रद्धांजलि और शत-शत नमन।

शिबू सोरेन के निधन...

वह झारखंड के सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य में एक प्रभावशाली व्यक्ति थे।

उप सभापति ने कहा, 'दिशोम गुरु' के रूप में जाने जाने वाले शिबू सोरेन आम गरीब लोगों के बीच में गुरुजी के रूप में लोकप्रिय थे। वह एक जमीनी कार्यकर्ता थे। वह नवगठित राज्य (झारखंड) के सबसे सम्मानित नेताओं में से एक बने। उन्होंने आजीवन वंचितों के हितों व अधिकार के लिए काम किया। अपने लंबे राजनीतिक जीवन में शिबू सोरेन आठ बार लोकसभा सदस्य के रूप में चुने गए। उपसभापति ने कहा कि उन्होंने लोकसभा में झारखंड की जनता का ईमानदारी व निष्ठा से प्रतिनिधित्व किया। इसके अलावा, वह तीन बार राज्यसभा के सदस्य भी रहे और वह मौजूदा समय में भी राज्यसभा के सदस्य थे। राज्यसभा में उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा गया कि अपने संसदीय जीवन में उन्होंने विशेष रूप से सामाजिक न्याय, आदिवासी कल्याण व ग्रामीण विकास जैसी बहस और चर्चा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अंतिम जोहार

शिबू सोरेन से जुड़ी 15 तस्वीरें...

1 रामगढ़ जिले के नेमरा में 11 जनवरी 1944 शिबू सोरेन का जन्म हुआ था। ये उनकी युवा अवस्था की फोटो है।

2 शिबू सोरेन ने बिनोद बिहारी महतो और एके राय के साथ मिलकर 4 फरवरी 1973 को झारखंड मुक्ति मोर्चा की स्थापना की थी।

3 पुराने सहयोगी निर्मल महतो (शिबू सोरेन की दाईं ओर) के साथ गुरुजी की पुरानी फोटो। निर्मल महतो झारखंड मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष भी बने थे।

4 अलग झारखंड राज्य के लिए शिबू सोरेन (एकदम बाएं) ने लंबी लड़ाई लड़ी थी। ये आंदोलन के दौरान की तस्वीर है।

5 एके राय के साथ शिबू सोरेन। राय, शिबू से जुड़ने से पहले कम्युनिस्ट पार्टी के नेता थे।

6 महाजन और झारखंड आंदोलन के दौरान शिबू सोरेन और उनके साथी।

7 शिबू सोरेन ने गोला से धनकटनी आंदोलन शुरू किया यह धीरे-धीरे बोकारो से होते हुए टुंडी तक जा पहुंचा। यह तस्वीर उसी दौर की है।

8 तस्वीर 29 जनवरी 2006 की है, जब तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने शिबू सोरेन को केंद्रीय मंत्री पद की शपथ दिलाई थी।

9 शिबू सोरेन की पहचान जमीनी नेता के तौर पर होती थी। मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री रहते हुए भी उनकी जीवनशैली साधारण ही थी।

पक्ष से लेकर विपक्ष तक ने गुरुजी के निधन को अपूरणीय क्षति बताया

राजनेताओं ने गुरुजी को कहा, अंतिम जोहार

रांची। आदिवासियों के प्रणेता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन से हर ओर शोक की लहर है। झारखंड की राजनीति में भी आज सन्नाटा है। सभी पार्टियों के नेता शोक संतप्त हैं। शिबू सोरेन के निधन की खबर के बाद विधानसभा को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया। विधानसभा पहुंचे विधायकों और मंत्रियों ने शिबू सोरेन के निधन पर शोक प्रकट किया।

गुरुजी हमारे लिए पिता तुल्य थे : इरफान अंसारी

स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने कहा कि झारखंड के निर्माता, आदिवासी समाज के पुरोधा और गरीबों के मसीहा गुरुजी अब हमारे बीच नहीं रहे। झारखंड का सूरज सोमवार की सुबह उगने से पहले ही हमेशा के लिए डूब गया। गुरुजी ने आदिवासियों को अन्धकार से निकला कर अधिकार और आत्मसम्मान के रौशनी में लाया। झारखंड को अलग राज्य का दर्जा दिलाया। गुरुजी हमारे लिए पिता तुल्य थे। उनका यूं अचानक चले जाना, न सिर्फ झारखंड बल्कि पूरे देश के लिए अपूरणीय क्षति है।

शिबू सोरेन के निधन से राज्य में शोक की लहर : दीपिका

झारखंड की मंत्री दीपिका पांडे सिंह ने कहा कि मुझे लगता है कि पूरे राज्य में शोक व्याप्त हो गया है। उन्होंने कहा 'दिशोम गुरु' शिबू सोरेन सिर्फ एक नाम नहीं बल्कि एक आंदोलन हैं। उनकी विरासत हमारे विचारों और हमारे काम के जरिए हमेशा जिंदा रहेगी। मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं और ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि उनके परिवार को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करें। आप उनके नाम के बिना झारखंड की कल्पना भी नहीं कर सकते। लेकिन हम समझ सकते हैं कि एक पिता को खोने का क्या मतलब होता है।

आपका आदर्श और विचार सदैव हमारा मार्गदर्शन करेंगे : चंपाई सोरेन

पूर्व सीएम चंपाई सोरेन ने कहा कि दिशोम गुरू शिबू सोरेन के निधन की दुखद सूचना से शोक में हूं। मरांग बुरु दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें। यह एक युग का अंत है। झारखंड आंदोलन के दौरान पहाड़ों, जंगलों एवं सुदूरवर्ती गांवों से लेकर विधानसभा तक, आपके साथ बिताये पल याद आ रहे हैं। चंपाई ने आगे लिखा कि महाजनी प्रथा एवं नशे के खिलाफ आदिवासियों, मूलवासियों तथा शोषित-पीड़ित जनता के संघर्ष को जिस प्रकार आपने दिशा दी, उसे आने वाली पीढ़ियां सदैव याद रखेंगी। आप हमेशा हमारे दिल में रहेंगे। आपके आदर्श एवं विचार सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। झारखंड की आम जनता के हितों को लेकर जो संघर्ष आपने शुरू किया था, वह जीवनपर्यंत जारी रहेगा।

दिशोम गुरु का जाना बड़ी क्षति है : सुप्रियो भट्टाचार्य

झामुमो के केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने एक शोक संदेश जारी कर इसे "पार्टी, झारखंड राज्य एवं देश के आदिवासी-मूलवासी, शोषित-दलित, मजदूर-किसान, महिला एवं जनसमुदाय के लिए हिमालय के स्खलन समान क्षति" बताया है। भट्टाचार्य ने कहा कि गुरुजी ने अपने जीवन में सदैव धारा के विपरीत जाकर संघर्ष किया और कभी पराजित नहीं हुए। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर दबे-कुचले समाज ने अपनी पहचान, सम्मान और अधिकार प्राप्त किया।

दिशोम गुरु का जाना मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति : रघुवर

पूर्व सीएम रघुवर दास ने कहा सोशल मीडिया में शिबे सोरेन के साथ फोटो पोस्ट कर लिखा कि झारखंड आंदोलन के अगुआ, दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन से मर्माहत हूं, स्तब्ध हूं। उनका जाना मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति है। वह मेरे पितातुल्य रहे हैं। सदैव उनका सानिध्य मुझे मिला। उनके मार्गदर्शन में मुझे उपमुख्यमंत्री के पद पर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मरांग बूरू पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। मेरे जैसे उनके लाखों प्रशंसकों, उनके समर्थकों, उनके परिजनों को यह पीड़ा सहने की शक्ति प्रदान करें।

दिशोम गुरु को सीता सोरेन ने दी श्रद्धांजलि कहा- हमने अपना जीवनदाता खोया

दिशोम गुरु शिबू सोरेन की बड़ी बहु सह पूर्व विधायक सीता सोरेन ने कहा है कि बाबा सिर्फ हमारे घर के मुखिया नहीं थे। हमारे जीवन के प्रकाश थे। हमारे अपने, हमारे मार्गदर्शक और हमारे सबसे बड़े सहारे। आज जब वो हमारे बीच नहीं हैं, तो ऐसा लग रहा है जैसे एक पूरा युग समाप्त हो गया हो। उनके बिना ये घर वैसा नहीं रहेगा, उनकी हंसी, उनका स्नेह, उनकी डांट तक, सब कुछ अब यादों में रह गया है। झारखंड ने एक महान सपूत खोया है, लेकिन हमने अपना गुरू, अपना पिता, अपना जीवनदाता खोया है।

दिशोम गुरु जमीन से जुड़े नेता थे, उनका जाना गहरा आघात : शशिभूषण मेहता

भाजपा विधायक शशिभूषण मेहता ने कहा कि दिशोम गुरु जमीन से जुड़े हुए एक संघर्षशील नेता थे। उनका जाना झारखंड के लिए गहरा आघात है। यह क्षति निकट भविष्य में पूरी नहीं की जा सकती। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवं उनके परिवार को ईश्वर शक्ति प्रदान करें।

गुरुजी ने झारखंड की आवाज को सदैव बुलंदी से रखा : कांग्रेस विधायक श्वेता सिंह

कांग्रेस विधायक श्वेता सिंह ने सोशल मिडिया में लिखा कि आदरणीय शिबू सोरेन हमारे अभिभावक तुल्य थे। झारखंड की आवाज को उन्होंने सदैव बुलंदी से रखा। उनका जाना हम सभी के लिए बेहद दुखद है। हम इस दुख की घड़ी में हेमंत सोरेन और उनके परिवार के साथ हैं।

गुरुजी ने जीवन भर वंचितों के लिए लड़ाई लड़ी : सत्येंद्र तिवारी

भाजपा विधायक सत्येंद्र नाथ तिवारी ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि गुरूजी का निधन झारखंड के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने राजनीति में जो मिशाल कायम की, उसे भर पाना मुश्किल है। गुरुजी ने जीवनभर गरीबों और वंचितों के हक के लिए लड़ाई लड़ी।

गुरुजी एक व्यक्ति नहीं, विचार और सिद्धांत थे : राजेश कच्छप

कांग्रेस विधायक राजेश कच्छप ने कहा कि गुरुजी का निधन एक युग का अंत है। वह एक व्यक्ति नहीं बल्कि विचार और सिद्धांत थे। उन्होंने जल, जंगल, जमीन के अधिकार के लिए तपस्या की और वंचितों की आवाज बने। उन्हें युगों तक याद किया जाएगा।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के संघर्षों का परिणाम झारखंड : प्रदीप यादव

कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रदीप यादव ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि वीर शिबू' एक नाम नहीं, संघर्ष का पर्याय हैं। उनकी आवाज जंगल से उठती थी और महलों तक गूंजती थी। उन्होंने आदिवासी, दलित और पिछड़ों के हक की लड़ाई लड़ी। झारखंड उन्हीं के संघर्ष का परिणाम है। उनके दिखाए रास्ते पर चलना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सबसे बड़े आंदोलनकारी थे गुरुजी : जयराम

विधायक जयराम महतो ने शिबू सोरेन का चले जाना झारखंड के लिए क्षति है। उन्होंने कहा कहा कि गुरुजी के बारे में बचपन से सुनता आया हूं। वह 1970 के बाद से सबसे बड़े आंदोलनकारी थे। इस घटना से झारखंड की जनता को मर्माहत करनेवाली है।

गुरुजी का जाना अस्वीकार्य है : नीरा यादव

विधायक नीरा यादव ने कहा दिशोम गुरु के निधन की सूचना मिलने से मर्माहत हूं। वे राज्य की जनता की आवाज थे। भगवान उन्हें अपने श्रीचरणों में जगह दें। उन्होंने कहा दिशोम गुरु की तबियत पहले से ही ख़राब थी हालांकि वो इस हाल में चले जायेंगे स्वीकारना मुश्किल है।

राजद ने दिशोम गुरु को दी श्रद्धांजलि

राज्य निर्माण के अगुआ संघर्ष व आंदोलन के जीवंत प्रतीक झारखंड शब्द का नामांकरण करने वाले महानायक गुरुजी शिबू सोरेन का निधन होने से झारखंड अनाथ हुआ शून्य हुआ शोकाकुल गमगीन माहौल हुआ। प्रदेश राजद प्रवक्ता कैलाश यादव ने गुरुजी के साथ एक पुराना तस्वीर साझा कर राजद की ओर से श्रद्धेय शिबू सोरेन के निधन पर गहरा शोक संवेदना व्यक्त किया हैं।

दिशोम गुरु को भाकपा ने दी श्रद्धांजलि

भाकपा ने गुरू जी को श्रद्धांजलि दी है। दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) ने गहरा शोक व्यक्त किया है। पार्टी ने इसे झारखंड की अपूरणीय क्षति करार देते हुए कहा कि गुरुजी का जाना शोषितों, दलितों और आदिवासियों की एक मजबूत आवाज का खामोश हो जाना है। मौके पर राज्य सचिव महेंद्र पाठक, राष्ट्रीय परिषद सदस्य पीके पांडे, जिला सचिव अजय कुमार सिंह समेत कई नेता और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

झारखंड की अस्मिता के लिए समर्पित रहा गुरुजी का जीवन : चंद्र प्रकाश

रांची। गिरिडीह के सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी ने झारखंड आंदोलन के अग्रणी नेता, पूर्व केंद्रीय मंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि उनके निधन का समाचार अत्यंत दुखद है। उनका संपूर्ण जीवन सामाजिक न्याय, आदिवासी उत्थान और झारखंड की अस्मिता के लिए समर्पित रहा। उन्होंने संघर्षों से राष्ट्र और राज्य को जो दिशा दी, वह हमेशा प्रेरणा देती रहेगी। खासकर महाजनी प्रथा और नशा के विरुद्ध उनके आंदोलन से सामाजिक चेतना आई। उनके निधन से एक युग का अंत हो गया है। यह झारखंड और देश की राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने दिशोम गुरु को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

दिशोम गुरु : एक युग की मौन गाथा

डॉ. सूरज मंडल

पूर्व सांसद, पूर्व जैक उपाध्यक्ष, झारखण्ड मजदूर मोर्चा के अध्यक्ष, अखिल भारतीय संपूर्ण क्रांति राष्ट्रीय मंच के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष एवं वरिष्ठ भाजपा नेता.

समय के साथ-साथ कुछ यादें धुंधली हो जाती हैं, तो कुछ और भी ज्यादा चमकने लगती हैं — जैसे किसी चिरपरिचित चेहरे की झलक, जो जीवन के कठिन मोड़ों पर साया बनकर साथ चलता है। मेरे लिए वह चेहरा है — दिशोम गुरु शिबू सोरेन का।

उनसे जुड़ी स्मृतियाँ किसी एक रंग की नहीं हैं। इनमें उजली मुस्कानें हैं, तो धुंधली नाराज़गियाँ भी। कहीं आत्मीयता है, तो कहीं तल्ख़ टकराव। और इन्हीं तमाम रंगों से बनी है वह तस्वीर, जिसे मैं जीवन भर अपने भीतर संजोए हूँ।

करीब पचास साल पहले की बात है। संथाल परगना की मिट्टी में तब हलचल थी। सामाजिक अन्याय, शोषण और सत्ता की कठोरताओं के विरुद्ध जनभावना उबाल पर थी। मेरी सक्रियता कुछ स्थानीय शक्तियों को खटकने लगी थी। महाजनों ने मुझे "रुकावट" करार देकर शिबू सोरेन

तक अपनी शिकायतें पहुँचाई — और उनके समर्थन में चावल, दाल, तेल और नकदी भी। शायद इसी प्रलोभन का असर था कि एक जनसभा में गुरुजी ने एलान कर दिया — "मुझे सूरज मंडल का सिर चाहिए।

जब ये बात मेरे कानों तक पहुँची, तो मैं ठिठका नहीं। सीधा नंदलाल सोरेन के घर जा पहुँचा, जहाँ गुरुजी ठहरे हुए थे। बताया गया कि वे नदी में स्नान कर रहे हैं। जब वे लौटे, तो मैंने मुस्कुराकर कहा — "आपको मेरा सिर चाहिए था, तो लीजिए, मैं स्वयं आ गया हूँ।" इस पर उन्होंने अपने कपड़े एक ओर फेंके और मुझे गले से लगा लिया।

आज झारखंड का हिमालय पहाड़ टूट कर गिर गया: मुस्ताक

रांची। जिला संयोजक प्रमुख मुस्ताक आलम ने गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि आज झारखंड का हिमालय पहाड़ टूटकर गिर गया है। इस हिमालय पहाड़ के टूटकर गिरने से जो क्षति हुई है इसका अंदाजा लगाना असंभव है। यह अपूर्णीय क्षति है इसकी भरपाई वर्षों वर्ष तक नहीं हो पाएगी। एक योद्धा जो अपनी जवानी के दिन संघर्ष करते हुए गुजारे, जब उनके पिता की हत्या हो गई थी तो उन्होंने महाजनी आंदोलन चलाया और जंगल चले गए, महाजनी आंदोलन में सफल रहे।

शिबू सोरेन के निधन पर रास में दी गई श्रद्धांजलि

रांची। नई दिल्ली

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन का सोमवार को दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में निधन हो गया। वे राज्यसभा के मौजूदा सदस्य थे। उनके निधन पर राज्यसभा में सभी सांसदों ने शोक जताया और दो मिनट का मौन रखा। इसके बाद सदन की कार्यवाही पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई।

सोमवार को राज्यसभा की कार्यवाही शुरू होते ही उपसभापति हरिवंश नारायण ने सदन को राज्यसभा के मौजूदा सदस्य की मृत्यु का समाचार दिया। उपसभापति ने कहा कि गहरे दुख के साथ यह सूचित करना है कि मौजूदा राज्यसभा सदस्य शिबू सोरेन का निधन हो गया है। उपसभापति ने कहा, शिबू सोरेन आम लोगों के बीच में गुरुजी के नाम से लोकप्रिय थे। उनका जन्म झारखंड के हजारीबाग जिले के एक गांव में 11 मई 1944 को हुआ था। वह मैट्रिक पास थे और पेशे से एक किसान थे। उन्होंने आदिवासी समुदाय के अधिकारों और उनके उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। झारखंड राज्य के निर्माण के आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने आजीवन वंचितों के अधिकार की लड़ाई लड़ी व उनके लिए सेवा भाव से कार्य किया। वह एक वरिष्ठ और विशिष्ट आदिवासी नेता थे।

स्मृति शेष : अंतिम जोहार, गुरुजी आपसा नेता नहीं देखा!

सुनील बादल
कार्यकारी संपादक

गुरुजी को समझने के लिए झारखंड को समझना पड़ेगा जो कभी हीरानागपुर के नाम से जाना जाता था और यहां के राजा दुर्जन साल अपनी हीरों की पहचान की अनूठी कला के कारण अपने साथ अनेक राजाओं को मुगलों की कैद से आजाद कराया था जिसके बाद यहां के इतिहास ने एक करवट बदली । इनसे पहले एक आदिवासी राजा मदरा मुंडा ने अपने गैर आदिवासी पोष्यपुत्र फणीमुकुट राय को झारखंड के सही ढंग से संचालन के लिए राजपाट सौंप दिया था जिनके वंशज दुर्जन साल थे । यहां के घरों में ताले नहीं लगते थे और राजा के पास कोई सेना नहीं हुआ करती थी पर यहां की खनिज संपदा से लेकर वनोत्पाद की लूट और सस्ते और ईमानदार मजदूरों के आर्थिक तथा शारीरिक शोषण का लंबा इतिहास है जिसका क्रम आज भी जारी है । गुरूजी ने 13 वर्ष की आयु में अपने पिता की हत्या इन्हीं शोषक तत्वों के हाथों देखी थी जिस कारण उनका स्वभाव थोड़ा उग्र थोड़ा अपनापन भरा भी था जैसा आंदोलनकारियों का आम तौर पर होता है । पढ़ता था तभी गुरूजी की चर्चा सुनी थी जो अछूत समझे जाने वाले जय झारखंड का जयघोष निडर होकर करते थे, देखा भी था । पहली बार सामना हुआ युवा पत्रकार था और उत्साह में कुछ चुभने वाले सवाल पूछे जिससे गुरूजी नाराज हो गए और जाने को कहा जब जाने लगा तब बुलाया और ऐसे बात की जैसे कोई अभिभावक जिद्दी बच्चे से बात करता हो दोनों का यह अनूठा परिचय था । अखबार,रेडियो,टीवी पत्रिकाओं के लिए कई बार इंटरव्यू लिया पर उनका तेवर वही था निडर और बेबाक । करनडीह जमशेदपुर में अंतरराष्ट्रीय संताली भाषा सम्मलेन के कवरेज लिए आकाशवाणी की ओर से विशेष रूप से गया था वहां भी गुरूजी से भिडंत हो गई गुरूजी पहले नाराज हुए फिर याद किया नाम पूछकर कंफर्म हुए फिर हंसते हुए कहा न आप बदलेंगे और न हम ! मुख्यमंत्री थे तब भी मिलना आसान था और कोयला मंत्री थे तब भी उन्होंने पहचान लिया था कि मैं धरातल से जुड़े गरीबों और मजबूर लोगों से संबंधित सवाल पूछता था पर न मेरे सवाल बदले न गुरूजी के तेवर ! झारखंड के लोगों के लिए उनके मन में दर्द और सहानुभूति कूट-कूट कर भरी थी जिसके दीवाने लाखों –करोड़ों लोग थे और शायद मैं भी जिसे आज व्यक्त कर पा रहा हूं जब वे हमारे बीच नहीं हैं अन्यथा मेरे पेशे में ऐसी भावना बेईमानी समझी जाती ।

10 अपने दोनों बेटों हेमंत सोरेन (दाई ओर) और बसंत सोरेन के साथ शिबू सोरेन की पुरानी तस्वीर।

11 अपने परिवार के साथ शिबू सोरेन की पुरानी तस्वीर। दाएं से - छोटा बेटा बसंत, पत्नी रूपी, बगल में बड़ा बेटा हेमंत, साथ में उनकी पत्नी कल्पना और पोते-पोतियां।

12 पत्नी रूपी सोरेन और पोते-पोतियों के साथ अपने जन्मदिन के मौके पर केक काटते शिबू सोरेन।

13 तस्वीर 6 मई 2024 की है। 96 दिन बाद जेल से कुछ घंटे के लिए बाहर आए हेमंत सोरेन, पिता शिबू से मिलने पहुंचे थे।

14 तस्वीर 9 सितंबर 2022 की है। उपराष्ट्रपति के चुनाव के लिए वोट देते शिबू सोरेन।

15 26 जून को शिबू सोरेन की तबीयत बिगड़ गई थी। उन्हें दिल्ली के अस्पताल में भर्ती कराया गया था।